MSS No. 304 Subject Philosophy

Name of MSS बिहारी सतसई टीका.

Author Amaradasa (Surat)

Period Folios 54

Script DEVANAGIRI Source Prithi Pal Singh

Missing Folios 1, 1A, 2

2A

धा जो है न छत्र ता को नागर जो है चंद्रमा ॥ सो मेरी भव भई जो है बाधा ता को हरो कहिये दूर क
रो ॥ जा के तन की झांई कहीए प्रतिबिंब ता के परे ते स्याम जो है अंग्रपिछआरते हरन कहीए दू
र होति है ॥ और हरित कहीए कांति सो होत न है ॥ अथवा रासा प्रसिधी राधा है ता को राधा
होत है ॥ तिस को नागर जो जे गणेस ॥ सो मेरी भव बाधा जो है ग्रंथ को विघ्न ता को हरो ॥
कहीए दूर करो ॥ जा गणेस के सरीर के प्रतिबिंब के परते स्याम जो है विचरन सो दूर हो
ति है ॥ और दुति कहीए कांति सो होत है ॥ अथवा नागरस्त्र कहीए आछी जो राधा कहीए
एकंठी ॥ सो मेरी भव कहीए संसार ता मे बाधा कहीए रोगादिक ता को हरो कहीए दू
र करो ॥ जा सखी के पाए ते स्याम कहीए रोग ते दूर होत है ॥ और दुति कहीए कांति सो होत
है ॥ अथवा जातना कहीए बड़ी वेदना ॥ ता की झांई कहीए छाया सो परे कहीए दूर होत है
ओर हु पाप दूर होत है ॥ ओर पुनि होत है ॥ ओर कांति होत है ॥ प्रताप ॥ आसीरवादात्मक मं
गलाचरन है ॥ या मे देवरति भाव ध्वनि ॥ विषमालंकार ॥ भव सलेस ॥ १ ॥ सरल दोहा
[illegible] जो [illegible] कटक टिका छनी कर मन रली उर माल ॥ इह बानिक मो मन सदा बसो विहारी ।
वा हिय ॥ २ ॥ सरल टीका ॥ दूजे दोहा मे कर्यो प्रभु सरूप को ध्यान ॥ जा ते इक छिन मैं न ।
र विषे [illegible] दबल वान ॥ २ ॥ इहां जाति अलंकार ॥ जाति सु जै सो जासु को रूप कहै तिहि साज
सरोष्म [illegible] भूषन बानिक जे है कर्यो सु सो कह विराज ॥ हरिज विटीका ॥ सीसनु कर इति ॥ या ही दो ।
हेब ॥ [illegible] विधान कवि उपास श्री कृष्णचंद्र को ग्रंथ कहै है ॥ सीस विषै मुकुट है ॥ कटि विषै का
[illegible] कर विषै मुरली है ॥ उर छाती ता विषै माला है ॥ काछनी गोपनि को पहिरन ॥ पद

जो बानिक बनाव है॥ नरवर वेष है याबेष सों हे बिहारीलाल तुम सदा मेरे मन मैं बसो॥ इहां स्वभावोक्ति अलंकार है॥ याको जाति अलंकार कहत हैं ग्रंथान्तर मैं जैसो जाको रूप गुन तैसो कहै सो जाति॥ कितनैक कवि ऐसें भी या दोहा को अर्थ करै है॥ सीस मों मुकट सों जैसो बानिक है बनाव है॥ सीस बिना मुकट श्रोर ठोर अछो लगै नहीं॥ यातें रहु सों है मोरा मन तुम बिषें बसो॥ तुमैं बिना मन श्रोर ठोर मैं अछा न लगै॥ याही तरह करि काछिनी इत्यादि लगाइ एपद बानिक इति॥ या बानिक सों तुम मेरे मन बिषें बसो॥ किंवा॥ तुम्हारे यह बानिक मैं मेरे मन बसो॥ किंवा॥ षंडिता की उक्ति नायक सों है॥ प्रातसमैं नायक आयो है तब नायिका कहै है॥ श्र्वाई है कोवही अर्थ॥ यह बानिक यह जो तुम्हारो नरवर वेस परस्त्रीनें राज्ञी करि बेको वेष॥ तासों मेरे मन मैं बसो मेरे घरमैं मेरे पास मति बसो॥ कोंतुम बिहारीलाल॥ हो ठोर ठोर बिहरत फिरत हो॥ किंवा॥ बिक हि ये हूसरी नायिका ताको हार गलमें राषे हो॥ श्रोर लाल हो॥ राति जगे हो तासों नेत्र लाल हैं॥ पान की पीक जावक महदि दील गी है॥ तासों लाल भय ये हैं॥ २॥ मूलदोहा॥ मोहन मूरति स्याम की अति अद्भुत गति जोय॥ बसत सुचि रत ऊ प्रति बिंबित जग होय॥ ३॥ सुरत॥ टीका॥ मूरति मोहे स्याम की ता मैं अद्भुत ताको अब वरनन करत सुन हु सुक बिक बिराव॥ १॥ चितके अंतर बसत है वा हरि अविकल जगत मैं देषिये यही सु अद्भुत सुषि॥ २॥ को ब्रुपदारथ काहू के अंतर धरो ता बाहर बिनहि दीसत सुतो यह सुरीति जग जोय॥ ३॥ रीति लाद्रि श्रोरैक छुरी नि सुअद्र नि॥ यातें यह अद्भुत कसो दोहा मध्य बषानि॥ ४॥ अद्भुत तो यह अति कहा अति बे

3A

वषान ॥ स्याम वस्तु मोहे मन हि अति दीरघ थे सु जानि ॥ ५ ॥ प्रश्न ॥ कैसे वान न संभवे दोऊ
अर्थ सुजानाहि ॥ कोऊ कोऊ वस्तु तो ऐसी है जग माहि ॥ ६ ॥ ऐसे सु अंतर बाहिरै दीसत है सब
तौर ॥ जैसो दीपक घाषानु समैं सु घरी नैन पर अगार ॥ ७ ॥ जैसे बादल चंदर विनिर्मल जल पा
षान ॥ ऐसे तो ही ता न हि सु कौं अद्भुत कहत वषानि ॥ ८ ॥ जो कदाचि कोऊ कहै एसे वस्तु दस
न पाय ॥ सु तो न अद्भुत तिहि कहै हु जी ठौर लषाय ॥ ९ ॥ स्याम वस्तु मोहन न ही यह सु स
मन हि वान ॥ कितिय कवि लैतो स्याम ही मोह तमन विष्यात ॥ १० ॥ नैन एतरी के सु अंतर सु
जनन तिल सु माहि ॥ यातें हू जो अर्थ यह अति को कियो सु वादि ॥ ११ ॥ उत्तर ॥ जो कदाचि अ
सें कहै पाषानु साहि की रीति ॥ एई कौं लीजै अवर वैराग नले हि करि नीति ॥ १२ ॥ जैसो सहूक
मे वस्तु अरु जैसो वट अंतर दीप ॥ संपुट में नग एस कौं कहै नस्क किम दीप ॥ १३ ॥ गाहे
हे आवरन बहु तव सु संसार ॥ तेत जिकेली जे सु कौं पानु साहि विचार ॥ १४ ॥ प्रश्न ॥ त
सु नैनों याते कहा ही चित अंतर की बात ॥ चित्त तो निरमल हू पदे पवन हू पविष्यात ॥ १५
सुवे ही नव जु है बाहिर सो ऊलकाय ॥ एते पर चित स्याम के भक्त हि कैसे पाय ॥ १६ ॥ संसा
सि न हि जाहि जु कछु स्याम लीन ॥ संतन के मन दास एउ ज्ञल कहे प्रवीन ॥ १७ ॥ ताते कोऊ
स जो समाधान को आहि ॥ अंतर कहै सु वाहरे बहुत बलद रमाहि ॥ १८ ॥ स्याम वस्तु मोह
बादि तल षी बहु तौर ॥ याते या को प्रसन्न हरि स्यो सु क विसिर मोर ॥ १९ ॥ और प्रसन्न कभा
र विं अर्थ की रीति ॥ कही जु अंसु मंज सलगे यह न कवि की रीति ॥ २० ॥ अंतर वस्तु
उत्तर रे सुतो दरस आभास ॥ ताकौं प्रतिविंबन कहै जे है बुद्धि प्रकास ॥ २१ ॥ हू जीनि।
दृष्ट

वि-टी-
४

मलवस्तमेंप्रतिबिंबपरैजुआय॥ तासौं प्रतिबिंबितकहैं छायायापरैलषाय॥२२॥ यहतौ
ऊलैंबरनकोदरसनवरन्योसोय॥ यातैंयाकेअर्थकोसह समर्थनकोय॥२३॥ उत्तर॥ तहा
अर्थअबवरहकहतजामैंअदभुतहोय॥ अवरसु पुनिप्रतिअदभुतोभासैजिहिविधिसोय॥
२४॥ चितअंतरहैस्यामकीमूरतियहसबषानि॥ चितकोनिरमलताबडीकरीअर्थपवि
धिजानि॥२५॥ जैसैंमंधिपानूसकैंदीपकघापोंआनि॥ जगतरीतितैंविपिनईसोअर
भुतगतिजानि॥२६॥ पहिलैंसुनियेरीतिजोदर्पनढिगहोय॥ तौपानूसदिसदिनदीसै
उहिमधिसोय॥२७॥ सोतोनिर्मलवस्तमैंदीसैप्रसिधप्रवीन॥ ज्यौंतौजगमैंसुविषयैसो
जगमहामलीन॥२८॥ सबकेमनसंसारतौमैलोनिरमलनाहि॥ सुसाकसोप्रतिवि
वतिहिलषियतदैजगमाहि॥२९॥ यहासुअदभुतगतिभईरीतियहजानि॥ तामैंप्रति
विंबतपरैतहांपस्योपहमानि॥३०॥ यहतौअदभुतसमस्रिपैकहीजुरीतिनवीन॥ अ
बअतिअदभुतजोकस्योसोअवसुनौप्रवीन॥३१॥ दरपनमैंपानूसअरुदीपकदुवो॥
धाहि॥ यहनदियोईदीसईपानूसदीसैनाहि॥३२॥ तहांअधारपानूसहैदीपकहै
य॥ दोऊतहांदीसैप्रगटयहसुरीतिजगमेय॥३३॥ इहांकस्योचितअंतरहिबस
तिस्याम॥ तौचितहैआधारसुमूरतिआधियनाम॥३४॥ वहियेदोऊदीसई त
हिविधिभाव॥ प्रतिबिंबनजगहोतहैमूरतिइहैलषाव॥३५॥ इकवाचीदीसवे
विंबितजगहोय॥ दोहिसहहोतौतहांचितहूलेतेसोय॥३६॥ तातैंचितआ
हिप्रतिविंबितभेय॥ अदभुतअतआधारविनदीसैजहांअपेय॥३७॥ तऊ

धी यह वसत न मधि आधार ॥ तऊ इक ही दीसत है अति अद्भुत सु विचार ॥ ३८ ॥ इहां प्रथम भेद विशेषालंकार ॥ सो विसेष आधार बिन जहं आधेय दुति देय ॥ चित अधार ही सतन ही मूरति दिपत अधेय ॥ ३९ ॥ इसकी टीका ॥ मोहन मूरति दुति ॥ गुरु शिष्य सौं कहतहै ॥ स्याम श्री कृस्न तिनकी मूरति मोहिनी है ॥ ताकी गति क्रिया अति अद्भुत है सो तहं जो यहै स्वछ दरचित के अंतर भीतर वसत है ॥ तो भी जगत में प्रतिबिंबित होति है ॥ प्रतिबिंबित को अर्थ लछना करि भासति है ॥ जो काहू के हृदय मैं भगवान आवत है ॥ ता हि सब जानत है यह सिद्ध है ॥ इहां अति अद्भुत कार्द तो ही पयान स मैं रहत है ॥ बाहिर भी भासै है ॥ इहां अन्वय जानिये अन्वय को लछन ॥ अन्वय पद संवंध पद निकट रहै के हूर ॥ अर्थ करत मिलि जात है यह जानै सब सूरि ॥ पद जाहि पद सौं अन्वित होय ता के निकट रहो कि वा दूरि रहो ॥ अन्वय न करै तो नजक परत इसा दि दोहा न दिलगै ॥ ऐसे लगाइये इहै जार्थ ॥ स्याम की मूरति मोहन मूरति है ॥ औरिके देष सौं मोहित होत है ॥ स्याम के रूप गुन सुनत मोहित होतहै ॥ और्रिके देषि सौं मोहित होत है ॥ ता की अद्भुत गति देष ॥ वसत सु चित अंतर स्वछ जो दृढ चित ता के अंतर भीतर वसति है ॥ जग मैं भासै है ॥ जो वस्तु द्रव्य स्वछ मैं रहै है सो वाहिर भासै नहीं ॥ कांच मैं दीप धरे तो वाहिर भासै नहीं ॥ इहां विशेष अलंकार है ॥ तीनि प्रकार विशेष है अनाधार आधेय ॥ चित कल्पित आधार है ॥ जैसैं आकास है मूरति धेय है ॥ तीसरे अर्थ ॥ स्याम की मूरति प्रतिमा मोहिनी है ॥ ताकी गति जो है क्रिया सो अति अद्भुत देष ॥ प्रतिमा को नाम देवहू धपिआयो पीगई प्रतिमा के अंतर मध्य जो सु चित कहि पनि

मलचित्तभक्तकोवसैनउतैाभीजगतमेवहभाजगतप्रतिविंवितहोइभासमानहोयस
ववाकोसिद्धिजानैं॥किंवा॥वाकैंसंसर्गतेंजगतप्रतिविंवितहोयभाससमानहोयतौमोको
कदेषेएसीसिद्धिहोय॥चतुर्थार्थ॥मोहनमूरतिस्यामकीहै॥ताकीअतिअद्भुतगतिहै
षो॥वसतिसुचितअंतर॥सुचितकियेमोंपिपाकेअंतरहृदयमेंवसैहै॥इहांसुचितः
है॥सुचितकैमांककिलगेसोकहाहै॥गुरुलघुलघुगुरुहोतहैनिजइछाअनुसार॥
तौभीजगतमैंप्रतिविंवितहोतहै॥कहैसोंमनमेंवसेयहअद्भुतलोकमैंजाहिरहोतहै यह
अतिअद्भुत॥पंचमअर्थ॥नायकमानछोडाइवेआयाहै॥मानिनीसोंनायककेपक्षकी
सषीकोवचन॥तिस्यामकीहैतिस्यामकीतिकहिएकांतातूस्यामकीहैतिभीसषीकोंकहि
एहै॥वाथीरसरीतिरसरीतिडरीरूपमे॥मोहनमूर॥तोहिमोहप्यारमूरकछभिनहीं
अतिअद्भुतगतिकीअतिअदभुततरहकीतजोयस्त्रीहै॥जैसेकोइकहैहै॥फलानोअजव
तरहतौकोंजोयकोअर्थदेष॥वसतिसुचितनायकके हृदयचित्तमेंवसैहैअंतरतऊतो
भीअंतरनहृदागीराषैहै॥एहूवातजगतकहियेव्रज॥किंवा॥सषीगनतामेंप्रतिविंवित
होतिहै॥जाहिरहोतिहैजगतकहैसंसारजानियेथोराभीजामेंजातहै॥विहारी॥जग
जानीविपरीतिलषिविंदुलीपियभाल॥इहांथोरीसषीकोजगतकह्यो॥किंवा॥नायकते
रेचितमेंवसैहैतौभीअंतरराषतिहै॥षष्ठार्थ॥स्यामकीअतिमोहनमूरतिजोहैराधि
काजी॥तिनकीअतिअद्भुतगतिदेष॥सुंदरहृदचितकेअंतरवसैहै॥औरअर्थवैसेंही॥
३॥मूलदोहा॥तजितीरथहरिराधिकातनदुतिकरिअनुराग॥जिहिव्रजकेलिनिकुं

5A

जमगपगपगहोतप्रयाग॥४॥ हरनटीका॥प्रस्न॥ तनद्रुतिपदपद्मअधिकसोकहाप्रयोज
नतास॥उत्तर॥तनद्रुतियदहीतैंकसोहूपप्रयागप्रकास॥१॥ जिनकेपगपराथसन्नुब्रजहो
तप्रयागसरूप॥ गोरस्यामसंगगाजमुनपगतरसरस्तिरूप॥२॥वार्ता॥कोऊकोऊदंपति
केअनुरागकोंसरस्वतीकरिकहतहैं॥दोहा॥प्रस्न॥कोउकहततीरथतजनतनकदा
धपहकोज॥उत्तर॥वडोलाभदंपतिपगनपगपगतीरथराज॥३॥ अलंकारस्याजाति
योनामअनरपविचार॥ अंगीकृततनदोषजहवड गुनलाभनिहार॥४॥अन्यअर्थ॥
औरअर्थइकजिहिसमैचलेमधुपुरीस्याम॥ रथचहिकैंअकहूरसंगगनहांकहतकोऊवा
म॥५॥ तजितीरथहरिकोउहांराधिहिजायसम्हारि॥ हांपगपजतहूनिनगड्योतप
अरुयागविचारि॥६॥ तहांकेतहूकरतहैं हरिअनगमनउपाय॥ केसेवजैहैंलेहस
धियाधिहियोंसमुझाय॥७॥ सीतउस्नसहिवासतपयागस्रुवद्रुफलूदाय॥तहांप्रस
मगावतसोतरूनौसवइहिभाय॥८॥उत्तर॥तहांकहियेमगावद्दतहूदेतवटोदिन
दान॥ यातेंतपअरुन्यागकोजोगइनहियहजान॥९॥प्रस्न॥ औरप्रसंगऐसेंसकल
दसनहूकीरीति॥ तोहूंहूजपदिकेहोकरतसेवेकिहिप्रीति॥१०॥ तहउत्तरअनको
नतरूसकलकालफलदान॥ स्याब्रजमेंसबरितसदायहविसेषउरआन॥११॥ इहां
हूकाव्यलिंग अलंकारहै॥ काव्यलिंगसामर्थताजहांहृढकरियेज्ञान॥ हरिअनग
मनसहृढकियातहूतपजगपषान॥१२॥हरिकविटीका॥तजितीरथइति॥गुरूपिया
कोंउपदेसकरेहै॥ हेशिषातहूतीरथहूतजिवाइहरिराधिकाकोजोहैतनअऐचानति॥

वि॰टी॰
९ 6

तामैंअनुरागकहिएप्यारकरैाकहासुंदरअंगनिकोवनावहै॥कहासुंदरिकानिहै॥जोपि
ष्पकहैतीर्थनिमेंविषषफलहै॥तवगुरुकहैहै॥जिहिंव्रजविषैंक्रीडाकरिवेकोजोहैनिकुं
जताकोजोहै॥मगपथतहापगपगमें॥एकएकपगप्रमानजोहैधरतीतामैंप्रयागजोहै
तीरथराजसोहोतहै॥लछनासोंताकोफलहोतहै॥अर्थयह॥तीर्थमतिजायव्रजमेंवेहि
राधाहरिसैंप्रेमकरिकाव्यलिंगअलंकारहै॥भाषाभूषन॥काव्यलिंगजवजुक्तिसोंअर्थ
समर्थनहोय॥तीर्थत्यागकोंजुक्तिसोंसमर्थनकियोठहरायो॥दूसरोअर्थ॥इहूवजीव्रजसों
नायकैंव्रजदेविनिकीसखीकुतिअनहरसोंकहतहैं॥जोराधिकाजीजानतीनमफेरिनदीं
आवोगे॥तोहेहरिराधिकाजीतुमारेरथकोंतजती॥छोडतीकहारथपकरिराखतीनहीं॥
आवनेदेतीवोंतुम्हारीतनमेंआछुतिमें॥अनुरागकरिके॥अवउहांकीकहादसाहै॥जिं
हिंव्रजविषैंक्रीडाकरिवेकोंजोहै॥निकुंजताकोजोहै॥मगपथतहापगपगमेंप्रयाग
होतहै॥पीछलीलीलासधिआवैहसोरोदनकरेहै॥आंसूकोरंगहै॥स्वेततुम्हारे
रहतेंजोकज्जलदियोथोतासोंस्यामहोतहै॥पावयेपरेहैजावकसोंमिलिकेलालहो
तहै॥गंगाजीकोजलस्वेतजमुनाजीकोंजलस्यामसरस्वतीकोजललालयातेंप्रयाग
होतहै॥तीसरोअर्थ॥हेमीतअनेकार्थदोअछरकोअर्थानरप्रकरनमैतीर्थनामदरसन
कोहैयानैापात्रेदरशनेषु॥नायकओरिसखीकोंदेषेहै॥नवनाकाकेपछकीसषीना
यकसोंकहैहै॥हेहरितुम्हइतिजोहैनायिकातनुकहियेथोरीहैइतिजामें॥एसीजोना
यकाअर्थतेताकोतीरथदरसनकोंनजौं॥राधिकामैअनुरागकरौ॥सोभाकोअधि

6A

कहतहै ॥ जिहिराधिकासौ ब्रजकेलिनिकुंजमगजोहै ॥ सोपगपगमैंप्रयागहोतहै ॥
देषिकैंपावधरनेकासोहै ॥ जहांपावधरैहैतहांरषिकोप्रतिबिंबस्वेतस्यामपावको ॥ प्र
तिबिंबलालपरैहै ॥ तासौंप्रयागहोतहै ॥ भूमिमैंभीप्रतिबिंबपरैहै ॥ इपदहरिआसीफू
लि ॥ आगेंकहैंगे चतुर्थार्थ ॥ जमुनाकेतीरनायकऔरिसहीनेदेषैहै ॥ तहांनायकाकी
सषीकहैहै ॥ जमुनाकोजोहै ॥ तीरताकोंकहै नायकथहरिकहिएआपनीप्रियासैंभ
यमंगनिकेजोडरैहैसोथहरैहैकांपैहै ॥ तजिकोअर्थतजोजोनायिकास्वनैगीतोमानक
रैगी ॥ राधिकातनदूतिथारीहै दूतिजामैंए नायिकाकोंराधिकेअर्थ ॥ राजीकरिकैंकाको
अर्थकछनांही ॥ कविकोअर्थकेराजैसेकोइकहैहै ॥ तूफलानीवातकरिकैंअनुराग ॥ ।
जिहिंनायिकासौं ब्रजकेलिनिकुंजमगपगपगमैप्रयागहोतहै ॥ ऐसीसोभाहै ॥ अर्थपीछ
जाजानिय ॥ ४ ॥ मूलदोहा ॥ सघनकुंजछायासुषदसीतलमंदसमीर ॥ मनह्वैजातअ
जहूं वहैवाजमुनाकीतीर ॥ ५ ॥ सूरतटीका ॥ इहांअर्थजिहिथलहिकिएपियसंगसुषअनपा
हिथलकीसषिसौंकहतरीतिसुविरहमझार ॥ १ ॥ सषिअबहूवाथलगएंवहीसुमन
जात ॥ तनुपियसंगहैतहांरसतकरतविलासमनवात ॥ २ ॥ प्रस्न ॥ तहांप्रस्नयहविरहमै
बदहुषदसवहोय ॥ इहांकस्योछायासुषदबनैनयहपदसोय ॥ ३ ॥ उत्तर ॥ जबमनबह
ह्वैगयोतबसवसुषदसरूप ॥ यातैंहैयहसुषदपददोषनहीकविभूप ॥ ४ ॥ पुनःप्रस्न ॥ त
सुनोअबतौतरुनिवहिथलसोअबनांहि ॥ वातैंवहिथलकीकहतवैठीनिजयहमांहि ॥

वि॰टी॰
७

५॥ वा जमुना के तीर यों कह्यौ वचन इहि वाम॥ यातैं जानी जात है अब तू दिय यह उद्दिठाम
६॥ तब तौ याहि वियोग ही है सब विधि सुधि जाहि॥ कैसें वाहि सुषद कहैं तब तैं न कहत तें ता
हि॥७॥उत्तर॥ सुषद जु नायक तासकी सघन कुंज की छांहि॥ मन है जात अजौं वहै जा
तसखी तिहि मांहि॥८॥पुनःप्रश्न॥ वा जमुना के तीर जो कह्यो सहद इहि ठौर॥ तौ कहा ज
मुनां हू सखी है कोउ ब्रज मैं और॥९॥उत्तर॥सोरठा॥ जमुना के वा तीर॥ ऐसे सुषपुंज लहौ
कहां॥ तीर बहुत कविधीर जहां कुंज छाया सघन॥१०॥इहां भ्रम स्मृति निश्चै लंकार है॥ क
छ्वै लषि सुनि सुमिरन जहां होय सुसमृति प्रकास॥ सुद्धां कुंज न लषि कैं भये सुमिरन
पीय विलास॥११॥हरिकविरीका॥सघनदूति॥ श्रीकृष्णजी मथुरा गए॥ तब विहार की
कुंज देषि सषी सों नायका को वचन॥ हे सखी सघन वह कुंज है॥ ताकी छाया भी सुषद है॥
तहां सीतल मंद सुगंध समीर रहे तौ न है॥ मन है जात अजौं वहै॥ जब आवे थी तब जमुना के
वा तीर जो है कुंज तहां नायक कों बैठ्यो पावे थी॥ अजौं अब भी वहै मन है जात है॥ उहां बैठे
पावैगो॥ विरहिनी के सीतल मंद समीर सुषद कैसें करि है॥ जब जान्यों नायक उहां बैठ्यो है॥ दे
व विरह को भयो॥ तासतासौ छाया सुषद सीतल मंद समीर कह्यो॥ इहां स्मृति अलंका
रहै॥ सुमिरन भ्रम संदेह जहां लक्षन ता नाम प्रकास॥ किंवा॥ नायका उहां गई है नहीं हूर सैन
कहति है सघन कुंज की छाया सो सुषद है॥ ओ समीर सुषद है॥ अजौं अब भी जो कोई उद
जात है ताको मन वहै वैसोई है होत है॥ जैसो श्रीकृष्ण रहे ते राजी होते तैसोई राजी होत है॥

7A

स्यानुरूपसो है॥ जाहि देषि लागत है॥ अवहीं श्रीहरि उठिकैं औरकुंज गये हैं॥ जमुनाके वा
तीरमैं है कौ अर्थ होत है ये भी है॥ मंद हसै सुसुष प्रीतमको मुष चांपनिकी उपमा नव है॥ नी
सरो अर्थ॥ षंडिता नायक सों कहति है॥ वचनको अर्थ॥ कठोरता कठोर ता जाको रहै सो सच
न॥ हम तौ मैं देषे विना ढुंढी हो तिहै॥ तुमैं दया नहीं आवति है॥ यातें कह्यो है सवन कुंज मैं वै
ठी॥ छाया सुषद जो वहु नायिका है॥ छाया कहियें कांति सो जाकी तुमकों सुषकी देनिहा
री है॥ सपतीकी उक्ति व्यंग लिए॥ जो वनकी जो कांति सो तुमकों सुषद है॥ वाके अंग अंग छो
न हीव चन अछो नहीं॥ षंडिताको लछन है॥ कहै वात जो चित्त चहै॥ अनुचित्त उचित समान
जैसैं षद्योत मैं राति के समय मैं जोति आवे है ये अंग सुंदर नाहीं॥ किंवा॥ जाकी कांति सुष
द है सुषको षंडन करनेवाली है जाहि देषैं सुष जातो रहै॥ एसी तुम्हारे मन वसी है॥ हे मंदम
हत्तम रूप गुन मैं सम रूत नहीं उहां सीतल समीर है॥ है कौ अर्थ करिभी है॥ जैसे पारा है।
जै आयो पारा दूक रि आप जानिए॥ मन है मन करिजातु है॥ अजों अव भी वह है वा नायिका।
हा है॥ वाको दूरस्व करिय है यां अंग सरी सौंवता वै है वा देषो जमुनाके तीरमैं॥ ५॥ सूलदो
हा॥ सषि सोभित गोपाल कै उर गुंजन की माल॥ वाहरि लसत पियै मनों दावानल की
ज्वाल॥ ६॥ सूरतटीका॥ गुंजमाल गोपाल कै वरनत सोभा चाहि॥ तहां दावानल ज्यों
उपमक है यमंगल आहि॥ १॥ उत्तर॥ गुही सौंतिके हाथकी पहरैं माल गुपाल॥ जाति
परत इन वचन तैं दिये ईरषा वाल॥ २॥ इहां उज्ञास्पद वस्तूत्प्रेक्षा॥ उत्प्रेक्षा हमैं जहां संभा

वि॰टी॰
८
8

वनम्रहहोय॥ वस्लहेलफलमयत्रिविपिमनुजनुपदनहांजोय॥ ३॥ नहांवस्ल उक्तासपदअ
नुक्तासपदजान॥ हेलहफलसिद्धासपद॥ असिद्धासपदमान॥ ४॥ गुंजमालद्दहिवस्तमैंक
रीसंभावनज्वाल॥ मालउक्त उक्तासपद मनुपद अगटरसाल॥ ५॥ हरिकविटीका॥ संविसोद
तिदूति॥ नायकाकोवचनसषीसों हेसषिगोपालके उरविषेंज्यानीविषेगुंजनिकीमालासोभ
हतिहै॥ मानोंयिपेंसोंदावानलकीज्वाल॥ वाहिरलसतिहैसोहतिहै॥ इहांउक्तासपदवस्त
नमेक्षा॥ एकवस्तकीदूसरीवस्तकरिजहांसंभावनकहिए॥ तैलकीजियेसोउत्प्रेक्षा॥ गुं
जमालवस्तविषेंज्वालावस्तकीसंभावना॥ उत्प्रेक्षासंभावनावस्तहेलफललेषि॥ वस्त
दुविधउक्तासपदअनुक्तासपदपेषि॥ संदेह॥ गोपालकेउरविषेंदावानलकीज्वालदिनसोंन
हीकहीजातिहै॥ तवएसोअर्थमानोंगुंजकीमालातेदावानलकीज्वालापीईहैसोवाहिरल
सतिहै॥ भगवाननेंदावानलनहापियो॥ औउत्प्रेक्षामेयेभीअर्थसंभवेहै॥ मानोमालानें
दावानलपियोतौभीकठोरमालहृदयथैरहेहैप्रेमीकोंनहीसंहीजातिहै॥ नवएसोअर्थ
कीजिये॥ नायककेगरकीमालासपत्नीकेगरमेंदेषिकेनायिकाकहैहै॥ हेसषिगोपालके
उरकीगुंजनिकीमालायानायिकाकेगरमैंऐसीसोहतिहीसतिहै॥ संभावनाकरैहै॥ मानों
मालानेंदावानलकीज्वालपिईहै॥ सोवाहिरलसतिहै॥ क्योंहमारेनेत्रदेषेसोंवरतहै॥ ६॥
मूलदोहा॥ चिरजीवोजोरीजुरैक्योंनसनेहगंभीर॥ कोघटिएवृषभाजावेहलधरकेवीर॥ ७
सुरतटीका॥ यामेंसषिकीउक्तियहक्योंननेहअधिकाय॥ दोउनकोसंवंधदृकथाप्योजनकोव

नाथ॥१॥ उतमहेतसमानकोयहप्रसिद्धहैवात॥ व्रषभानरूहलधर दुवोश्रगनितेजसरसा
न॥२॥ वृषसूरजमैंतेजश्रतिश्रर्थकियावृषभान॥ सेषनागहलधरसुतोसदास्तेजति
धान॥ ३॥प्रस्न॥ वेदुहिताकरिकैंकहीयेजकहेबलश्रात॥ इहांमित्रसंबंधसोंवनतनर
कसीवात॥४॥उत्तर॥ दुहूंवांसंपतिएकसीप्रीतितनहांबरमानिमित्रमित्रकीश्रधिकइ
प्रीतिश्रधिकतहांजानि॥५॥ ज्योंनपतपहधनीइक सोसुषनिजगेह॥ वैपैंकिनएसुषमित्र
कोचहैजुकरिकरितेह॥६॥ महाधनीश्रहनपतिसोंहितदिनश्रधिकैप्रीति॥ इकश्रगपास
षचहतहैंइकधनसुषइहरीति॥७॥ तातेंमिनसंबंधमें योंरसवढतश्रपार॥ कह्योइहांहु
समकियेंसासनबलनिरधार॥८॥ इहांसमालंकारजहांमिलेश्रनुरूपकछुसतश्रसतैं
समचाहि॥ समप्रभावकहदुहूनकोजिहिनेंश्रतिहितश्राहि॥९॥ कोऊश्रगपानीहलको
व्रषभकोहसंबंधकहतहैं॥१०॥हरिकविटीका॥ चिरजीवो इति॥ सषीसोंसषीकीउक्ति यह
जोराधाकृस्नकीजोरीहैसोचिरजीवो॥ जरेमिलेसोंक्योंनहीगंभीरप्रीतिहोयहोतहीः
है॥ प्रीतिवरोवरिहीसोंसाेभापावति॥ लायकहीसोंकीजियेवेरब्याहश्ररुप्रीति॥ यामैंको
नवदिहैहेटोऊवरोवरिहैंएकवृषभानकीवेटीहैं॥ वेजोकृस्नसोहलधरवलदेवजीतिनके
वीरकहिएभाईहै॥ इहांसमश्रलंकारभयो॥ श्रलंकारसमतीनिविधिजथाजोगकोसंग
इहांवचनकोमेलनहीभयो॥ जोइनैंवृषभानजाह्योतोउनेनंदनंदनकह्यो चाहिए॥ मा
नमैंसषीकोप्रस्नतहांनायिकाकोवचन॥ सषीकहैहै॥ चिरजीवोयहयैजोरी॥ जरेमिलें

क्यौंनहीगंभीरसनेहहोतहै॥ इहांचदिकोनहै॥ एहुषभानुजा॥ नवनायिकाकीउक्तिहैहह
लधरकेवीर॥ हलधरपदसोंगवारजानिएताकोभाईगवार॥ ७॥ मूलदोहा॥ नितिप्रति
एकतहीरहतवैसवरनमनएक॥ चहियतजुगलकिसोरलषिलोचनजुगलअनेक॥
८॥ सुरतटीका॥ प्रस्न॥ वयमनइकइकवरनकिमवेस्यगोरवेस्याम॥ उत्तर॥ वैसमनसु
तिएकसीतनमनइकधुनिधाम॥ १॥ इहांहूसमालंकारहै॥ जथाजोगकोसंगजहमिलैस
मनिरधार॥ इहांवैसमनकरिइवाइकसेमिलेविचार॥ २॥ हरिकविटीका॥ नितिप्रतिदति
भक्तकीउक्तिभक्तसों॥ श्रीकृस्नवलभद्रनितिप्रतिकहिएसदा॥ एकतहीरहतएकठहीरह
तहै॥ वैसवरनवैसवयःक्रमताकोतवरनवर्ननकरि॥ कहाग्रंथहीउमिरिहै॥ औमनजा
कोएकहै॥ एजोजुगलकिसोरहैं॥ दोउकिसोरहै॥ तिनैदेषिकैलोचनजुगलकोअर्थ॥ लो
चनकेजुगलजोदुअनेकचाहियतहै॥ एकजोडानेत्रसोंरूपदेष्योनहीजातहै॥ सोदृज्ञे
कोअधिकअंग॥ किंवा॥ वर्ननीयवर्ननकरिवेलायकवयअवस्थासोएकहै॥ औम
नएकहै॥ किंवा॥ जुगलकेकिसोरनंदजीकेकृस्नवसुदेवजीकेवलभद्रतिनैदेषिकै॥ गो
पीकिलोअर्थ॥ किंवा॥ श्रीकृस्नकोंवसुदेवजीकोपुत्रजानतहैं॥ एसोकोईमुनिकीउ
क्तिमुनिसों॥ औरिसवअर्थवैसेही॥ वैसवरनमनएकएतनेकोअर्थ॥ वयसउमिरिवर्नजा
ति॥ औमनजाकोएकहै किंवा॥ जुगलकिशोरकोदेषिकैलोचनजुगलअनेकचाहियत
है॥ नितप्रतिएकठहीरहतहै॥ वैसवरनयाकोअर्थ॥ वैश्रीकृस्नजीवलभद्रसमवरनहैस।

मानजानिहै॥ औ मन जाकौ एक है॥ किंवा॥ वयस के वरन अरु रंग औ मन एक है॥ जो किसोर
हैं सो किसोर एहैं॥ या अर्थ में सखी सौं सखी वचन जानिए॥ किंवा॥ सखी सैं सखी राधा हू सकी
नारि एक है है वयस वरन जाति एक॥ गोप जाति एक है॥ किंवा॥ राधिका जी वयस उमिरि ता
के वरन अरु रूप करि कैं एक है सो रहु वरिस की स्यामा कहावति है॥ कुल स्यामा है॥ स्यामा मैं आ
कार है स्याम मैं अकार है॥ आकार अकार समान वर्न है॥ व्याकरन रीति सौं जुगल किसोर इहा
किसोर भी जानियै॥ जुगल जो किसोरी किसोर॥ पहिला अर्थ में भी राधा हू सखी जानिए॥ इ
हां समालंकार है॥ अलंकार समनीति विधि जथा जोग को संग॥ खंडिता की उक्ति में भी लगै
है॥ प्रात समै नायक आयौ है॥ तहां नायिका को क्रोध देषि नायक के पक्ष की सखी कहति है
पति तो और नायिका पास जान न दीही है॥ तबैं तो मुख फेरि वैठी है॥ इनकी ओर देष॥ तब नायि
का कहति है॥ निति प्रति एक नहीं रहत एतो सदा एक ठर रहत है॥ इन को उनको वैस एक है
वरन रंग एक॥ जैसो कालो ये है॥ तैसी काली वे है॥ मन एक है॥ जैसो कुटिल मन इनको तै
सो कुटिल मन वाको है॥ एजो जुगल किसोर हैं॥ किसोरी किसोर है॥ हृदय मैं इनके वही वै
ठी है॥ ताकैं देषिवे को लोचन जुगल अनेक चाहिये॥ इन दोय नैन सौं कहा देषैं॥ देषन न देही
है इनै यो हीन रसैं हो॥ अब हिय ही की आंषिन देषैं हो हू परावरो॥ ऐसै षंडिता कहति है॥ ८॥
सल दोहा॥ मोर मुकट की चंद्रिकनि यौं राजत नंदनंद॥ मनु ससि सेषर की अकस किय
सेषर सत चंद॥ ९॥ सतसई टीका॥ प्रस्न॥ ससि सेषर तिन सों अकस कहा धरे सत चंद॥ उ

नर॥ शिवज्जुजरायोकामसोउपजायोनंदनंद॥१॥ औरप्रस्न॥ नहांप्रस्नतौशिवहिंयेअ
कसवहीइहिकाम॥ मोकरिवोसचुयाकिंयोअकसवनैंनहिंस्याम॥२॥ उत्तर॥ ससि
सेषरकियअकसचिनयहलषिचितनंदनंदनिजप्रभावस्तुदिषांवहीधरिसेषरस
नचंद॥३॥ प्रस्न॥ चंदहिधरनप्रभाकिम॥ उत्तर॥ इकनौयहह्वांएक॥ केरिजरावतनौइ
ह्वांसुधाधरनसुअनेक॥४॥ इहांअसिद्धास्पदहेतूत्प्रेक्षा॥ मोरचंद्रिकनमैंतरकससि
उत्प्रेक्षाजानि॥ हेतअकसअसिधासपदअकसअसिधयहमानि॥५॥ हरिकविटीका
मोरमुकटकीइति॥ सषीनायककोअद्भुतरूपसुनायकैनायिकाकोंमिलायोचाहतिहै॥
मोरकोजोहैमुकटताकीजोहैचंद्रिकाचंदवाता सोयोंयारहसोंराजतहैंसोभततहैंनंदनं
द॥ तहांसंभावनाकरैहै॥ मानौससिसेषरजोहैं॥ महादेवससिचंद्रसोहैसेषरमस्तकवि
षैंजाकैंतिनकोंअकससेंअकसकहिएईर्षासहिनहिसकैहै॥ जौंभीसिवसोंईर्षानहीं
तौभीमानिलीनी॥ ससिसेषरपदसौंयहअर्थनिकस्यो॥ सिवनेएकचंद्रमाथाधर्योहै॥
तौमैंआपनेमस्तककोंसतचंद्रकरौ॥ याईर्षासोंसेषरसतचंदकिये॥ कोईकहैहैसिवनें
तौमैंआपनेमस्तककोंसतचंद्रकरौ॥ याईर्षासोंसेषरसतचंदकिये॥ कोईकहैहैसिवनें
कांमजरायोहै॥ श्रीकृस्नतउपजायौयहईर्षा॥ यहतौव्रजलीलाहैनवकांमकीउत्पत्ति।
नहीं॥ नचेतनकसौकईवारलीलाप्रगटहोतिहै॥ नवकांमउपजवेकीईर्षाकैंगकहौ॥ वा
नास्फुरकाज्जहकीईर्षाकैंनकहीहेतुअकसमोरचंद्रकामैंससिकीउत्प्रेक्षाअसिद्धा
स्पदहेतूत्प्रेक्षा॥ ६॥ मूलदोहा॥ नाचिअचानकहीउठेविनपावसवनमोर॥ जानतहैं।

10.A

नंदिनकरीयहदिसनंदकिशोर॥ ११ ॥ सूरतटीका॥ पत्रीआदिसंदेसकेसखियनकियेउपाय॥ द
कसखिआयकस्यानबहिमोरनमतिहिदाय॥ १ ॥ आवनभोपरदेसतेंसहीइहीभोअर्थ॥ विन
पावसनांचैनहींसिखीसूलषोसमर्थ॥ २ ॥ इहांउद्वेगदसाजानिउपायकरन॥ तहांमोंही।
यहसखीनेंअयकयो॥ अनुमाननतेंआगमजान्याइहांअनुमानालंकार॥ हेतपायअनुमान
तेंसमझिलैतअनुमान॥ मोरनृत्यतेंलहिपस्योआवनस्यामसुजान॥ ३ ॥ वार्ता॥ लहिना
अर्थमोरनेंचिउठेतेंस्यामआएमेंजानोंयहअर्थपुछनहीं॥ अर्थछिनाकौकरनयहदिस
तहांवनैन॥ तेरेयहयोचाहियेंदिसअसमर्थसअँन॥ ४ ॥ अनसंभोगसंदेहकहतनहांयह
निश्चयनांहकिइकेघरकेघरकमेंहैंदविलषनजांहि॥ ५ ॥ यातेंलछितासोवअन्यसंभो
गसंसयाओरषडितान्हहैताकौअर्थग्रथिहै॥ हरिकविटीका॥ नाचिहित॥ लषिनानायका
सोंभूतसूरतजानिकैसखीकहतिहैवनस्यामरूपश्रीकृस्नकौंदेषिकै॥ नादिनपावसव
रषारितविनावनमेंमोरअचानकनाचिउठे॥ मोरवर्षारितमेंनाचतहैं॥ याहीलछन
सौंमैंजानतिहों॥ यादिसाविषैनंदकिशोरतोहिनंदिनकरी॥ राजीकरी॥ किंवा॥ हमनाहि
नायककोवुलाइवेकौंपठाइथी॥ नंदकिशोरसाथतूयादिसाकौंनंदिनकरी॥ अर्थयहहमै
वेराजीकरी॥ तहांअन्यसंभोगदुषिता॥ किंवा॥ उत्कानायकासोंसखीकौवचन॥ श्रीकृस्न
कौंलेआयोजान॥ किंवा॥ विरहव्याकुलनायिकाकोधैर्य॥ देतिसखीकोवचन॥ अनुमानालं
कार॥ हेतुपायनिश्चैकरैकाहूकोअनुमान॥ इहांमोरकोनाचिवोहेतु॥ तासौंश्रीकृस्नको

वि॰री॰
११

आइवोजामैं ॥ अथसंष्ठितालछनसभाप्रकार ॥ प्रीतिआदिप्रियकोभई ॥ लषैसषीअब
नाहि ॥ लछननैंवहलछिताकविगनकहतसराहि ॥२॥ पियजोतियसौंरतिकैनाहिदेषि
अनषाय ॥ अन्यसंभोगदूषितकहेहरिकविताहिवनाय ॥ प्रीतमकौनेकारनैंआयेनहि
संकेत ॥ चिंताजोमनमैंकरैउत्कासोयहहेत ॥११॥ मूलदोहा ॥ प्रलयकरनवरसनलगे ।
जरिजलधरइकसाथ ॥ सुरपतिगरवहर्योहरषिगिरधरगिरधरहाथ ॥१२॥ सूरतटी
का ॥ प्रश्न ॥ जरिकैऊइकसाथकौएकैंअर्थप्रसिद्ध ॥ इहांप्रश्नपुनरुक्तकौंकहीकहांकवि
वृद्ध ॥१॥ उत्तर ॥ प्रलयकालकेमेघवहुवरसततोइकसाथ ॥ कहाकिइकहीसमयमेंपाय
सासनंनाथ ॥२॥ पैंजुरिकहाइकठेनहींहैवरसनइकठौर ॥ क्यौंकिभूमिकेवहुतथलदे
सनगरवनऔर ॥३॥ नासक्रियासबचाहिएप्रलयमहूरतमांहि ॥ यातेंवरसेभिन्नहैजुरि
वेवरसननांहि ॥४॥ ह्यांवृजनेताहैएकतहांअगणादीसुरनाथ ॥ यातैंजुरिसबएकठेवरसत ।
हैंइकसाथ ॥५॥ इहांकाव्यलिंगहै ॥ काव्यलिंगसामर्थताजहांदृढकहतजताय ॥ गर्वहर
नसामर्थतादृढगिरिधरिबोभाय ॥६॥ हरिकविटीका ॥ प्रलयइति ॥ वीरपतिनायिकाकौं
इष्टहै ॥ सषीनायकाकौंवीरगुनसराहतिहै ॥ प्रलयकहिपनास ॥ किंवा ॥ अंगनाकीचेष्टाजा
नीरहै ॥ प्रलयकरिवेकौंवरिसवेलगे ॥ प्रलयकालकोमोह ॥ औसदावरिसैहैसोमेहजु
जिकैमिलिकैएकसाथहीवरसनलगे ॥ प्रलयविनाहूमनहिवरसैंगेंयहअपेक्षानहींरा
षी ॥ नवगिरधरश्रीकृष्णहरषिकैराजीहैकैहरषवीरकोस्थाईहै ॥ यासोंवीरलक्ष्योयो ॥ ति

11A रिजो गोवर्द्धन ताकों हाथ पर धरिकै सुरपति इंद्र को गर्व कों हर्‍यो ॥ इहां काव्यलिंग अलं-
कार है ॥ काव्यलिंग तहां जुक्ति सौं अर्थ समर्थन होय ॥ हाथ पै गिरि धरिया तें सुरपति को
गर्व हरनो समर्थित भयो ॥ १२ ॥ मूल दोहा ॥ डिगत पानि डिगुलात गिरि लषि सब ब्रज बे-
हाल ॥ कंप किसोरी दरस तैं षरे लजाने लाल ॥ १३ ॥ सूरत टीका ॥ प्रिया दरस सात्विक भयो
कर कंपित दृढ हेत ॥ गिरि न गिरै ब्रज जन न उर तल षि हरि लाजनत चेत ॥ १ ॥ जब निरषी सा-
त्विक क्रिया प्रिया अंग के मांहि ॥ तब सु लजाने हरि षरे मनि सु प्रीति ता लषि जांहि ॥ २ ॥ इहां
हेतु अलंकार ॥ हेत जहां कारन सहित काज कहै कविराज ॥ ब्रज विहाल अरु कंप ए कारन
लाज सु काज ॥ ३ ॥ हरिकवि टीका ॥ डिगतद्युति ॥ सषी सों सषी वचन ॥ या बिरियां हाथ सों डिगे
है ता सों गिरि भी डिगै है कांपै है लषि सब ब्रज बेहाल ब्याकुल भयो ॥ लोग देषत जोर के का-
ज में बल हानि होय तो पुरुष कों लाज होय ॥ या नि डिगै तें लाज भई फेरि लोगनि जानैं सों
किसोरी के दरस तें कंप है ॥ तब लाल षरे लजाने ॥ कंप किसोरी दरसि कै यों भी पाठ है ॥ कि-
सोरी कों भी कंप भई सो देषि कै लाल लजाने ॥ इहां ह्व स्व को शृंगार रस भयो लाज सं-
चारी कंप सात्विक ॥ ब्रजवासिन को भयानक रस ॥ हेतु अलंकार ॥ हेतु अलंकृति होत ज-
ब कारण कारज संग ॥ ब्रज विहाल अरु कंप कारन लाज कार्ज काव्यलिंग भी संभवै है ॥ ३
मूल दोहा ॥ लाज गहो बेकाज कत घेरि रहे घर जांहि ॥ गोरस चाहत फिरत हो गोरस चाहत
नांहि ॥ १४ ॥ सूरत टीका ॥ इहां जमक गोरस दै पद भिन्न अरथ बानी दधि रस जानि ॥ व्या

रे न्यारे अर्थ पद इकसे जमक बषानि ॥ १ ॥ गोपद को अर्थ इंद्री सो वीड़ा है ॥ हरिकविटीका ॥
लाजईति ॥ दानलीला में गोपी को बचन नायक सों हम तो जगात दै चुकी फेरि हम सों ज
गात मागत हो ॥ तुम्है लाज नहीं आवै ॥ यातें लाज गई हो वे काज करत कैंा चेरि रहे ॥ अब ह
म चर जाहै ॥ तुम गोरस नेत्र को रस देषनो सो चाहत फिरत है हो ॥ गोरस कैां नहीं चाहत है हो
किंवा ॥ स्वयंदूतका नायक सों कहति है ॥ लाज गई हो तुम स्त्री के मन की बात नहीं जानत हो
यातें ॥ अनभिज्ञता को लाज गई हो ॥ फेरि कछु प्रकट करि कहै है वे काज कहत हो रिरहे जो
कछु तुम्हैं कर्तव्य हो यैसो करो ॥ अर्थ यह मैं वन में ले चलो या ठौर रह में रोकै हो कोउ देषै
तो ॥ चर जाहि ॥ चर जातो रहैगी अरु हम सों छुटि दै ॥ तुम गोरस रूप दही चाहत फिरत हो ॥ ।
गोरस इंद्रियनि को रस नहीं देत है हो ॥ जो इंद्रियनि को रस चाहत हो तो मिलि यह ध्वनि जा ।
मैं ध्वनि होय सो उत्तम काव्य ॥ इहां जमक अलंकार ॥ जमक सबद को फिरि आवन अर्थ दू
सरो जानि ॥ गोरस गोरस पद जो यो कि अलंकार है ॥ पर्यायोक्ति प्रकार है कछु रचना सों
बात ॥ १४ ॥ मूलदोहा ॥ मकराकृत गोपाल कें सोहत कुंडल कांन ॥ धस्यो मनो हिय घर स
मर डौढी लसत निसांन ॥ १५ ॥ सुरतटीका ॥ प्रस्न ॥ इहां प्रस्न कहै स्याम जब भये काममय
सो य ॥ तब कुंडल पहिरे सु तौ क्रतेसिक्त कहु पत जोय ॥ १ ॥ उत्तर ॥ भूषन जो वन नहीं लसत ।
यह प्रसिद्ध जग जानि ॥ इहां लसत कुंडलक ह्यौ लसै सु अवही मानि ॥ २ ॥ सह जनि सा
न धरे कहैं ड्योढी मद्दित रूप ॥ नप संग आवत द्वार पै औ रहि लसत सरूप ॥ ३ ॥ प्रश्न

प्रस्न॥ कामस्तउपजतमनहितैहैमनोजयहिनाम॥ इहांकस्योत्प्रवेसकविकहैछूतैतवि
हिठाम॥४॥ उत्तर॥ मनमैंउपजतमदनसोआलंबनविनुनांहि॥ सोआलंबननायकाउ
नोअनपलमांहि॥५॥ तहनीओरगयोजवहितसुमनभोनूतकाम॥ जवनिजतनआयो
तहांकैसकामगुनधाम॥६॥ यातैकस्योप्रवेसहीजौंकहुंसाजहिपाय॥ आवतनंदपहूंनिज
घरैंसवद्दीतिरसाय॥७॥ इहांउत्कासादवस्तउत्प्रेक्षाहे॥ कुंडलवत्सस्तउत्कंस्यानर्क
करीकिनिसान॥ उत्कअमसदवस्तकीउत्प्रेक्षामनुवान॥८॥ हरिकविटीका॥ नायककेपक्ष
कीसखीनायिकाकोआश्रुजैसोभासुनायकैमिलायोचाहतिहै॥ मकरजोग्राहताकीहेआ
कृतिस्वरूपजाकोऐसोजोकुंडलसोगोपालकोकानसोंसोहतहै॥ सोभायावतहै किंवा॥
कानमेंसोहतहैतर्ककरैहै॥ समरजोहैकामसोहियजोमनसोहैत्रमैतामैपैठ्योहै॥ अव
नहाथैतेरोरूपगुनसुनैते॥ मानोंइयाहीपैपरनिसानलसतहै॥ काममकरध्वजहे॥ कुं
डलवत्समैंनिसांनकीसंभावना॥ उत्कासदवस्तुत्प्रेक्षा॥१५॥ मूलदोहा॥ मिलिपरछांहीं
जोंन्हमैंरहेदुहुनकेगात॥ हरिराधाइकसंगहीचलेगलीमेंजात॥१६॥ हरिकविटीका॥ मि
लित॥ सखीसौंसखीकहतिहै॥ परछांहींसोंजोन्हचांदनीसौंमिलिकैदुहुनिकेगातर
हेहैं॥ नायकस्यामहै॥ सोनायिकाकीपरछांहींसोंमिलौहै॥ नायकाजोन्हसौंमिलीहरि
औराधाएकहीसंगगलीमेंचलेजातहैं॥ इहांसंका॥ अवहिन्याग्यापुकोछपावनो॥ प्रति
संचारीपरकीयानायिकासंजोगसिंगारमिलितअलंकार॥ मीलितसोसाहप्यतेंभेदजवै

वि॰ टी॰
२३
13

नलषाय॥ किंवा॥ मानकरावैमानछोड़ावै यहसषीकोकर्म्म॥ सषीवचननायिकासों॥
हेराधाहरिएकनायकाकेसंगमैंहीगलीमैंचलेजातहैं॥ औरिवहीअर्थ॥ १६॥ मूलदोहा
मोरचंद्रिकास्यामसिरचढिकतकरतगुमान॥ लषिवीपायनपालुठतसुनियतराधा
मन॥ ६॥ हरनटीका॥ प्रियामानकीनोभ्रमहैसाधिनपियातिहिवार॥ कोउसषिसुपिदे
नकाहिलषिहरिसजनतसिंगार॥ १॥ निकटसषीतिहिसोकहतमीतहिवचनसुनाय॥ गर्व
करतकिमचंद्रिकालषिवीपरसतपाय॥ २॥ प्रस्न॥ गर्वसुभ्वेंपाकविजानियेंकहौचंद्रिकामा
हि॥ उत्तर॥ यहहैगर्वनिजउच्चतामांनतमोसमनांहि॥ ३॥ इदांपर्यायोक्ति॥ पर्यायोक्तिसुजा
नियेंकछुरचनांसुवात॥ सुधैमानकथ्योनहीकसोरचनसरमान॥ ४॥ हरिकविटीका॥ स
पत्नीनेंनायककोस्रृंगारवनायोहै॥ सपत्नीकेसुनतराधिकाजीकेपछकीसषीमोरचंद्रि
काकोमिसुकरिकहतिहै॥ हेमोरचंद्रिकातूस्यामकेसिरपैचढिकेंकतनोगुमानकरतिहै
लषिवीहैंषोगीतोकोंराधिकाजीकेपायनिपरलोटततकेंसुनियतहै॥ यौंजुराधिकाजीमा
नकियोहै॥ नायककोस्रृंगारवनायेंकेंतूगुमानकरतिहैतेरावनायोस्रृंगारश्रीराधिका
जीकेपावनिपरलोटैगो॥ मूदोकनिअलंकार॥ मूदोकतिमिसिसोंयोरिकेकीजेपरउपदे
स॥ १७॥ मूलदोहा॥ सोहतओढैंपीतपटस्यामसलोंनगात॥ मनोंनीलमनिसैलपरआत
पपरयौप्रभात॥ १८॥ हरिकविटीका॥ सषीनायककीअद्भुतसोभासुनायकैंनायकाकौंमि
लायौचाहतिहै॥ सलोंनेगात॥ लावन्यसहितहैं॥ अंगजाकेऐसो॥ जोस्यामकलससोपीतप

13A दृश्रोहैं सोहतहैं ॥ किंवा ॥ स्यामके सलौंने गातपर श्रोहैं ॥ सोंपीत पर सोहतहै ॥ नीलमनिको
जोहै सैलपहार तापर मानों प्रभातको आतप धूप परीहै ॥ इहां उक्तास्पदवस्तूत्प्रेक्षा गात
परवस्तु है तापै नीलमनि सैलकी श्रोप आतपकी संभावना ॥ १८ ॥ मूलदोहा ॥ किलीनगोकु
लकुलवधूका हि न कित सिष दीन ॥ कौंनें तजी न कुलगली ह्वै मुरली सुरलीन ॥ १९ ॥ हरि
कविटीका ॥ किलीनइति ॥ कोई नायिकाकों सिषावै है तूं नायककी श्रोर मति देषै ॥ यह कु
लवधूको धर्म नहीं ॥ तहां अनुराग भरी नायिकाको वचन कि लीन गोकुल कुलवधू ॥ केत
नी नहीं गोकुलमैं कुलवधू हैं ॥ वहूतहै यह अर्थ ॥ कौंन कौंन कौंननें सीष उपदेस नहीं दियो है
दियो ई है यह अर्थ ॥ कौंननें नहीं छोडी है कुलगली आपनो कुलपंथ ॥ कुलपंथ छोड्यो ई है य
ह अर्थ ॥ मुरलीके सुरसों लीन होयकें नायकमें आसक्त होयकें ॥ किंवा ॥ मुरलीके स्वरमें
लीन होयकें अति चित्त लगाइकें ॥ कंठको ध्वनि विशेष सो काकु ॥ तासों यामें प्रस्न ही सों उत्त
र इहै एक वचनमें होय ॥ विशेषोक्ति भी जानिये ॥ विशेषोक्ति जो है तमें कारज उपजत नां
हि ॥ सीष देतै तसों कुलगलीको राषिवो नहीं भयो ॥ १९ ॥ मूलदोहा ॥ अधर धरत हरिकै पर
त ओठ डीठि पट जोति ॥ हरित बांसकी बांसुरी इंद्र धनुष सी होत ॥ २० ॥ हरिकविटीका ॥
अधरइति ॥ सषी आश्चर्ज सो भास्त नायकै मिलायो चाहति है ॥ जब वा सुरीको अधर विषैं
ओठ विषैं धरत है ॥ तब हरिके ओठकी डीठिकी पटकी जोति परति है ॥ तब हरित बांसकी जो
है बांसुरी सो ईंद्रके धनुष समान होति है ॥ इंद्रको धनुष जो मेघमैं ऊगै है तामैं भी अनेक रं

वि॰ टी॰
१४
14

गाहे॥ इहांतद्गुन **अलंकारहै**॥ तद्गुन तजिगुन आपनो संगतिकोगुनलेइ॥ जोकहियेऔ
रिगुनयामैंआयेहरितगुनकोत्यागनहीं॥ भयोतोउपमाभीहै॥ पनउपमानवास्तरीउप
मेयसींवाच॥ साधारनधर्मकोलोपहै॥ २॥ **इतिभक्तमार्गीकेटीकाविहारीसतसयाकेक्रम**
केव्याख्यान॥१॥ **मूलदोहा**॥ कियाविहारीसतसयाजु नोंअरगजावेस॥ मिसलवार पैंइह
कियेटीकाकृतअमेवस॥१॥ **सूरतटीका**॥ चमत्कारहीमनपदै याहिसतसयामांहि॥ तहूंअ
नुक्रमनायकाअवरी तिस्यांनांनि॥ २॥ तदपिजथाक्रमदेषिकैवरनैंपंचविलास॥ ३॥ **पुनि**
सिंगाररसभांतिबहुवरनैंरसिकसुजान॥ प्रस्ताविकपुनिकहिकहीअमोकतिविधिआन
४॥ बहुरिसांतरसभांतिसुहिक्रमकोलषोप्रकार॥ कह्योभक्तिमारगसुअबबरनततरससिं
गार॥ ५॥ **इतिश्रीअमरचंद्रिकायांअमरसूरतप्रश्नोत्तरभक्तिमार्गीटीकावर्ननंनामप्रथ**
मविलासः॥१॥ अथश्रृंगाररसव्याख्यानप्रारभ्यते॥ तत्रप्रथमवैससंधिवर्ननं॥ मूल
दोहा॥ तियतिथितरनिकिसोरवयपुन्यकीलसमदौंन॥ १॥ काहूपुन्यनपाइयतवैससंधि
संक्रौन॥२२॥ **सूरतटीका॥ प्रश्न**॥ तियतौतिथिअरुतरनिवहजोकिसोरवयआहि॥ पुन्यकाल
केसमपुकहातियकीओरसुचाहि॥ १॥ **उत्तर**॥ तहींअर्थईहिविधितरुनिकिसोरतपरमान
वहजोवयतियअंगउज्वलकपुन्यकालसमजान॥ २॥ **औरप्रश्न**॥ सूरजउहांकिसोरवयसोन
वनैंसमताइ॥ सूरजपरमैंरासिदैतहांसंक्रमनगाय॥ ३॥ सोकिसोरजोबनपरसनहिसिसु
ताकोलेस॥ वैससंधितिहिकौंकहतसिसुताजोबनवेस॥ ४॥ **उत्तर**॥ हेकिसोरवहवयतरुनि

14A

दुहुंकेवीचमआहि॥ सिसुताजोवनमधितरनिज्यौंदुइरासिमधिचाहि॥५॥ पुन्यकालसंक्रम
नतियपुन्यउदैकोकाल॥ जिहिकीपियकैलालसातकोकरततुतिवाल॥८॥ वार्ता॥ पुन्य
कालएकहीशब्दमैंहैभावकहे॥ इहांसावयवरूपका लंकार॥ रूपकसविषयसावय
वसकलवस्तुवषान॥ रूपकीजियेंज्यांवयहिअंगसंक्रमनजान॥७॥ हरिकविटीका॥
तियनिथि॥ वयसंधिवर्ननकरिसषीनायककौंमिलायौचाहतिहै॥ वारहमहीनाकेवार
हसूर्यहै॥ माघमैंअर्यमनतपैहै॥ फाल्गुनमैंपूषतपैहै॥ चैत्रमैंवेदांगतपैहै॥ ऐसैंआदित्य
हृदयमैंलिख्याहै॥ सूर्जमंडलमैंकोईस्थाननहै॥ तहांमासपर्वभएपरकोईसूर्जउठैहै॥ को
ईसूर्यवैठैहै॥ याकोनामसंक्रमन॥ सोअवनिसक्रमहै॥ पुन्यकालहै॥ तिथिमैंसंक्रांतिहो
तिहैतियजोनायिकासोतिथिहै॥ किसोरजोवयःक्रमहैसोतरनिसूर्जहै॥ समवजो
सूर्यसोउठैहै॥ किसोरसूर्जकोआवनोहै॥ यदअर्थनकरैतोआगेवयसंधिपदनहिलगै॥
दोयवयःक्रमहोय॥ नवसंधिकहियै॥ इहांअनताल॥ पुन्यकालसमदोन॥ दोनकहिएदो
उएकअवस्थाकोजानोहैसरीअवस्थाकोआवनोसोसूर्यकोपुन्यकालताकोसमान
है॥ अतिसूक्ष्महै॥ औपमसमहै॥ तासौंसमकस्यौ॥ काहूपुन्यनिकोईवडोपुन्यसो
पायइनहै॥ वयसकीसंधिओसंक्रांतिपुन्य पुन्यकीपुनरुक्तिमिटाइवेकौंऐसौंअर्थ
करिये॥ हेपुन्यहैसुंदरकालसमदोनयाकोअर्थ॥ संक्रमनकौकालऔवयः॥ संधिको
कालदोनकहिएदोउसमहै॥ औरिअर्थवैसैहीजानिए॥ टिंका॥ हेपुन्यपहजोकालहैव

वि·टी·
१५

पः संधिकोताकों समदें विद्या चै॥ मतिज्ञाने चै मति यह अर्थ है मी ग्रने कार्यमे पुनसं
दरकोनामस्त हृतकोनाम पावनकोनाम॥ इहां रूपक अलंकार है॥ उपमान रू उपमेय
मै भेद परैन लषाय॥ तासौं रूपक कहत है॥ सकल सुकवि सुसदा यति य सौं निधि है॥ ति
य उपमेय तिथि उपमान ता को भेद नहीं जान्यौ जात है॥ पुन पुन मैं अव्रा हृत्ति दीपक पद
की आवृत्ति है अर्थ भिन्न है॥ २२॥ मूलदोहा॥ इक भीजे चहले परे बूड़े बहे हजार॥ कितेन
औगुन जग करत नैवै चढती बार॥ २३॥ सूरतटीका॥ प्रस्न॥ नदी चहै के पछिले गे भीजे आ
दि प्रकार॥ वयके चहे सु किमत है भीजनादि विधि चार॥ १॥ उत्तर॥ भीजनादिके रूपतें कहे
सु चारि प्रकार॥ उहां वैस की दरस सो चारि प्रकार विचार॥ २॥ श्रवन सुपन औ चित्र पुनि प्र
तछ लषन इहि भाय लगनि लगत क्रम क्रम सु दुष परते पर अधिकाय॥ ३॥ जिन वय सु
न सु दुष भयो भीजन कै सो वाहि॥ जिहि सुपनै देषी सु छवि चहले परे सु चाहि॥ ४॥ चि
त्र देषि बूड़े न सम दुष सु भयो तन नूरूप॥ पतछि माहि वहि वो सुदुष है अपार ज्र सुरूप॥ ५
इहां उल्लासालंकार॥ इक के गुन तैं दोष जह होउ लास कविभूप॥ नैवै को चढि वो सगुन औ
र हि दोष सरूप॥ ६॥ हरिकविटीका॥ इक भीजे इति॥ केतेनें औगुन जगत मैं नहीं करत
हैं॥ नय कहियै नदी औ वय कहियै वयः क्रम ये दोऊ चढती वार चढिवे के समय मैं नदी जब च
ढै है इक भीजे है॥ एक चहला मैं परे है॥ ऐसे जानिए वयक्रम जब चढै है तहां लगावनो॥ चा
रि प्रकार के दरसन है॥ श्रवनदर्सन स्वप्नदर्सन चित्रदर्सन प्रत्यक्षदर्सन॥ जिनि नायके रू

150 वस्त्र भ्यो सो भीजे जो भीजे है॥ ताहिकं पा होतिहै॥ इनै कंपा सात्विक भयो॥ मिलन विनाद्दु खही
है॥ किंवा॥ स्वेदसात्विक भयो तासों भीजे॥ जिनि सपन में देषी सो चहले परे॥ चहला की चतो
मे कोई जमैं परे निकरि नहीं सके स्तंभसात्विक भयो मिलन विना दुषही है॥ किंवा॥ सुव
विसनके केतनेन दी के पार अभिसार करि॥ नाइका पास चले॥ एक भीजे॥ औ चहला मैं पंक
मैं परे के तनेन्हदे॥ केतने वहे हजार या को अर्थ॥ ह को अर्थ प्रसिद्ध सव जानत है॥ जार परप
ति॥ किंवा॥ हे की ठौर में है हे वहे हजार॥ जैसें उन दोही अषिआकके छंद के लिए कैकैकों
क है पहेगो॥ जगत में केतने नाओ गुनकों नहीं करत है नयन वीन जावयता की चहतीवार॥
जगत मैं के तना गोगुन कोंन हीं करत है॥ जिन चित्र में देषी सोच उ चित्र देषत ही जडु सहै र
है प्रलय सात्विक॥ जिन सो च्यातदे षी केतेवा के दृषिवे कों पिरे॥ जेव नहीं देषै हे तव आं
सू की धारा परे है॥ किंवा॥ एक कहि एप्रधान॥ कोंन है ने उतेतो भी जिर हे अ स्त्रु सों॥ कज
ल मैं मन गडि रहयो है जापमनो रथ पर उ व हस्सिद्ध नहीं भये॥ नहां को अर्थ उपर है॥ किं
वा॥ गुरु शिष्य सों कहत है॥ हे शिष्य चहतीनय चहतीव पुनजगत मैं के तनागोगुननहीं क
रतीहै॥ लं गारि तरो कओ गुन अपने मन कों मतिकरि वेद इ॥ ने सो वपरूप कौन को
चहतीवार॥ वै को चहती वार एक क्रिया लगी यातें दीपक॥ २३॥ मूलदोहा॥ अपने अंग
के ज्ञानि कौं जोवन नृपति प्रवीन॥ स्तन मन नैन नितंव कौं वडो इजाफा कीन॥ २४॥ अंत
नरीका॥ प्रश्न॥ इजाफा व उके हा न हां इह उत्तर जान॥ उत्तर॥ जोवन मैं सव अंग वढै इके व

हनअतिमान॥१॥हेतोत्प्रेक्षा॥मर्यादातैंबढ़ूलसैबड़ेइजाफीसोय॥तिहिसपासोभाजग
नपावनहैसबकोय॥२॥वार्ता॥उरजादिककीसोभाअतिबढ़ीयहीबड़ोइजाफा॥इहांहे
तुउत्प्रेक्षाऔरवस्तुमैंऔरकीसंभावनाजहँहोय॥वस्तुहेतुफलमयत्रिविधिउत्प्रेक्षाहै
सोय॥३॥अपनेअंगकेजानिकैंइहतोहेतुविचार॥तर्कइजाफाकीकरीमनअतेप
विधिपार॥४॥काव्यलिंगहूहै॥काव्यलिंगसामर्थ्यताजहँदृढ़करतसुजान॥बड़ेइजा
फामैंबहनजोबनतनिसमान॥५॥इतिकविटीका॥जोवनवर्ननअपनेइनि॥सषीना
यकासैंस्तुतिकरतिहै॥अपनेतनकेअपनेपछकेजान्योजोवनजोप्रवीनराजाहैआप
नेमानुमित्रकैंजानतहै॥तनकुचताकोमनकोनैनकोनितंबकोबड़ोइजाफाअधिकाईकी
नी॥कुचकोपहारकरिवर्ननहै॥नैनकोकाननताईनितंबकोंबड़ोवर्ननहै॥मनतोबड़ोईहै
इहांहेतुउत्प्रेक्षालंकारहै॥कैकोअर्थकिधौंआपनेअंगकेजानिहैतइजाफाकोतर्क॥२४
मूलदोहा॥नवनागरितनमुलकलहिजोबनआमिलजोर॥घटिबढ़ितैंबढ़िघटिर।
कमकरीऔरकीऔर॥२५॥सुरतटीका॥प्रस्न॥पहिलैंतोकस्योजोर॥पीछेकस्योऔ
रएनमिलैं॥उत्तर॥इहांमुहराजोरहै॥जोरलेषकेदोषहै॥जोरकाअर्थनलमीपारसी
सहूहै॥तौकोऊकहैपारसीसहूइहांकौंधरा॥उत्तर॥यादोहाबीचपारसीसहूबहुतहै॥क्या
मातनमुलककोआमिलरकाजोरयातैंजोरसहूइहापुष्टहैइतिभावार्थ॥प्रस्न॥जोरस
हूकोभावकहातहांइहिविधिसुनिअर्थ॥उत्तर॥काढ़िदईसितसनाउरजबढ़िघटिकरि

16A

सामर्थ्य ॥१॥ इहांसविषयसावयवरूपकहै ॥ रूपकसविषयसावयवसकलवस्तुनिरधा
र ॥ जोबनआमिलततनमलकचदिविदिग्भ्रमलविचार ॥२॥ हरिकविटीका ॥ नवनागरि
ति सषीकीउक्तिनईजोहैनागरिप्रवीननायिकाताकोजोहैतनसरीरसोहै ॥ मलुकदे
सताकोंलहिकहिएपायकै ॥ जोबनसोईहैकामकोपठायोआमिलहाकिमसाजोरजो
रकोअर्थमलमीणपीजानिये ॥ रकमकहिएवस्तुवहीषीनेकहियैताकोंहटकरी ॥ क
टिवहीषीताकोंचटिकरी ॥ नतिच्छोटीषीताकोंवहाई ॥ नितंवआधिकोंवदाई ॥ करीषाह
दोययठारमैंलगाईये ॥ दहलीदीपकन्यायकरिफेरिओरिकीओरिकरीजोकछूवाल
कपनामैंस्वरूपक्रियापीसो ॥ अबनहीं ॥ औविदीसीभासतिहै ॥ सेसबकोंमारिउहैआ
यहपायीयतारूपकालंकार ॥ उपमानहुउपमेयमैं ॥ भेदनपरैलषाय ॥ तासोंरूपककर
नहै ॥ सकलसुकविसमुदाय ॥२५॥ किसवर्ननमलदोहा ॥ सहजसचिक्कनस्यामरुचिसु
चिसुगंधसुकुमार ॥ गनततनमनपथअपथलषिविथुरेसुथरेवार ॥२६॥ सरनटीका
प्रस्न ॥ बारलषनपथगनततनहिदोषअगम्याहोय ॥ उत्तर ॥ नवमगआरतिअपथति
हिंचहूतनवारकछविजोय ॥१॥ औरप्रस्न ॥ किमनवमगआवेस उत्तर ॥ कहेनदीरथकेस ॥
दोहा जातिअलंकारहै ॥ जातिसुजैसोजासकोरूपकहैतिहिसाज ॥ स्यामसचिक्कनसुगं
धमयकचवरनैंकविराज ॥२॥ हरिकविटीका ॥ सहजदुति ॥ सहजैंसुभावकनैंविनाफुले
ललगायेचिक्कनहैंस्यामकांतिहै ॥ कविसंस्कारकियेसोंपवित्रहैं ॥ औसुकुमारहैंऐसे

वि॰ टी॰
१९

स्यरेवारकौंविथुरेविथुरेदेषिकैंमनजायचहैहै॥पयम्रपयनहिंदेषैहै॥चीकनेप
रपावनहीठहरे॥वारग्रपथहै॥चढिवेकौंत्रिवलीपथहै॥सीटीकीग्राकृतिहै॥नाय
कनायिकाकेकेसकेस्मरनकरैहैसु॥निम्रलंकार॥सुमिरनभ्रमसंदेहयहलछन
नामप्रकाश॥२६॥मूलदोहा॥छुटेछुटावैजगततैंसटकारेसुकुमार॥मनवांधतवे
नींवंधेनीलछवीलेवार॥२७॥सुरनटीका॥प्रस्न॥छुटैजगततबमनवंधैपुनिवंधिवो
किमभित॥उत्तर॥देषिछुटेजगक्रियछुटैवंधेदेषिक्रियचित॥१॥इहांचतुर्थीविभाव
ना॥कारजग्रनहीकारनतेंहिहोयविभावनलेषि॥वंधेहतनहवंधनकोतिनवांध्योमन
देषि॥२॥हरिकविटीका॥छूटैंइति॥नायकस्मरनकरैहै॥नीलछवीलेवारजवछुटेहैं॥
तबदेषतहीजगततैंछुटावतहैं॥जगतकोव्यवहारनहींकरिवेदेतहैं॥सटकारेहैंसुकु
मारहैं॥हमारेमनकौंवांधतहैंवेनीचोटीवंधेहै॥किंवा॥नायिकावांधेहै॥गुहलचुकि
योहैवेनीमेंग्रेषकाहैंचमत्कारनहींनिकसै॥चतुर्थीविभावनाहै॥जबेग्रकारनवस्तुतें
कारजप्रगटहोतमनवांधिवोवेनीवांधिवेकोकारननहीं॥सुमथः॥मूलदोहा॥कचसमे
टिकरभुजउलटिषयेसीसपटटारि॥काकोमनवांधैनयहन्नावांधनहारि॥२८॥सु
रतटीका॥प्रस्न॥काकोमनवांधैनयहनहांग्रर्थयजानि॥सबकोमनवांधनइहैतो
कुलटारसहानि॥१॥उत्तर॥काहूतियवचप्रथमहैकाकोमनवांधैन॥निजसषितादि
कस्योनयहतकहियैसीहैन॥२॥इहांजातिम्रलंकारहैवांकुजानिये॥कचइति॥हरि

17A कविटीका॥ नायकज्वराबांधनदेषिकैस्मरकरैहै॥ कैसकोंएकत्रकरिकेभुजाओंहाथ
याकोंउलटिकरिसीसकोपरसोषएकहियकोधापरडारिकै॥ कौनकोमनकोंनहीं
बांधिसकै॥ यहकहियेयातरहसोंज्वराकीबांधनिहारीजेतवीजगतमेनायिकाहैं
स्वभावोक्तिअलंकारहै॥ जाकोजैसोरूपगनहोयवैसोकहे॥ २८॥ वेनीवर्नन॥ मूल॥
दोहा॥ नाहिदेषिमनतीरथनिविकटनिजायवलाय॥ जामगनैनीकेसदावेनीपर
सतपाय॥ २९॥ सवत्तटीका॥ प्रस्न॥ तीरथनकीनिंदाअधिकहै॥ उत्तर॥ अर्थविधि॥ व
षभासुरकेवधविषैकहीकिहूंसषिआय॥ श्रियाकह्योतीरथकरोतहांसुमवचपा
य॥ २॥ दुतियविसेषालंकार॥ तनआरंभवढुसिद्धिनहालहिविसेषपरसिद्ध॥ तिहि
देषनश्रमतनअधरवैणीवरबउसिद्ध॥ २॥ वेनीसहूकरिश्लेषहूजानिये॥ हरिकवि
टीका॥ नाहिदेषिइति॥ सिष्यकाहूपरआसक्तहे॥ मानसविचारकरैहै॥ गहतीरथक
रिवेकोंपठावैहै॥ नाहिमगनैनीकेपावसोंसदावेनीचोटीपरसेहै॥ यामेंरूपकी
बडाई॥ श्लेषमेंत्रिवेनीपरसैहै॥ छवैहै॥ यामेंमहात्म्यनाहिदेषिकेंहमनकठिनतीर्थ
निमेंवलायजाय॥ काव्यलिंगअलंकार॥ नाहीतीरथजानो॥ याकोसमर्थनकियो
लिंगा॥ नाराधिकाजीको॥ हिकहियेहृदयमेंदेषिकेरेमनअरवैसेही॥ इहांवेनीत्रिवे
नीलीजिये॥ २१॥ मूलदोहा॥ वेंदीवर्नन॥ सवैसुहायईलगेंवसैंसुहाएठाम॥ गोरे
मुषवैंदीलसैंअरुनपीतसितस्याम॥ ३०॥ सवत्तटीका॥ प्रस्न॥ नहिवैदीपरसंसस्यो

वि॰टी॰
१८
18

मुष प्रसंस रहि धाम॥ गोरे मुष तैं लसत पर वसन सुहाये ठाम॥१॥ कवि कौ मत निज यों
कहौ मिस लवार मत एडु॥ वाही मन के प्रस्न पैं वु पिवल उत्तर देहु॥२॥ उत्तर॥ वाम सुहाये
लगा हि ज्यों वसै सुहाये थानि॥ गोरे मुष वें दीन तें लसैं पाय रंग वानि॥३॥ दृष्टांत
भाव विंव प्रति विंव कौ दृष्टांत सु रहि गाय॥ मुष वेंदी तैं लसत ज्यों सोहत सोहन पाय॥४॥
हरि कवि टीका॥ सवैया॥ गोरी के भरि चंदन कस्तूरी की वेंदी के वरनन सौं नायिका की स्तु
ति॥ नायक सषा सौं कहै है॥ हे सषा यह स्याम सोहावनी ठौर में वसै सो सोहावनो ई लगै॥ अ
रुन पीत सित न कहि ये सपेद स्याम जो है वेंदी सो गोरे मुष सौं लसत है॥ किंवा॥ वेंदी तैं मु
ष सोहत है॥ दृष्टांत अलंकार॥ भावविंव प्रतिविंव को जहां दृष्टांत सुजान॥ सोहावनी
ठौर मैं वसै सोहावनो लगै ज्यों गोरे मुष वेंदी॥३॥ मुनि जन वंदित कौ वर्णन॥ दोहा॥ सो मत
म्हारे वदन पैं वेंदी नाहि सुढार॥ गोरे ही मुह पेल सैं सोभा सहित अपार॥ टीका॥ नायक की
स्तुति गुन कथन सषी की स्तुति कवि की तो प्रस्ताविक॥ ललाट की स्तुति॥ भले ठाम व
सैं जो भले कहावैं॥ दृष्टांत॥ श्रीप्रताप॥ सवैसा मांमा॥ मुष विसेस॥ अर्थांतरन्यास॥ ना
यका कौ वचन नौ षंडिता गोरे मुष पै लसै है तिहारे मुष पै ना हीं लसै॥ परिसंख्या॥२॥ मू
ल दोहा॥ कहत सवै वेंदी दियें आंक दसगुनौ होत॥ तिय ललार वेंदी दियें अगनित वढत उदो
त॥२१॥ हरि कवि टीका॥ कहतरति॥ नायक नायिका सौं कहत हैं सव कहत है॥ देवी सोता
दि वैसौं आंक दसगुनो वहत है॥ हे तिय तेरे ललाट मैं वेंदी दिये सौं अगनित उदोत प्रकास

18A वढतहै॥ दोहा व्यतिरेकअलंकार॥ व्यतिरेक जु उपमानतें उपमेय अधिको होय॥ ग्रंक दस्स
गुनोतें भालमें अगनित उदोत॥ किंवा॥ नायक के ललाट में वेंदी देषिकें॥ षंडिताकी उ
क्ति वियके ललाट की वेंदी दियेसो पुरुषको अगनित उदोत वढत है॥ धीरा बोलैं वक्र विधि
आधा दोहा को वही अर्थ॥ जो सषी की तो स्वतिनाइक की तो पूर्वानुराग॥ स्मृति गुन क
थन॥ वितरेव उ॥ श्री प्रताप॥ वैंरी ते लाट॥ १॥ मूल दोहा॥ भाल लाल वेंदी छए छुटे वा
र छविदेत॥ गह्यो राहु अति आदु करि मनु ससि सूर समेत॥ २१॥ सूरतटीका॥ प्रसं॥ या
दृष्टांत रवि ससि मिन्नहै नेसो भाजन नाहिं॥ तो ऐसो वैंरी भाल की निंदा हैं इहिं माहिं॥ १॥ उत्तर
इहिविधि की जे अर्थ ज्यों गह्यो राहु धरि धीर॥ मनु ससि सूरज दुहुन मिलि नदों सो भार
स वीर॥ २॥ तर्हा प्रस॥ जो पै राहु गह्यो कहो तो न सो भजनता हु॥ ज्यों तो कह्यो किवा रह
विदेत छुटे कवि नाहु॥ ३॥ औरप्रस॥ जो कदाचि छविदेत परक है सो वेंदी मांहि॥ तो न
वनें न करै तिअरु पुनि समेत रहिं ठां हिं॥ ४॥ मुषपै कचआवत कछू कच पैं मुष न हिजा
न॥ राहु गह्यो ससि सूर नें अर्थ न पुष्ट लषात॥ ५॥ तो ऐसो प्रस स्तीन है वार नि छवि स
व ने न॥ देति समेत न न तकवनें कच ऐ को कि मिवें न॥ ६॥ उत्तर॥ गह्यो राहु ससि सूर नें य
ही अर्थ वरसोय॥ ये यह इहि विधि कीजिये प्रसर है न हि कोय॥ ७॥ अर्थविधि॥ भाल सु वें
दी लाल कवि सो वदह छवि कों देत॥ छटे वार नमें सुयों अर्थ करहु चित चेत॥ ८॥ कच की छ
वि स्त्रनि षेध कियत्र कह वनी सुजान॥ मुष पैं कच को आय वो स्तनि अव अर्थ विधान॥ ९

कहूंकहूंयोंहूंवनतचहिआवतरिपुकोय॥ताहूकौंगहिवासुनैंयहूरीतिजगजोय॥
१०॥औरप्रस्न॥कहौसुकैसैंकरिजानियैंगहेराहुकौभा॥करतउहांकौसवललताग्रा
योइंहींचितावा॥११॥उत्तर॥तहांसुलक्षदेकैसकौसमयसुवर्ननजानि॥कहुंग्रास्वाद
नमसुषनहीलक्षातसमयनवषानि॥१२॥लक्षातसमयवैंदीनहीहोतदसोसोनाहि॥या
तैंयहजानीपरतवेंदीमुषछविमांहि॥१३॥ग्रहनरातियोराहुहकिलेतदसोसोनां
हि॥यातैंससिरविग्रहनगहिग्रस्योराहुकरमांहि॥१४॥इहांउक्तास्पदवस्तूत्प्रेक्षा॥भा
लललितचवलमैंससिरविनमकीनर्कलहेविवलउक्तास्पदउत्प्रेक्षाकुलम्पर्क॥१५
हरिकविटीका॥भालसुति॥सषीनायककोंमिलायोचाहतिहैरूपकीप्रसंसाकरिकैं॥भा
लविषैंलालजोहैवेंदी॥किंवा॥हेलालभालविषैंजोहैवेंदीकुंकुमकेसरिकीताकौंछा
यकैंछुयेएहपाठहैतोछुइकैं॥छुटेजेहैंवारतेछविदेतहैं॥मुषकीसोभावढावतहैं॥
तहांमैंभावनाकरैहैं॥कैसेसोराहुहैतानैंअतिआदकरिअतिग्रादकरकरिकैंसूर्जं
चंद्रमाकोंएकहीठौरपकरिलीयौ॥राहूनेअतिआदकरिकैमानोंससिसमेतसूर्जकोंप
कस्योहै॥जासमैंग्रहनलगेहैतासमैंससिसूर्यकीसोभानहीं॥इहांकस्योपुरेवारछ
विदेनकैंमैंलगे॥यौअर्थकरियै॥मानोससिसूर्जमिलिकैअतिआदकरिकैराहुकौंग
ह्योहै॥सत्रुकेपकरेसौंजयश्रीचढीहै॥याहीतैंकस्योवारछविदेतहैं॥उक्तास्पदवस्तूत्प्रे
क्षा॥भालमैंससिकीवेंदमैंरविकीवारमैंराहुकीनर्क॥उक्तिनायककीगुनकथनसु

19A निसंचारी जो सखी कीनी तो हूं नन॥ अथ हूंगा उ॥ प्रताप॥ यथा संख्य के कानु प्रास॥ ३२॥ मूल
दोहा॥ पायल पाय लगी रहै लगे अमोलिक लाल॥ भोउर हू की भी खिरै है वेंदी भामिनि भा
ल॥ ३२॥ अथ टीका॥ पायल लाल लगे तऊ पायल गे सब काल॥ वेंदी भोउर की जद पित
ऊ भामिनि है भाल॥ १॥ अन्योक्ति को अर्थ॥ उत्तम संपति हीन है तउ उच आसन जोग॥ अधम
धनी तो ऊ रहै सेवक भाव संजोग॥ २॥ उल्लास अलंकार॥ लहै दोष तें दोष दूकगुन तें गु
न उल्लास॥ पायल गन पायल गयो वेंदी भाल सवास॥ ३॥ मूल॥ पायल मैं कहा नीचता
वेंदी कहा उच भाय॥ उत्तर॥ पायल पग रहे न दिवन न तवेंदी भाल हि भाय॥ ४॥ अन्योक्ति॥ अमो
लिक अरु प्रतिक हैं अरु की बात विधान॥ पायल वेंदी प्रतिकरी ऊंच नीच की बात॥ ५॥ इति
कवि टीका॥ पायल इति॥ भोरि के छल में भोरि सों कोई कहत है॥ पायल जो चरन भूषन सो
पाव में लगी रहति है॥ कैसी है जामें अमोलिक जंकी मोल नहीं॥ ऐसे लाल रत्न लगे हैं॥
भोउल अभ घता हू की जो वेंदी टीकी ताकी भास सोभा भामिनि नायका तके भाल में है॥ उ
तम जो निर्धन होय तो भी उच्च आसन के जोग है॥ नीच धनिक है तो भी सेवकता को जोग है॥
इहां अप्रस्तुत प्रसंसा अलंकार है॥ याकों अन्योक्ति कहत है॥ जहां औरि सिर औरि के कहै
औरि की बात॥ ताकों अन्योक्ति कहत हैं जक वितासर सात॥ किंवा॥ प्रास्ताविक दोहा में न
ही कछु तो ना सो औरि अर्थ भी जानिये॥ सखी अभिसार करावति है तूं परम सुंदरी है सम
परूप सिंगार का है को करति है॥ पायल तो तेरे पाय में लगी रहति है॥ औ सं के न भी हू दिन

वि·टी·
२०
20

हीहै॥ लगैकहियेनजीकहीअमोलिकलालनायकहै॥ अमोलिककहिएजाकेगुन
रूपकहिबेमैंनहीआवतहैं॥ अबभीकहतहैफलानाअमोलिकआदमीहैं॥ हेभामि
नितेरेभालमैंभोडुलहकीवेंदीसोभैगी॥ कबित॥ वेंदीसुतनु सोभैगी॥ ३३॥ मूलदोहा॥
तियमुषलषिहीराजरीवेंदीबहतविनोद॥ सुतनसनेहमांनोलयोविधुपूरनबुधमो
द॥ ३४॥ सूरतनरीका॥ इहांप्रस्न॥ बुधहरितरंगहीरासेतबनैन॥ उत्तर॥ मतसुपुत्रन
केबुधमिलकैभैसैवैन॥ १॥ इजोउत्तर॥ बुधपंडितकौंकहतहैसंबोधनयहजानि॥ नेहस
हितलियसुतहिविधुगोदनिजाकृतमानि॥ २॥ प्रस्न॥ हीराकिमविधुसुतकहो॥ उत्तर॥
कविप्रियामहसाषि॥ मोतीनाकबुलाककोकह्योचंदसुतराषि॥ ३॥ साषि॥ मानौंगोद
चंदहीकीषेलैसुतचंदकौ॥ इहांउत्प्रेक्षा॥ हरिकविटीका॥ तिपमुषदुति॥ नायकवचन
हेतियआनोमुषतू दर्पनमैंदेष॥ हीरासौंजरीजोहै वेंदीतासौंकेसाविनोद इहांवि
नोदकोअर्थनेदलीजिये॥ आनंदवहैहैपूरनविधुचंद्रमाहैताने सुतपुत्रकेस्नेहसोंबु
धकौंमानौंगोदमैंलियोहै॥ जोतिषमैंबुधकोरंगहरितहै॥ सोफलकेसाधनकेलिएदेषि
वेमैंसितजरियावैहै॥ यहदोहाप्रसिद्धहै॥ ३४॥ टीकाकर्ता मूलदोहा॥ नीकोलसततिल
लारपरटीकोजटितजराय॥ छविहिबढावतरविमनोससिमंडलमैंआय॥ ३५॥ सूर
तरीका॥ इहांवस्तुउत्प्रेक्षा पद उत्प्रेक्षापरवीन॥ टीकोवस्तसुउक्तहैरविसुतर्कयहकी
न॥ १॥ छविबढिबेमैं उत्प्रेक्षावाक़ी कोउकहैरविससिइकठाहुवै सोभाजुतनाहीं॥ नौ

20

इहां अरथभ्रम अलंकार है ॥ हरिकविटीका ॥ नीको इति ॥ सषी नायिका की स्तुति करै है
नायक सौं ॥ जराउ सौं जड्यौ जो है सो नेकौ टीका टीका सो ललाट पै नीको सोहत है ॥ टीका भ
यो रवि ससि मंडल है सु घता मैं आय कैं ॥ मानौं छवि कौं बढावै है या का समे यह रावै है ॥ इ
हां उक्तास्पद वस्तु उत्प्रेक्षा टीका वस्तु उक्त है ॥ तामैं रवि कौ संभावना ॥ ३५ ॥ सषी तौं स्तु
ति नाइक तैं अवतरण ॥ वस्तु उत्प्रेक्षा ॥ श्रीप्रताप ॥ टीका ॥ ३५ ॥ नैनवर्णन ॥ मूलदोहा ॥
रस सिंगार मंजन किये कंजन भंजन दैन ॥ अंजन रंजन हू बिना षंजन गंजन नैन ॥ ३६ ॥
सूरतटीका ॥ प्रस्न ॥ रस मंजन मैं धुनि इहै कहा एन ए रस मांहि ॥ कंजन षंजन गंजिवौ है
त चमत कृत नाहि ॥ १ ॥ उत्तर ॥ रस सिंगार कैं आपवहि पर हत सदा दृगवाम ॥ याही
तैं कंजादिक सहं गंजन अभिराम ॥ २ ॥ प्रस्न ॥ है उपमानदि कृत नहा ॥ उत्तर ॥ कंजन
दृगगुन भूरि ॥ षंजन हू मैं स्यामता चंचलता दुति हूरि ॥ ३ ॥ वार्त्ता ॥ इन उपमानन मैं सव गु
न आए ॥ इहां व्यतिरेक अलंकार वर्ण ॥ अवर्ण्य हि तैं जहां है विसेष व्यतिरेक ॥ कंजादिक
है दृगन मैं आपदेन अतिएक ॥ ४ ॥ पुन इन नपासहै ॥ अवर रस मतावार वहु आवै व्रत
नुप्रास ॥ मंजन कंजन आदि है सो सव कृत पर काम ॥ ५ ॥ हरिकविटीका ॥ रस सिंगार इति ॥
सषी नायिका की स्तुति करै है ॥ किंवा ॥ नायक स्मरन करै है ॥ कमल षंजन की उपमा नेत्र की
हतहैं ताकौ तिरस्कार वनै है ॥ कमल तौ जल सौं मंजन करै है ॥ इन सिंगार रस सौं मंजन
किये है ॥ किंवा ॥ इन सिंगार रस कौ मंजन किए है ॥ सिंगार कौ व्यक्त किए हैं ॥ मा जे सौं व

लसाफहोतहै॥ सिंगारकोंप्रकटकिएहैं यहअर्थ॥ यहदोयअर्थमैंअंजनके भंजन कहिएभंगदेनवालेहैं॥ सोनहीसंभवैलक्षनाकरितिरस्कारजानिए॥ अंजनमैंरंगी नाथअंजनकेगंजनकरनवालेनैंनहैं॥ सहजैंकजरारेहैं अतिचंचलहैं॥ सिंगारसोहैरस जलयासैंतोरूपकसोचतुर्थप्रतीप॥ उपमेयकों उपमानजवसमतालायकनांहि॥ इतिअनुप्रासबहुतवारअक्षरकहेवहै इतिसोजांन॥ उक्तिसषीकीनायकसोंतोदूत त्वतैनायिकासोंतोस्तुतिजोनायककीतोस्मृतिसंचारीगुनकथनदसावस्थाकीउक्ति तैंअन्यसंनिधितेंसंगि॥ विभावनाछेकाअमरव्यतिरेक॥ वसाह॥ प्रताप॥ अर्थाव तिदीपक॥२६॥ मूलदोहा॥ जोगजुगतिसिषईसवैंमनोमहामुनिमैन॥ चाहतपिय अद्वैततासेवतकाननवैंन॥२७॥ सूरतटीका॥ इहांएकदेसविवर्तीसावयवरूपक॥ औ रअप्रसिद्धास्पद वस्तुउत्प्रेक्षा॥ सोइकदेसविवर्तिइकलहैकहैं विनुभेव॥ जोगजुगतिअं गासबधपेइगासिषपदधरलेव॥१॥ सेवानहिअप्रसिधासपदफलअद्वैततनाचाह॥ त केकरीमनसहूकरिउत्प्रेक्षाअवगाह॥२॥ जोगअद्काननमैंअ्रेषहहै॥ हरिकविटीका जोगइति॥ सषीकीउक्तिनायकसों॥ मैंनकामसोमहामुनिहै॥ तातेजोगजोग॥ जोग मिलनताकीजुगुतिउपायमानौंभलेंसिषाई॥ मुनिजोगसिषावैहैं॥ कांमभिलन कीजुक्तिसिषाईहै॥ पियसोंअद्वैतताएकताचाहतहैं॥ यातैनैंनकाननकोसेवतहैं कांननमेंश्लेषकाननताईनेत्रहैं जोकोईजोगीहोतहै॥ ब्रह्मसोंअद्वैततताचाहततहै॥ सो

काननवनसेवतहैं ॥ इहांजोगयोकाननमैंश्लेष ॥ महामुनिमैनरहांहूपक ॥ मानों
क्षिपए इहांउत्प्रेक्षा ॥ उक्तिसषीकीनायिकानवोढा अलंकार कीमुष्यतातेंअवरकाव
हूपकश्लेषउत्प्रेक्षाकोसंकरसमासोक्ति ॥ प्रताप ॥ वक्ता ॥ ३७ ॥ मूलदोहा ॥ सायकस
मनायकनैंनरंगेत्रिविधिरंगगात ॥ झषीविलषिदुरिजातजललषिजलजातलजात
३८ ॥ सुरसतीका ॥ प्रस्न ॥ सायकसमदोहाविषैंअर्थसुनिवहननाहिं ॥ कहेसितासित
दृगवरनत्रयरंगकोंइहिमाहिं ॥ १ ॥ झषदुरिवौकंजनलजननायकपदलगैंन ॥ यातेंयाके
अर्थकीसुनियेविधिसुषदैंन ॥ २ ॥ उत्तर ॥ नहिंसलेषविधितर्कह्यांउत्प्रेक्षालषिलेहु ॥ सा
यकसमदृदईसमझिझषजलजनिगतिएहु ॥ ३ ॥ इहेंलजैझषकंजदृगसायकनाय
कजोय ॥ इकद्वैदैवद्वैहूलगेइमयैंविधिनहिंसोय ॥ ४ ॥ रंगकोउत्तर ॥ लषतपियहिंजग
संगतऊमुकरतसषिसोंप्रीति ॥ तहांसरविधित्रियरंगसमधिलषनिजगतियहरीति
५ ॥ सषीवचनहैंयांतिसंलषीप्रीतिअभिरामयातेंइहिविधिनायकालषोलक्षितना
म ॥ ६ ॥ असिद्धासपदहेतउत्प्रेक्षाहै ॥ दुरिवोअरुलजानिरहिअसिहुहेतनैंजान ॥ असि
द्धास्पदहेतकीउत्प्रेक्षामनमान ॥ हरिककविटीका ॥ सायकरति ॥ सषीवचननायकसों ॥ रं
गेत्रिविधरंगगाततनीनितरहकेरंगमेंअंगरंगेहैं ॥ यातैंनैनसायकवानताकेसमहैं ॥ से
तहैस्यामहैलालहैं ॥ सितासितलोचनमेंलोहितलकीरकिधौंवपेज्जुगामीनलालरे
समकेजालमैं ॥ सायकसमहै ॥ एनायकहैं ॥ कहूंरनमेंमायाहै ॥ जाहिदेषिझषजोहै

बि॰ सी॰
२२
22

मीनमोंखिलघायकैंजमैंकुपिजात॥देषिकैकमललजातहै॥अर्थयहयाकोसोरूप
हमारेनहीनेत्रअतिसुंदरहे॥इहांव्यतिरेकालंकारहै॥अतिरेककहुउपमानतें॥उ
पमेअधिकेदेषिनेत्रमेंमायकनाअधिक॥उक्तिसषीकीनायिकासोंलाोक्षतिकरि
यांषिनकोंलालकहतिहै॥नायकसोंतोहूनत॥नायिकास्वरनिरांछिता॥उपमा
उत्प्रेक्षा॥प्रतीपकीसंसृष्टि॥प्रश्न॥व ला॥ २८॥मूलदोहा॥अरतैंटरतनबरप
रेहूईमरकमनमैंन॥होडाहोडीवढिचलेचितचतुराईनैंन॥२९॥सूरतटीका॥प्रश्न
होडाहोडीहैनमैंहोततीनसामर्थ॥उत्तर॥चितकीचतुराईनयनहूहीगनैंसमर्थ॥
१॥श्रीरस॥चतुराईकीहदनंहीनैंनवदनहदआदि॥यहअसमंजससीलगेहोडा
होडीचाहि॥२॥उत्तर॥चितचतुराईऔरपुनिचतुराईजोनैंन॥तेदोऊवाहीअमितचि
तचतुराईसैंन॥चितचतुराईअनतनयनदोऊवढैंलषांहि॥४॥इहांसिहासदहेतूत्प्रेक्षा
मैनमरकयहहेतहैमतोंवदे॥इहिभाय॥बहतइहांसिहासपरहेतूत्प्रेक्षाजाय॥५॥
२९॥मूलदोहा॥षेलनसिषयेअलिभलेचतुरअहेरीमार॥कांननचारीनैनमृग
नागरनरनसिकार॥४॰॥सूरतटीका॥इहांरूपकश्लेषअनुक्तरसवरालंकारहै॥अलंका
रूपकरहांवरयोरूपसिकारकाननपदके हैअरथसोसलेषनिरधार॥१॥मृगचतुरम
नुष्यनकीसिकारषेलैंयातेंअनुक्त॥हरिकविटीका॥सषीकीउक्तिनायिकासोंपरिहा
सकरैहै॥हेअलिचतुरजोअहेरीसिकारिमारकासहै॥वनिकान नचारीजैहे॥नैंन

22A

ताकैं मृगनैंहैं नागरनर प्रवीननरताकी सिकार षेलनकैं भलैं सिषाए हैं ॥ काननन
चारीकौ अर्थ ॥ काननतांई गए हैं तासे चहे हैं ॥ औ काननचारी वनचारी ॥ जे सैचीती स्या
है तो सकैं सिकार सिषावै है ॥ किंवा ॥ यह अस्यर्थ काननचारीनैंन मृगकौं नागर
नरनिकी सिकार ऐसैं जानिये ॥ नागरनरन इहां बहुवचन है ॥ तासैं नायिकां सामा
न्या होति है ॥ तहां ऐसैं जानिए ॥ काननचारी नैंन मृगताकी नागरनर नायक ॥ नसि
कार सिकार नहीं हैं ॥ तोभी सकार सिषाए ॥ जैसैं एकनें सिषायो सहक सो कबूतरकी
सिकार मैंन सो मृग इहां रूपक काननइहां श्लेष ॥ मृगसों नरकी सिकार अभृत रस
सिंगार मैं ॥ सषीकी नायकसों परिहास ॥ रूपक श्लेष विभावनांके पोषक यतें संकर
प्रनाव ॥ चतुर नागर अर्थवृत्तिदीपक ॥ ४ ॥ मूलदोहा ॥ वरजीते सर मैंनके ऐसे देषे मैंन
हरिनीके नैंनानतैं हरिनीके ऐनैंन ॥ ४४ ॥ [illegible]टीका ॥ प्रस ॥ वरजीते सरसैंनकहि मृ
गहगनी कब नैंन ॥ उत्तर ॥ यातैं मृगतैं सबरजीते सरइन मैंन ॥ १ ॥ इहां काव्यलिंग अ
हजमक है ॥ जीतनमैं सामर्थ दृढकवीनीकली आदि ॥ काव्यलिंग यातैं इहां अवरजम
कअवगादि ॥ २ ॥ हरिकविटीका ॥ वरजीते इति ॥ नायकसों सषीवचन ॥ वरकहिए श्रेष
जेदै मैंनका मताके सरमोहतादिता कौं जीते हैं ॥ किंवा ॥ वरकहिये वलतासों कामु
के सर जीते हैं ऐसे देषमैंन ए मे पातरह कौ अर्थ ॥ हमनहीं देषे ॥ हरिनीमृगीताके नैं
ननितैं दूहरिए नैंननीके हैं ॥ किंवा ॥ हरिनीसुंदरी जे स्त्री है ॥ ताके नैंननितैं एनैंननीके

बि॰ सी॰ २२
23

है॥ हरिणी चारु योषिति॥ है मकार पद है याको अर्थ॥ हरिणी श्रष्ट चारु सुंदरी योषित
स्त्री विषैं है॥ किंवा॥ बातनकों हरकरिवेकौं दोयवार संबोधन है हरिनी के जे है नैन ता
तें है हरिएनी के नैन हैं॥ किंवा॥ हरिनी नाम एक अपसरा है॥ ताके नैन तिनैं हरिएनी
के नैन हैं॥ नीके नैन कहिके॥ मैनको सर जीतिवो दृढ कियै॥ काव्यलिंग जब जुक्तिं
सों अर्थ समर्थन होय॥ औ जमक षाहालंकार है॥ जमक सबदकौं फिरि श्रवन अर्थ
जुदो कै जानि हरिनी के हरिनी के॥ सषी उक्ति नाइकसों नायका की स्तुति॥ जमका
लंकार॥ अमर॥ काव्यलिंग अरु जमक न बाबवितरेक॥ प्रताप॥ प्रतीप पाच
वीं॥ काव्य अर्थापति है होत है॥ ४८॥ मूलदोहा॥ संगति दोष लगै सबनि कहिय तसां
चे बैन॥ कुटिलबंक भ्रू संग भए कुटिल बंक गति नैन॥ ४९॥ सूरतटीका॥ प्रस्न॥ कुटिल बं
क पुनरुक्त यह कही सु कौंन प्रसंग॥ उत्तर॥ इष दोई है कुटिल है टेढी सै वक्र सु बंक॥ २॥ इहां
उल्लास अलंकार॥ इकके दोष हितें जहां और रहि दोष उल्लास॥ कुटिल बंक संगतें भए कु
टिल बंक परकास॥ सूरतटीका॥ समाप्तइति॥ नायिका की उक्ति नायक सों किंवा नायक की
उक्ति षंडिता नायका सों॥ नायिका वचन॥ संगति को दोष सबकौं लगै है॥ कहे ज्यु सांचे
बैन॥ सांचे लोगनि ने यह बैन वचन कहे हैं॥ किंवा॥ सांचे वचन कहे हैं॥ है कुटिल त्रिभं
गी॥ वाकी जे हैं भ्रकुटी ताकै संगतें॥ ए नैन कुटिल गति चक्र गति भए हैं॥ नायक की उ
क्ति मंदे कुटिल टेढी वाग वोले है गन मैं दोषनिका रै है॥ किंवा॥ कुटिल बंक वोलनि है टेढी

23A

जाहै ॥ एरबमैं टेढ़ुवां कू चकहतनहैं ॥ एसी भकुटी के संगतैं ॥ कोईकू टिलदुषदाईकहत
है ॥ किंवा ॥ पूर्वार्द्ध को ओरि अर्थ वेसैं ही ॥ षंडितासषीसों ॥ नायककों सुनायक हतिहै
है सब यसषिकुटिलदुषदाईजोवहनायिकाहै ॥ फेरिवैसीहैवंक भ्रूहै ॥ करकसाहैसदा।
भोहैं चढायेरहतिहै ॥ जाकेसंगतेनायककू टिल गतिभएहै ॥ दुषदाईकी तरहलियेहैं ॥।
कैंा हूनकों नैंक हिएनी तिसोई नैननहीं हैं ॥ पहिलैं प्रीतिकरैपीछैंसागकरै ॥ यहग्यनीतिह
हो अर्थान्तरन्यासअलंकारहै ॥ गुनऔगुनजवएकतेंओरिपरैउल्लास ॥ भौंहनिकोदोषने
त्रनिमैंलाग्यो ॥ सषीदूतीकीउक्तिहोइतौंभेदापाइ ॥ जोनायककीतौं ... ॥ ...
कीउक्तितैंव्यंग्य ॥ अथवाअन्यापातिसषीपरिहासकुटिलसंबोधन पुनरुक्तवदाभास
अर्थान्तरन्यासकीसंसृष्टी ॥ अमर ॥ उल्लास २ ॥ प्रताप ॥ काव्यलिंग ॥ संगतिकोंगुन।
सो चमैं योयाष्यो ॥ ४२ ॥ मूलदोहा ॥ फिरिफिरि दौरतदेषिएनिचलेनैंकरहैन ॥ एकजरा
रेकैंानपरकरतकजाकीनैंन ॥ सरनदीका ॥ प्रस ॥ करतकजाकीकोंनपरकुलटार
सहतहोय ॥ उत्तर ॥ सषिवचनायकप्रतिगनसोंसहजन्अमितहैंसोय ॥। वाचकोपमा
नलुप्तोपमा ॥ नैंनइहांउपमेयहैपरमहोरिवोजानि ॥ वाचकअरुउपमानकोंलोप
लषोउरआनि ॥ हरिकविरचित ॥ किविधिकविरुनि ॥ परकीयानायिकासोंसषीअजा
नसीहोयकैंहसीकरतिहैं ॥ मिलिकैंफिरतहै ॥ फेरिदौतरदेषियेहैं ॥ कजाकुलटेरोंकी
भीएहीतरहहै ॥ निश्चलथोरीभीनहींरहतहैं ॥ एजोतेरेकजरारेकाजरसहितनेत्रहै

सोकौंनपैकजाकीकरतहैं॥ जोनायकसौंसषीकोवचनहै।यातेविनाकाजरहीकज
रारेनेत्रजानिए॥इहांलप्तोपमाअलंकारहैं॥नैंनउपमेयहैदोरिवोधर्महै॥वाचकउप
मानकोलोपहैकजाकसेएतनाउपरतैंजानिए॥ सषीपरिकी या प्रतिपरिहास॥है
तलक्षिताकराक्षिविक्षेप॥उपमाअलंकार२॥पताप॥फिरिफिरिवीप्सा॥काका
इतैंधुन्या॥कुलटा॥इहांकुलटाहोतिहैपैयाविधिअर्थकरियेतोकुलटादोषजाय॥ना
यकसौंसषीकहतिहैजोतुम्हारेनैनहैसोनायकाकेनेत्रनकेजेकजरारेकौंनपैंकजा
कीकरतिहैं॥७२॥हरिकविमलदोहा॥सवहीतनसमुहातछिनचलतिसवनिदैपीठि॥
वाहीतनठहरातियहकविलनुमालौंडीठि॥७३॥हरिकविटीका॥सवहीतनि॥सषी
सौंसषीवचन॥सबहीतनसबहीकीओरसंमुषहोतिहैछिनएक॥फेरिसवनकौं
पीठदेकरिचलतिहै॥वाहीतनठहरातियह॥यहदृष्टिवाहीनायिकाकीओर॥किंवा॥
नायककीओरठहरातिहै॥कविलनुमासीकविलनुमालोहकीएतरीअंगरठीमेंर
हतिहै॥पछिमकीषानिकोचुंवुकवामेंलग्योरहतहै॥कोईतरफफेरतरीकोफेरैतौ
भीपछमतरफकौंवाकोसिररहै॥इहांपूर्णोपमालंकारहै॥डीठिउपमेयकविलनु
माउपमालौंवाचकसमुहानोधर्म॥७३॥मलदोहा॥कहतनटतरीझतषिजतमि
लतविलतलजियात॥भरेभौंनमैंकरतहैनैननिहीसोंवात॥७४॥हरिकविटीका॥
कहतनटि॥लोगनिसौंभौंनभर्योहै॥तहांनैंननिहीसौंवातकरतहै॥कहतहैंनायक

24A

तो सके न चलि वे कों इसारा करत हैं ॥ तब नायान दै है ॥ नाहीं करै है नाहीं कहि वे सों जो सोभा विशेष होत है ॥ तासों नायक रीझत है ॥ तब नायिका षीजति है ॥ कोई ज्ञान में गोफेरि नायक के नेत्र मिलि वे षिलत है फूलत है ॥ तब नायिका लजाति है ॥ देषि के सषी सषी सों कहति है ॥ परकीया नायिका है ॥ इहां विभावना अलंकार है प्रतिबंधक होन हू कारज पूरन मानि भरोभोन बाधक है तो भी बातें करत हैं ॥ आधा दोहा में कारक दीपक ॥ अलंकार हो ॥ सब अंग क विरोधी सुचरि नायक नेह सिषाय ॥ रस जुत लेति अनंत गति पुतरी पातुरराय ॥ ७५ ॥ टीका ॥ सब अंग इति ॥ नासिका वास कस जो ॥ ताकी चंचल दृष्टि देषि सषी नायक सों कहति है ॥ या नायिका की आंषि की जो पुतरी है सो पातुरराय है ॥ पानवि अनि का सरदार है ॥ सरदार पनो निवाहत है ॥ नाच के चारि अंग है ॥ नाचिवो ॥ गाइवो ॥ बजाइवो ॥ भाव बताइवो ॥ नेह रूपी नायक न चाव नि हारता नैं सब अंग करि कहिवो नदिवो रिझिवो षीजिवो यह अंग निए ॥ चारि हू अंग में सिषाय के सुघर किया बी है ॥ और पातुरि एक दोय अंग में सुचरि प्रवीन होति है ॥ रस सों जुक्त दोय के अनंत गति लेति है ॥ और पातुरि इतनी संगति लेति है ॥ इहां रूपकालंकार है ॥ उपमान रूपमेय मैं भेद परै न लषाय ॥ तासों रूपक कहत हैं सकल सुकवि समुदाय ॥ ७५ ॥ अलंकार ॥ कंजनयन मंजन किये बैठी ब्यौरति बार ॥ कच अंगुरिन विच दीठ दै निरषति नंदकुमार ॥ ७६ ॥ टीका ॥ कंजनयन इति ॥ सषी सों सषी वचन कम

वि.टी.
२५
25

लैनेंनीनायिकास्नानकरिकेवारकौंसुकरावतिहै॥ केसन्ध्रोअंगुरीकेवीचमैंदृष्टि
देइकैनंदकुमारकौंनिरषैहै॥किंवा॥नायिकानायिकसौंकहतिहै॥ हेकुमारकचअं
गुरिनविचदैदीठिदैकेहमारीनंदजोहैननंदसोदेषतिहै॥किंवा॥नायकावचनसषी
सौंहमारीजोननदसोकुमारकौंनिरषतिहै॥इहांपर्यायोक्तिअलंकारहै॥मिसिकरि
कारजसाधियेजोहैतिनहिंसुहात॥इहांछलकरिदरसनसाध्यौ॥सषीकीउक्तिसषी
सौंहेतलक्षितापरकिया॥ स्वभावोक्ति॥१॥प्रवर॥पर्यायोक्ति॥प्रताप॥धर्मवाचक
लुप्ता॥७८॥मूलदोहा॥डीठिवरतवांधीअटनिचढिधावतनडरात॥इतउततैंचितदुहु
नकेनटलौंआवतजात॥४७॥सुरतटीका॥प्रश्न॥नटआवतफिरिजाततनहिंजाततसव
नतनवात॥उत्तर॥सनैसनैआवतसुतिहिकदैसुआवतजात॥१॥इहांरसोपमा॥
उपमेयरुउपमानजहवाचकधरमन्नहोय॥एरनउपमांचितनटलौंधावतकमतैं१
लोय॥२॥हरिकविटीका॥टीठहरि॥सषीसौंसषीवचन॥दृष्टिसोइहैवरतनरसरीआ
पनीअपनीअटारीसौंनायिकनायिकानेवांधीहैलगाईहैतापैमनटोरतहै॥कोई
देषनकेदेषिलेइगो॥तासौंनहींडुरतहैं॥इहांउहांपतिकेमनआवतजातहै॥किंवा
दोऊकीदृष्टिभईएकवरत॥तापैएकनटइहांसौंआवतहैं॥दूजोनटउहांसौंजातहै॥।
डीठिवरतइहां रूपकालंकार॥ पूर्वोपमाभीहै॥मनउपमेयनटउपमानलौंवाचकआ
वतजातसाधारनधर्म॥४७॥मूलदोहा॥जरेउदुहूनकेदिगझमकिरुकेनझीनैचीर

25A

हरोलकी फौज हरोल जैसें परत गोल पर भीर ॥ ४८ ॥ सस्तरीका ॥ प्रस्न ॥ कस्यों दुहुनके द्रगन
कौं रुकके न झीने चीर ॥ सो तौ रीति वनैं न दीसतु नैं प्रसन कवि धीर ॥ १ ॥ जो तिय द्रग पट तैं नि
कसि मिले द्रग हि पिय जाय ॥ तौ तिय द्रग हि रुके न ही वनैं न दुहु कौ भाय ॥ २ ॥ सो उ वनैं
न रीति तिय द्रगन रुके इहि मांहि ॥ जिहिको हाय हरोल सो निज दल रोकत नांहि ॥ ३ ॥
जो पिय द्रग घूंघट हि मधि जाय मिले द्रग वाम ॥ तौ पिय द्रग सु रुके न ही पट भिद नहि
दुहुं कौ मन [illegible] हि जो प्रसन्न [illegible] हांज हां इहै ग्रोर सैन ॥ है ही हाय हरोल तहां तिय
पट पिय पहि वनैन ॥ ५ ॥ उत्तर ॥ घूंघट क रिवो हे लइ इहै सु घनल षो कि हुं जाय ॥ तौ ग्रोरन
की डीठि कौ रोकन को सु उपाय ॥ रुके न झीनें चीर मैं यह धुनि निकसी आय ॥ पियके द्र
गन रुके रहे मिले परंतर जाय ॥ ७ ॥ अर्थ सु यो जे रोकियें ते न रुके पट माहि ॥ नव सु मि
ले द्रग दुहुन के इहि विधि रस सरसांहि ॥ ८ ॥ तो पषान सु हरोलकी नांहि न निश्चय रीति ॥
कि हुं ठां होत हरोल है नहि वंधन यों नीत ॥ ९ ॥ वउन पर ता इ कछु महतिय हरोल परजो
गन हौ करैं जा करसि यन कछु इहि विधि अर्थ प्रयोग ॥ १० ॥ इहां द्रष्टांत है ॥ भाव विंव
प्रति विंव कौ द्रष्टांत सु कवि धीर ॥ मिले सु द्रग द्रष्टांत जैंा परत गोल पर भीर ॥ ११ ॥
हरिकवि टीका ॥ नवेहरि ॥ सखी सों सखी वचन ॥ उ समकि कै अर्थ ॥ इहां सिता वीली
जिय ॥ सिता वीक रि दुहुन के नेत्र न्यारे मिले झीने चीर सों रुके नहीं ॥ जैसें हरोलकी धा
री फौज होय तो गोलकी फौज जो है वजी फौज ता पर भीर परै है ॥ नायिका की ग्रोर

बि॰ टी॰
२६
26

चुचुरहरोलहै॥ नायककीओरदूरैलकौननायिकाकीआंषिपानिसाहीफांननायकके
नेत्रदषिनीजानिए॥ हरोलकीरीतिनहीं॥ इहांदृष्टांतअलंकारजानिये॥ नहांएकबा
तमेंएकबातकीछायापरैं॥ भावबिंबप्रतिबिंबकोदृष्टांतसुहैनाम॥ पूर्वानुरागसषीकी
उक्तिसषीसौंतोलछितासाक्षातदरसन॥ दृष्टांतालंकार॥ मूलदोहा॥ लीनेंहूसाहस
सहसकीनेजतनहजार॥ लोयनलोयनसिंधुतनपैरिनपावतपार॥ ७४॥ हरिकविटीका
लीनेंहूइति॥ पहुंताससहितजोरावरीसोसाहस॥ नायिकाकिंवानायककहतहै॥ हजारसा
हसलियेंनाभीकाहूपआवर्ततामैंनहींअटकैंगे॥ जउताआदिसात्विकदृढचितकरिन
हींहोनदेहिंगेएसेहजारजतननकीएभी॥ लोयनजेहैनेत्रसोलायनलावन्यजाहिरूप
मेंप्रतिबिंबपरैसोलावन्यताकोसमुद्रनायककेकिंवा॥ नायिकाकेतननताकोपैरिकै
पारनहींपावतहैं॥ गनककहैहै॥ तासोंपूर्वानुरागजासोंजातहै॥ औत्सुक्यसंचारी॥ लोय
नसिंधुतनरूपकउपमानउपमेयकोअभेद॥ लोयनलोलनजमकालंकारयहकीअनु
वृत्तिसैं॥ उक्तिनायिकाकीकेनायककीगुनकथनतेंपूर्वानुरागऔत्सुक्यसंचारी॥ रूप
क॥ छेकानुप्रास॥ प्रताप॥ जतनअनेककियेंहूपारनपायोविशेषोक्ति॥ ७५॥ मूलदो
हा॥ ऐंचतसीचितवनिचितैंभईओटअलसाय॥ फिरिउझकनिकोंमगनयनिदृगा
निअंगुलाय॥ ७५॥ हरिकविटीका॥ ऐंचतइति॥ नायककीउक्तिसषीसौं॥ ऐंचतिसीमनै
सैंचिलेति॥ ऐसिचितवनिचितैकै॥ अलसायकेकाहूकीओटभईफिरिउझकिवे

26F

कौंके चीहू दषिवेकौं मृगनैंनी नेरगनिकौं लगनि आसक्ति लगाई ॥ फेरि कहूं देषै तौ भ
लौ जैसो नायिका आपनीहू की कतिकहै तौ मृगनैंनी सषीकौ संबोधन जानियै ॥ अभिलाष
संचारी ॥ अलसाइबी अनुभाव ॥ ऐंचलसी ॥ इहां क्रियाके आगें सीवा चकहै ॥ तासौं उक्ते
क्षाम गनयन इहां लुप्तोपमा ॥ उक्ति नायककी गुनकथनतें पूर्वानुराग ॥ परकियासंका
अभिलाष संचारी अलसायवो अनुभाव ॥ रूपक ॥ १ ॥ अमर ॥ नबाब अनुमान ॥ ४ ॥ मोचि
तवनिकौं ग्रैंचिलिपजा मो चाहति मोहि ॥ यातें फिरि वह उत्र कि है यह विचार जियरे
हि ॥ प्रताप ॥ सीवा चकग्रैंचिवो क्रियाके जोगतें उपमा ॥ ४९ ॥ मूलदोहा ॥ हूं घेरे समीप
कौ मानि लेत मन मोद ॥ होत दुहुनके दृगनहीं वतरस हंसी विनोद ॥ ५० ॥ हरिकविटीका ॥ हूं घे
रनि ॥ सषी सौं सषी वचन दंपतेहू रे घरे हूं ॥ समीपको मन मैं मोद आनंद मानि लेत
है ॥ किंवा ॥ हूं रहैं तौ भी घरे समीपको अनि समीपको आनंद मानि लेतहैं ॥ दुहुंनके ने
त्र हीसौं वातनको रस औ हसी ॥ औ विनोद होतहै ॥ तहां हर्ष संचारी परकीया नायि
का विभावना अलंकार ॥ होति छ भांति विभावना कारन विनही काज ॥ हूं रहैं तौ भी
अति समीपकौ मोद ॥ सषीकी सषीसौं ॥ परकीया ॥ दंपतिके हर्षचारी ॥ कटाछि वि
क्षेप अनुभाव ॥ विभावनादीपक ॥ अमर ॥ नवाव ॥ विभावना ॥ प्रताप ॥ होत एं का
क्रियातें तुल्यजोगता ॥ ५० ॥ मूलदोहा ॥ अनिआरे दीरघ दृगनि किती न तरुनि समान ॥
वह चितौन औरै कछू जिहिं वस होत सुजान ॥ ५१ ॥ हरिकविटीका ॥ अनिआरे इति ॥ ना

पिकाकीसत्तिसषीकरैहै॥ अनिआरेनैननसौं दीर्घनैननसौं कि तनीतरु नीलोहिसमान
नहींहैं॥ अर्थयहजोहै॥ किंवा॥ केननीतरु नीसमानसगर्वनहीहैं॥ वहतेरी अनिर्वचनी
यचितौनकहुआरेहै॥ जासौंसुजानप्रवीन॥ नायकवसहोतहै॥ किंवा॥ सुंदरीनरहजा
नजीववसहोतहै॥ इहांव्यतिरेकालंकार॥ औभेदकातिसयोक्ति है॥ व्यतिरेक जुउपमा
नतें॥ उपमेयअधिकोजानि॥ अतिसयोक्ति भेदकवहै यहविधिवरननजान॥ आरैहू
सिकोदेषिवोऔरैयाकीबात॥ अमर॥ इगकरिवहुतियससमलसैपैयहअतिताएक॥
वससुजानकरिवेसुगुनवरयमकहतअनेक॥ १॥ कविनिजप्रश्न॥ सनजोअर्थवरा
वरीसोनवनैइहठौर॥ उत्तर॥ मानसहितचितवनिअरथयहसमुझैकविमोर॥ २॥
प्रस्ताविक॥ भेदकातिसयोक्ति॥ अमर॥ वितरे॥ भेदकातिसयोक्तिहूचारिहूएकसेजा
नियोइहां॥ प्रलाप॥ मानसहितवहचितवनि औरै॥ ५॥ मूलदोहा॥ फलेफरकनलै
फरीपलकरासकरवार॥ करतवचावतविपनयनपायकचायहजार॥ ५२॥ सूरत
टीका॥ प्रश्न॥ पायकघइगवचावहीदुहुंदिसिषेलनमांहि॥ नायकनियाकटाछिकों
सम्सैंवचावननाहि॥ १॥ वहतौचितचाहतनरहतबंकविलोकनिनारि॥ पलकसूदिन
दिलेतजैसेफरीआडुनरवारि॥ २॥ उत्तर॥ नैननिपायकसमकियेदुहुंदिसिअर्थचला
गाय॥ सोसलेषसांतीनिविधिदयेसुकविदरसाय॥ ३॥ इकअभिन्नअर्थसुधसोअव
रभिन्नपदजानि॥ तीजेंसुद्दसलेषविविधिइहअर्थहैमानि॥ ४॥ सोअभिन्नअर्थसुकहै

27A इहकै अर्थ ये हूं ठौर ॥ ज्यों पानी नैं सोभियें षट्ग नन्क सर ओर ॥५॥ सो फूले फरकत इकैं अर्थ
सु पायक नैंन ॥ फरी पलक सु कला हू अरु षट्ग भिन्न पद ग्रैन ॥६॥ करत गहू पद अभ्र
भिन्न करत तदु हूं इक अर्थ ॥ तहां वचावत मैं सु नैंनों सु हू सलेष समर्थ ॥७॥ वेसु वचावत
करत हैं चोट वचावन भाय ॥ एसु वचावत करत है ओरन सौं नल षाय ॥८॥ यातें तीनूं वि
धि नके कहे सलेष बनाय ॥ कवि कोविद ही जानि है अलंकार के भाय ॥९॥ कोऊ कहै न्न दृग
न कौ नहि पायक निरबाहु ॥ पायक ओरन सौं नहीं सु वचावत अवगाहु ॥१०॥ तहां कहि
यें हां था हू को कही साम्यता सोय ॥ भाव साम्यता नहि तहां उदाहरन बहू जोय ॥११॥ सेना
पनिक वि उक्त ॥ मंगन लषि पद देत है दाता सु म सम्मान ॥ तो सां पद इहि भांहू की भई साम्य
ता ज्ञान ॥१२॥ अत्र सेवत कौ नन नैन इहां कोनन के हूं अर्थ ॥ अवन ओर ज्ञ वनत हां सम
ता प्राहू समर्थ ॥१३॥ श्रीरामचंद्रचंद्रिकायां ॥ इस विमानी राज क्रंत विधि सम रूपत है जो
इ ॥ नें हैं कहि एइक कहे सजब वाहून नव विविधि दोइ ॥१४॥ यातें कहे कहू वंश हू साम्य सु श्रेष
इहि विधि याके अर्थ कौं सम्म इति बुद्धि विशेष ॥१५॥ उक्ति सषी की संज्ञा गन श्रृंगार कटा॰
क्षि विक्षेप ॥ अत्र भाव वचाय पाहूल क्षिक ॥ रूपक ॥१॥ श्लेष ॥२॥ रूपक ॥३॥ प्रताप ॥ कार
दीपक ॥४॥ हरिकविटीका ॥ फूले इति ॥ नायिका नायिक कौं देषति है ॥ सो देषि कै सषी सों
सषी कहति है ॥ श्याम हसैं फूले हैं मानो फरकत है ॥ फांदत है ॥ लै को अर्थ लेकरि फरी जो
हाल सो इहै पलक ॥ ओकदात सो है करवाल तरवारि ॥ विय नयन पायक ॥ विय कहिये

दोउके नायक नायिके नैंनसों पायक प्यारे हैं॥ करत बचावत घाय हजार याकौ अर्थ॥ हजार घाव करत है॥ औ बचावत भी हैं॥ आपु घाय पु घायल नहीं होत है॥ यह अर्थ अछो नहीं॥ किंवा॥
हजार घायल करत है॥ बिय कहिये दूसरा तासौं बचावत है॥ जल दीसो इई जे न कोई न देषिले
इ॥ किंवा॥ दोउके नैंन पायक है॥ सो हजार घावकौ करत हैं॥ औ दंपतिकौं बचावत हैं॥ अर्थ यह
जो दंपतिकौं कटाछकी चोट न होय तौ अकुलाय मरै॥ किंवा॥ नेत्रनि पर नेत्रनिके कटाछकी
चोट न होय तौ नेत्र ही अकुलाय मरै॥ तो इफरी षेले है सो आपुकौं बचावत है॥ हर्ष संचारी
कटाछ अनुभाव घाव सबद लछक है॥ घावको अर्थ घाव नहीं॥ नैन सो पायक याते रूप
क॥ ५१॥ मूलदोहा॥ जदपि चवाय नचीकनी चलत चहूं दिसि सैन॥ तदपि न छाडत दुहू-
नके हसी रसीले नैंन॥ ५२॥ सुरतटीका॥ प्रस्न॥ सैंन चवाय भरी चलैं यह तौ कहन सुभा
य॥ प्रस्न चीकनी सैनको अर्थ सु है कि हि भाय॥ १॥ उत्तर॥ जे रूषी इन सों सु हैं तिनकी सैं
न सरोष॥ स्याक हिवैकौ होर हैदु छलगावत दोष॥ २॥ जे चिकनी जुहित लषैं तिनकी सैं
न गनैंन॥ यह अति दिठई दुहूनकी हसी न छाडत नैंन॥ ३॥ इहां तीजी विभावना॥ काज हो
य प्रति बंध जहं होमत छिविभावन जीय॥ बाधक सैंन चवाय छत हसी काज तउ होय॥ ४॥
हरिकविटीका॥ जदपि इति॥ सषी सों सषी वचन॥ जदपि जें भी चवायन निंदानि सहित
बातनि सों चीकनी उप चहूंदिस सों सैन इसारा होत है॥ तौ भी दुहूनिके दंपतिके रसी
ले जे नैंन हैं वे हसी नहीं छाडत है॥ सर्वांग रागाध तिसंचारी हैं नपढतैं परकीयाव्यंग्य

28 विशेषोक्तिअलंकार॥ विशेषोक्ति जो हेतुसेंा कारज उपजत नांहि॥ सैंन हेतुसेंा हंसीको त्या
ग नहीं भयो॥ सषी सषीसेंा॥ दंपतिकैं पूर्वानुराग॥ विसेसोक्ति॥ अमर नबावती सुरीवि
भावना॥ प्रताप॥ छेकाउतरार्थ पूर्वार्थ॥ ब्रत्या॥ ५२॥ मूलदोहा॥ अथनासिकावर्नन॥ जटि
त नीलमनि जगमगाति सीक सुहाई नाक॥ मनों अली चंपककली वसिरसलेत निसां
५३॥ हरिकविटीका॥ अथनासिकावर्नन॥ जटित इति॥ सोंनैंकी सीक उपर चोटी होति है॥ जरा
व जरी होति है॥ नीलमनिसेंा जटित जगमगाति है॥ एसी जो सीक तासेंा नाक सोहाई॥ किं
वा॥ नाक सेंा सीक सोहाई तहां संभावन॥ मानों भोंर चंपाकी कलीपर वसिकै निसंक र
स लेत है॥ सषी नायककी चाह वढावति हैं॥ चले हैं नहीं तासेंा निसांक पद कह्यो॥ वस्तुप्रेक्षा
लंकार॥ सषी नायककी साक्षात दरसन नायिकाकी स्तुति सषीकी तो भी स्तुति॥ उत्प्रे
क्षालंकार॥ २॥ प्रताप॥ छेकानुप्रास॥ ५३॥ मूलदोहा॥ वेधक अनियारे नयन वेधत क
रिन निषेध॥ बरबट वेधत मोहि यो तो नासाको वेध॥ ५४॥ सूरतटीका॥ इहां चतुर्थी विभा
वना है॥ अरु हेतु तैं होय जहं काज विभावन मित॥ वेधनकैा कारन नहीं वेध वेधिपत मि
त॥ ए॥ वार्ता॥ वेधसकारन चाहि॥ नयपहरनको आदि विछुतहावकै समै नायकको
वचन है॥ हरिकविटीका॥ वेधक इति॥ नायककी उक्ति नायकासेंा॥ तीछन नैं [illegible]
कों अनीक हत हैं॥ वरछीकी छुरीको अग्रभाग सो अनी॥ तैसे जाके कोन अनियारे नै
न वेधक हैं॥ सो वेधत है॥ ताकौ तू निषेध मति करै॥ वरचट जोरावरी सों मेरो॥ हियो वेध
त वेधक है॥

तहै॥ तेरी नासिका को वेध॥ अति सौं दर्प अंग्य॥ अभिलाष दसा॥ चौथी विभावना॥ ज
वैं कारन वस्तु तें कारज परगट होत॥ वेधिवे को कारन वेध नही॥ उक्ति नायक की परकिया
प्रति॥ अभिलाष संका संचारी॥ विभावना॥ ४॥ २॥ अमर॥ ४॥ प्रताप॥ लाटानुप्रास॥ ५४॥
मूलदोहा॥ जदपि लौंग ललितौ तऊ तू न पहरि इक आंक॥ सदा संक बढियै रहै रहै चढी
सी नाक॥ ५५॥ सुरतटीका॥ दूहां व्याजस्तुति॥ व्याजस्तुति निंदा विषैं अस्तुति अंग्य विचार॥
नाक चढी सों उर रहै उर इहि करत सम्भार॥ १॥ वार्ता॥ सषी की उक्ति तौ नाक चढिवे मैं मान
को भ्रम होत है॥ लौंग पहरें चढी सी है जात है नाक चढी सगृह्यो वहै॥ हरिकविटीका॥ ज
दपि इति॥ सठ नायक कहत है॥ सापराध देषि नायिका नैं॥ मानकी चेष्टा बनाई है सो देषि कै॥ ज
दपि जो भी लवंग सुन्दर है तोभी तूं एक आंक न पहिरि॥ एक अंक को अर्थ निश्चय न पहरि ल
वंग है॥ कहु ता सौं सदा मान की संका हृदय मैं चढी रहति है॥ स्वभाव ही तैं यह तेरी चढी सी ना
यक है॥ मंह भी ढीवा तें करै निपटक पटजि पज्जानि॥ जाहि न उर अपराध को सठ करि ता
हि वषा[illegible]॥ रसिकप्रिया को लछन॥ लेषालंकार॥ लौंग ललित न कहि दोष दियो॥ गुन मैं
दोष रु दोष मैं गुन कल्पना सु लेष॥ उक्ति नायक की तौ सात्वा तदरसन जो सषी की तो स्तुति
हरिकविटीका॥ २॥ नवाव व्याजस्तुति॥ प्रताप॥ छेकानुप्रास॥ ५५॥ मूलदोहा॥ वेसरि मो
ती दुति झलक परी ओठ पर आय॥ चूनों होय न चतुर तिय क्यौं पट पोंछो जाय॥ ५६॥ सुरतटीका
मूल॥ भ्रमवारी कौं चतुर तिय किम संबोधन सों आहि॥ उतर॥ खंग जिन हांसों भूल मैं कहैं स

29A वरपदचाहि॥१॥इहांभ्रांतापन्हुतिहै॥भ्रांतापन्हुतिग्रोरकीसंकाभ्रांतिनिवार॥चूनैकोभ्र
मह्वैरकियमकतझलकहिचार॥२॥वनरपदतैंयंमिहैकिमूरषहै॥हरिकविटीका॥वे
सरद्युति॥नायिकासाषीसौंउपायकरिकैनायकासौंरतिकरिग्राईहै॥ग्रोठग्रंगोछा
सौंपोंछति॥तहांसषीचूनाकोझलकरिकहतिहै॥वेसरिमातीझलककीद्युतिग्रधरपै
ग्रायपरीहै॥चूनानहींहै॥हेचतुरतियसबवातननैंजानतिहैं॥परसौंकैंयाकरियोंछी
जा॥यौंछिकपोलग्रगोछतिग्रोठग्रमेटतिग्रांषिनिऐंठतिभौंहै॥सुरतांतमैंएसावर्न
नहै॥परकीयानायिका॥पर्यायोक्तिग्रलंकार॥पर्यायोक्तिप्रकारहैकछुरचनासौंवात
जैयांचूनाकेभ्रमसौंनायिकापोंछतिहैतो॥भ्रांत्यापन्हुतिहैंभ्रांतिग्रपन्हुतिवचनसौंभ्रमन
वपरकोजाय॥सषीनायकसूंपरिहास॥भ्रांताग्रपन्हुति॥३॥स्तुति॥भलेकौंसौनौक
हैहैं॥विपरीतिलछिनां॥श्रीप्रताप॥तद्गुन॥५६॥मूलदोहा॥इहहैहीमोतीसुगथत
नथगरबिनिसांक॥जिहिपहिरैंजगद्रगग्रसतलसतहसनसीनाक॥५७॥सुरतटीका॥
प्रस्न॥इहहैहीमोतीकहेतहंग्यारीगथजानि॥ताकोगर्वनसंभवै॥उत्तर॥सुगथसह
मैंमानि॥वार्ता॥सुनीकीप्यारीहूभलीहै॥१॥प्रस्न॥गर्वककहानथमैंभयोकहीनकविको
रीति॥उत्तर॥गरवग्रसमजगद्रगगहतललारथकीनीति॥२॥पुनःप्रस्न॥जगद्रग
ग्रसनसुबचननतैंकुलटारसहनहोय॥उत्तर॥जगद्रगस्यामसुजांनहैंगहिवौतिन
कोजोय॥३॥इहांकाव्यलिंग॥काव्यलिंगसामर्थताजहांद्रढरीतिदिषात॥सुकतनि

वि॰टी॰
३॰
30

वड़ीसमर्थ ताजिन सैंताकलसात॥४॥हरिकविटीका॥इहिहैंहीइति॥नायककोव
चन॥यहजेहूमोतीहैसोईस्रगपुगंथतामहव्यकोसुंदरद्रव्य॥किंवा॥स्रगग्रथसुंदरी
तरहसोंगरथ्योहै॥तासोंहूनथतनिसंकगरवकर॥जिंहितेताहिपहिरेसोंजगाकेर
गकोग्रसेहै॥किंवा॥जगमेंहमारेद्दगकोग्रसतिहै॥ग्रसतिकोअर्थवसकरिवोलछना
सोंजानिए॥औरहसतिसीमानोंहंसैहै॥ऐसीतांकलसैहै॥सषीकीउक्तिमैंजगद्दग
सीकुसमजानिए॥अन्योक्तिमेंभीलगतहैं॥उत्प्रेक्षालंकार॥हसतियहक्रियाहैताके
आगेंसीहैतासों॥५७॥मूलदोहा॥अथश्रवनवर्नन॥लसतसेतसारीढकोतरलतरी
नाकांन॥परयोमनोसुरसरिसलिलरविप्रतिविंवविहान॥५८॥हरिकृतटीका॥श्रव
नवर्नन॥लसतइति॥सषीवहुतनायिकासोंआसक्तजोहैनायकताकोछविसोंललचा
यकैनायिकापासलेजानेकोंचाहतिहै॥हेतरलचंचलअनेकठौरमेफिरततरहतहै॥मैंवा
केएकअंगकीछविवरनतिहौसोसुनो॥सपेदसारीसोंढंप्योतेरोतातरकीवाकेकान
मैंलसतिहै॥सुरसरिगंगाजीतिनकेसलिलजलमैंमनोप्रातकालकोसूर्यताकोप्रति
विंवपर्योहै॥किंवा॥नायकनायिकासोंसुरतकीवातकहतहैं॥नवनायिकामाथो
ढलायकैंनाहिकहतिहै॥तवतरिवनाचंचलहोतहै॥सोदेषिकेसषीसोंसषीकहतिहै
३ होवसनतेहोउक्ता यदसारीमैंतरिवनामेंगंगाजलरविकोतर्क॥उक्तिकविकी॥उ
त्प्रेक्षालंकार॥३॥प्रमान॥छेकावृत्यानुप्रास॥५८॥मूलदोहा॥सुरतिदुराईदुरतनहिप्र

30A

गटकरतरतिरूप॥ छूटैं पीक औरै उठी लाली ओठ अनूप॥ ५४॥ खरगरीका॥ प्रश्न॥ पीक
छुड़ावनकौंकहा अभिप्राय इहि ठौर॥ कहापानन हिषान है तियपियबिनु कहुं और॥ १॥ उ
अधरपान मैं पीक जो छुटा सुहै यह अर्थ॥ रंगसब पियअधरन लियो और रंगसमर्थ॥ २॥
॥ औरप्रश्न॥ छुटी पीक जो पान मैं तौ भ्रू दुरावतिकाहि॥ सब हू दुरावतनहि वनैं वैतौ सहजनहि
आहि॥ ३॥ उत्तर॥ यह पर किया विलास है पान षात पियआय॥ अधर पान कियरंगाल
गोपर्छतयह सोभाय॥ ४॥ क्योंकियहै निजपानको षवो सुतौ वनैं म॥ रसनारदनहि
लालए पानषानविधि हैन॥ ५॥ इहांभेदकातिसयोक्ति॥ भेदकातिसय उक्तिजहं औरैप
दरसतिहेत॥ औरैं लालीओठ यह अधिकाईकहि देत॥ ६॥ हरिकविटीका॥ ओठवर्नन॥
स्वदुतिदुति॥ अन्यसंभोगदुःषिता नायिका वक्रता सौं आदर कहति है॥ हे स्वदुतिहे सं
दविहूती॥ दुराए छुपाए दुरतिहै नहीं॥ तुम्हापने रूपही सैं नायककी रतिनिकौं प्रगटिकर
तिहै॥ सोरूपकहतिहै॥ नायकनैं तेरो अधरपान कियौ है तासैं पीक छूटिगई है और
लालीओठविषै अनूप उठी है॥ किंवा॥ लछितासौं सषीवचन॥ नहांअैसे अर्थ॥ तेरी
स्वदविजोदुति सोदुराए नहि दुरतिहै॥ रतिकेरूपकौं प्रगटकरति॥ औरिवैसैं ही॥ पहि
ला अर्थ मैं स्तुति सो निंदाव्याजस्तुति॥ निंदास्तुति सैं होत जहां स्तुति॥ निंदाकोज्ञान
और पदसौंहूनो पहू मैं अतिसयोक्ति॥ औरै पद जहां दीजियै अधिकाई केहेत॥ अति॥
योक्ति भेद कवहै कहत नसक विसिरनेन॥ सषी सषी सौं सुरतन लछितकी यो है सोकह

वि॰टी॰
३१
31

लिहै॥ नायकाकीउक्तियाअनुभावतेमोहसंचारीतेंपूर्वानुराग॥ स्मृतितैं॥ भेदकाति
सयोक्ति॥३॥प्रताप॥ दुराएतैंनहीदुरतिविसेसोक्ति॥५५॥मूलदोहा॥ ललितस्याम
लीलाललनबढीचिबुकछविदून॥ मधुछाकोमधुकरपर्योमनोगुलावप्रसून
६०॥सुरतटीका॥प्रस्न॥ दूनकहा॥उत्तर॥ एकचिबुककीछविदूनविंदुकीछविउतेत्य
ल्लाहै॥हरिकविटीका॥ललितइति॥ सषीकीउक्तिनायकसों॥ हेललनललितजो
स्यामलीलागोदनाहै॥ तासोंचिबुकमेंदूनीछविचढीहै॥ बढीयहभीपाठहै॥ मधुम
दिरामधुफूलकोरसतासोंछाकोमधुकरभौरासोमानोगुलावकेप्रसूनफूलतामैं
पर्योहै॥ शिवा॥ हेललनयाकेचिबुकसोंदूनीछविचढी॥ औरिठौरमैंजोयाकीछवि
हैसोंदूरहतिहै॥ स्यामलीलामेंचिबुकमेंभौरकीगुलावप्रसूनकीतर्क॥ उत्प्रेक्षाअ
लंकार॥ दूतीनायकप्रति॥ स्तुति॥उत्प्रेक्षा॥३॥श्रीप्रताप॥ अनगन॥ व्रत्या॥ ६१॥मूल
दोहा॥ तोलषिमोमनजोलहीसोगतिकहीनजाति॥ ठोडीगाडगडयातउ, उज्यारहैदिन
राति॥ ६२॥सुरतटीका॥प्रस्न॥ उज्यारहैदिनरैंनिनोगडोपुरनदिहाय॥उत्तर॥ करप
रसैंकिहुंचिबुककोंसोचरहैदिनसोय॥ ॥इहांविरोधाभासहै॥ विरोधाभासविरोधसो
भासेअविरुधगाय॥ गड्यौउजैनहिविरुधइहअविरुधमनकोभाय॥ ॥हरिकविटीका
तोलषिइति॥ साभिलाषनायककोवचननायिकासों॥ तोहिदेषिकेमेरेमनमैंजोग
तिदसालहीहै॥ सोकाहूसोंकहीनजातिहै॥ आश्चर्यहै॥ ठोडीकेगाडमैंबाडमैंपर्योहै

31A तौभी दिनराति उडैबोई रहति है॥ विलास करिवे के॥ अनेक मनोरथ रूप पौन मैं परयौ है॥
विरोधाभास है॥ भासे जहां विरोध सौं वहै विरोधाभास॥ गाइ मैं पर्यौ है तौभी उडौ रहै यह
इ विरोध सौ है॥ नाइक की निज विरह निवेदनां॥ विभावना॥ अमर नवाव विरोधाभास॥
श्रीमनाथ॥ नहिं उडि नेमैं उडिवौ विससो क्ति॥ ८१॥ मूलदोहा॥ डिठौंनां वर्नन॥ दोहा॥ लौं
नैं मुह डीठि न लगै यौं कहि दीनौं ईठ॥ दूनी ह्वै लागन लगी दियैं डिठौंनां डीठि॥ ८२॥ हरि
कविरीका॥ डिठौनावर्णन॥ लौं ने मुष इति॥ वाम मुकुंद के मुष पैं जु सो दाजी की सषी नैं दि
ठौना दियो है॥ सो देषि कें सषी सौं सषी कहति है॥ लावन्य भर्यो जो मुष है तामैं डीठि न लगै
का हू की या तरह कहि कैं ईठ कहि ए हित ताने दियो सो भाव विसेष वही आगें एक गुनी लागे
षी॥ अव दिए है जो डिठौना ता कौं डीठि कहि ए देषि कैं दूनी है या पैं लागिवे लगी डीठि॥ प
द अर्थ॥ डीठि को दूसरो अर्थ॥ किएं पुन रुक्ति दोष न हीं॥ किंवा॥ नायिका के प्रसंग मैं है॥
तहां सषी सौं सषी वचन॥ इहां विषमालंकार है॥ तहां भलो उद्यम कियें॥ है, न बुरो फल आ
य डिठौंना दियो डीठ न लगै॥ दूनी लागन लगी॥ उक्ति नायक की वचन अनुभाव तें अनुरा
ग व्यंगि जो सषी की तौ स्तुति नायिका की तौ रूपगर्विता॥ वक्ता की उक्ति तें व्यंगि॥ दीठि श्ले
ष॥ विभावना विषम॥१॥ विषम॥२॥ प्रमाय॥ दीठि२ नैं लादो॥ ८२॥ मूलदोहा॥ पिय
तिय सौं हसि कैं कह्यौ लषै दिठौना दीन॥ चंदमुषी मुष चंद तैं भलो चंद सम कीन॥ ८३॥
हरिचरनटीका॥ प्रस्न॥ चंदमुषी नहि चाहिये संबोधन इहि ठौर॥ चंदमुषी जो है तिय नौ वि

वि॰ टी॰
३२

यो नये या कह्यो ओर ॥१॥ कोउ कहै अवही भई चंदमुखी यौं नाम ॥ ह्वै तौ चंद्रमुखि मैं कि यै
की शाहू इहि ठाम ॥२॥ दूजो प्रस्न ॥ निंदा मुख की करत ह्यां मैं व चंद समकीन ॥ कह्यो कि निक
लंक की प्रथम भौं अव सोभा हीन ॥३॥ तीजो प्रस्न ॥ नहि ठौं नांव वर्नन कि यो ता की निंदा हो
य ॥ जिन जु खिगारी वदन छवि मसलतीन विधि जोय ॥४॥ उत्तर ॥ चंदमुखी संबोधन के
॥ चंदमुखी कहि कहि चंद जो प्रथम अमल है जानि ॥ पाछैं सकलंकित भयो उहि सम
क ह्यो व षानि ॥५॥ तहां प्रस्न ॥ चंदमुखी के कहत हीं इह चंद हू परतीति ॥ अमल प्रथम मनि
कलंक विधु सो न सहू इहि रीति ॥६॥ और अर्थ करि उत्तर ॥ चंदमुखी जे नायका तिन मुख
तैं वर अमाहि ॥ और चंद हू तैं भलो कि यो चंद को ताहि ॥७॥ अर्थ यह कि उपमेय तैं भलो उ
पमहू तैं जु ॥ सो कैं कीनौं चंद सम किहि सकलंक कहै जु ॥८॥ याही मैं ॥ प्रस्न ॥ जहं उ
स्यो उपमान तैं भलो तहां उपमेय ॥ निहि तैं भलो न चाहियें कहि वो वख्यान भेय ॥९॥ जैसें
न पतैं कहि भलो मंत्री नैं सहु ख्याहि ॥ तैसैं उपमा कहि कैसो उपमेय चहियें नाहि ॥१०॥ उ
त्तर ॥ तहां उपम उपमेय को उ दुहुन अश्रेष्ठता आहि ॥ जहां प्रतीपत हां अश्रेष्ठता उपमेय चाहि ॥११
कै सो है यह चंद जिम तव मुख छवि अति छवि देय ॥ यह प्रतीप तौ ठौर इहि उभिय वर छवि
लय ॥१२॥ यातैं दोउ मतन के लियें दुहुन को नाम ॥ कस्यो सु इहि विधि अर्थ मैं प्रसन नहीं गु
न धाम ॥१३॥ और प्रस्न ॥ जु यह अर्थ इहि विधि करै रीति हीन ता होय ॥ जैसें कसो उदहूं न तैं
भलो वदन यह जोय ॥१४॥ तैसैं स्यो चहियें कस्यो दोउ सम कों कीन ॥ यह रीति न दुहू तैं भ

32A

लै।कौ।इक समक रिलीन॥१५॥ यातैं वननतनअर्थ यह अरु दु मलइहि मांहि॥ मुष निंदा
हू टिठौंनकी निंदा उहूं सरसांहि॥१६॥सिद्धांतअर्थकोउत्तर॥ अवतमइहि विधिअर्थकों स
नहू सकल चित लाय॥ कियाविछितहिहावकीकी नीति यइहिभाय॥१७॥ रिसमैंतिय।
भूषननकी सोभाधरतउठाय॥ सोविछितअंगहीनता दिषवतपियहिरिसाय॥१८॥
निसकहतहै चंदतै तामुषवर दुतिलीन॥ सोइन चितहि रिसायकैं दिषयौ दुतिकरिहीन।
१९॥ तहांपियमुषलषिहसिकह्यो भलो चंदतै आहि॥ कैयां कि चंदसमकीनतैं भई चहत।
हीचाहि॥२०॥ भईचंदसमकीनतउ सोभा सहित अपार॥ यामैं मुषहठिठौंनकी छ विव
रनीनिरधार॥२१॥ काहूसौं कोऊ कहत चंदमषी सुनिवान॥ योपियनेतियसौं कस्योल
षि विछितसरसात॥२२॥ इहांव्यतिरेक है॥ वनैअव नहिनेजहांहै विसेषव्यतिरेक॥ स।
सी अ सोभ स्याम बतैल वमुषसोभ अनेक॥२३॥ भट्टतियअर्थभूमिका॥ दोहा॥ कोऊ।
काहूसौं कहतसौतिसौतिकी बाततवा नैं हि योरिठौंन सोयाको चिमनसुहात॥२४॥ तवइ
नअपनी वलभतियलाहसिकह्यो विचार॥ हे ससिवदनी आजउनकै सो कियो सिंगार
२५॥ जामैं नवहीं अनरंगकियाचहत सुनिषेधन॥ ववीलीसषिविंगषसौं अवनरथ्यो स।
षिभेद॥२६॥ मुषससिनैं वीकोइतौ अवसुभयौ ससिलल॥ सामचिह्नअै सोलगेपाहै कलं
ककोमूल॥२७॥ सौतिचितरहति॥ हरकरैमुहिठौंनकौं तौ सोभाइकजाय॥ औरहुछिया
कौं लगैतौमनवंछितथाय॥२८॥ दृष्टांत॥ जैसैंइकवलवंतहो यहस्योकव चअम... ...॥ वीर

रूपउदिहमानिकेंसत्रुनपायोषेद॥२९॥याकोंकैसेंजीतिवोदेवतसबैसिराय॥जोकदाचि
कोउभिरेंतोनसस्त्रहिगजाय॥३०॥तातेंभेदउपायकैंकाहूकस्योप्रकारि॥सबभरनकैं
एतोजतनकरिवेंलागतगारि॥३१॥सत्रुचितहति॥जोकदाचिल्याइकवचतोभयरूप
मिटाय॥हूजैंभेदसस्त्रहूतोमनवंछितथाय॥३२॥इहांपुनरुक्तवदाभासअलंकारहै॥ए
कशब्दहूद्वैवरहूभिन्नप्रयोजनआहि॥चंदसुषीमुषचंदतेंभलोचंदकहिताहि॥३३॥रू
पिकविटीका॥प्रियनिप्रयइति॥प्रियनेआपनीतियसोंहसिकेंकह्योडिठौनादियेदेषिकै
हेचंद्रमुषीतेरोमुषचंद्रमातेंभलोथोसोतेंडिठौनादेकेंचंद्रमाकोसमानकियो॥डि
ठौनासोंकलंकसमभयो॥इहांप्रश्न॥चंदमुषीतोपहिलेकह्योफेरिचंदसमकोनतेंहो
वनैं॥तहांएसोअर्थकरियेहेमीअनेकार्थमेंलिष्योचंद्रोवुकाम्पयो॥चंद्रनामकपूरवुज
लको॥काम्पकोटीकालिषीप्रणस्यतारीफकरिवेलायक॥भाषामेंचंद्रकोंचंदक
हतहे॥हेचंदमुषीतारीफकरिवेलायकतेरोमुषहै॥आचंद्रमातेंभलोहे॥मुषसो
तूचंद्रकोसमानकियो॥किंवा॥जाकाहूनेनायिकाकोंसृंगारकरिडिठौनादियोहै॥
प्रियनेताहितियसोंहसिकेंकह्योहै॥हेचंदमुषसषी॥यानायिकाकोमुषचंद्रतेंभलो
सोतेंचंद्रमाकोसमकियोचंदमुषीइहांलुप्तोपमावाचकसाधारनधर्मकोलोप॥
किंवा॥हांचंदमुषीसषीयाकोमुषतेंचंद्रमाकोसमनकियोहैतोभीभलोहै॥उपमान
चंद्रतातेंउपमेयमुषमेंभलोकह्यो॥व्यतिरेकअलंकारव्यतिरेकजउपमानतेंउपमे

यज्ञ्रधिकोदेषि॥ साक्षात दरसन व्याहत दूषनकौ निवारन रूपक प्रतीप उपमाकौ सं
कर॥ भ्रमर॥ व्यतिरेक॥ प्रताप॥ तियपिय द्वैका चंद पद ने लार॥ ६३॥ मूलदोहा॥ मुष
वर्नने॥ सूर उदित हू मुदित मन मुष सुषमा की ओर॥ चितै रहत चहुं ओर तें निहच
ल चषन चकोर॥ ६४॥ सूरतटीका॥ प्रस्न॥ चहूं ओर तें मुष लषन पाछै तहां वनैं न॥
उत्तर॥ मुष सुषमा चौगिरद तैं लषि वैं तहां मुषेन॥ इहां भ्रांति अलंकार है॥ भ्रां-
ति सौं औरैं वस्तु मैं औरैं भ्रम जहां होय॥ पोषैं विधु कैं नियम सुष द्वै रहत चकोर सु जोय॥
इति कविटीका॥ सूर उदित इति॥ नायिका की उक्ति सषी सौं होय तौ रूपगर्विता॥ किंवा॥
नायक सौं सषी सौं दर्जक हति है॥ किंवा॥ नायक नारी पक करै है॥ सूर्ज के उगत भी उदि
त मन सौं निश्चै मुष कौं चंद्र ही जानत है॥ तासौं मुष की जो है सुषमा परम सोभा च
हू ओर पसरी॥ ताकी ओर चितै रहत है चहूं ओर सौं निश्चल नेत्र सौं चकोर॥ किंवा॥
मुष सुषमा की ओर॥ मुष जो है सो सुषमा की ओर है अवधि है॥ याकी सी सुषमा
अन्यत्र नहीं ताकौं चितै रहत है चकोर॥ इहां भ्रांति अलंकार है॥ नाइका की तौ रूपगर्वि
ता॥ दूती की तौ हूतत्व नाइक की तौ चन अनुभाव॥ स्मृति संचारी॥ कवि की तौ नाउ के को
वर्नन॥ भ्रांति॥ ३॥ मुष सुषमा चौगिरद तैं॥ श्रीप्रताप॥ मुष सुष द्वैका॥ चकोर तैं भ्रमा
६४॥ मूलदोहा॥ पञ्जा ही तिथि पाइयत वा घर के चहूं पास॥ नित प्रति पून्यौं ही रहै आ
नन ओप उजास॥ ६५॥ सूरतटीका॥ प्रस्न॥ जो निसि कौं पून्यौं लषा [illegible] मान प्रति पदा जा

वि॰टी॰
२४
३४

नि॥ ह्यांही पत्राही विषें तिथि सुनबैनें वषान॥१॥ उत्तर॥ प्रथम कहि प्रतिपद ज्यांन भौ पुनि
एकैं त्रांतिसि देषि॥ सब दिन पून्यौंजान हीं तिथि पत्राही लेषि॥२॥ इहां परिसंख्या है॥ परि
संख्या सु निषेध करि विधि इक थल ठहराय॥ पत्राही तिथि स्यांन हीं लषियत प्रगट
तभाय॥३॥ हरिकबिटीका॥ पत्राही इति॥ सषी नायक सौं हसि कै कहति है॥ और ठौर तौ पत्रा
मैं तिथि पाए है जानिए है॥ वा नायिका के घर के चहूंओर निति प्रति सदा पून्यौं ही मासी
रहति है॥ आननको जो है आप चमत्कार विसेष ताके उजास सौं॥ जो कोई कहै उजास तो ए
कठौर होत है घर के चहूंओर एकौ कौंन बिधि॥ ए सौं कोउ चंद उगै है वा गमें वन मैं छाया रह
ति है तौ भी उजास होत है॥ किंवा॥ नायक औरि नायिका के पास सौं रात्रि मैं आयो है॥ नायिका
क्रोध सौं दीया नहीं बाल्यौ है॥ सो देषि कै नायक ने कह्यौ है॥ अंधेरा घर कौ घर मैं अमावस
कौ वस पर राष्यौ है॥ तब षंडिता की उक्ति नायक सौं॥ पत्राही याकौ ग्रंथ कहमारो ही॥ कहिए॥
हृदय ही पत्रा है॥ तामें तिथि जानि जाति है॥ वा घर के चहूंपास॥ वा जो तुमारो घर है॥ जहां सौं त
मुख आवत है॥ किंवा॥ घर कहिए लुगाई॥ ए सौं आछो कहै ग्रह को नाम ग्रहन वहो॥ गृहिनी को॥
नाम ग्रह है॥ ताके चहूंपास चहूंओर निति प्रति पून्यौं रहति है॥ आननके आपके उजास सौं
आनन को उजास नहीं॥ कह्यौ आपको उजास कह्यो तासौं यह जांनिए वाके आनन मैं तो उ
जास नहीं है॥ तुमारे प्रीति की षुसी सौं जो है आप ताके उजास सौं पून्यौं रहति है॥ पहिला
ग्रंथ मैं परिसंख्या [illegible]॥ परिसंख्या इक थल बरजि है जे थल ठहराय॥ औ तिठौरि प

34A

आमैं निषिधपाइए है॥ इहां नहीं॥ इहां एसोंर हतिहै॥ जो उपपतिकी वचन अनुभाव स्मृति
संचारी॥ हूती नो हूतव॥ वक्रकी उक्ति तै पर संषा॥ ३॥ श्रीमता पछेकानुप्रास॥ ६५॥
मलादेहा॥ मेहदी वर्नन॥ गडे वडे छ्वि छाक छकि छिगुनी छोर छुटैंन॥ रहै सुरंग रंग रंगि
उहि नहदी मेहदी नैन॥ ६६॥ सुरतटीका॥ प्रश्न वडे छ्वि नहि वैन कहन वडी छवि छा
हि॥ उतर छ्विके छाक जे वडे तिन हि कहि चाहि॥ १॥ वाको॥ दुतिय प्रस॥ एक रंग सा बहु
अधिक है॥ उतर॥ महदी कौ रंग हस्यो है ता मैं नहीं॥ वाके सुरंग रंग रंग मैं रंगे है॥ इहां छेका
नुप्रास॥ लाटानुप्रास॥ वृत्यानुप्रास॥ संकर है॥ छेकानुप्रास गडे वडे नहदी मेहदी और॥ रं
ग रंग लाटा सु वृति विधि वर्न मित्र ना ठौर॥ २॥ लक्ष्मोत्प्रेक्षा मानों वाही रंग मैं रंगे है॥ षंडि
ता की सषी सौं नायक के वचन॥ मेरे नेत्र तेरी ही नायका की मेहदी सु रंग रंगि रहे हैं॥ या अ
र्थ मैं व्याजोक्ति और कछु कहि आकार दुरावे॥ हरि कवि टीका॥ अथ मेहदी वर्नन॥
नायक सषी सौं कहत है॥ वडे जो छ्विके छाक मतता॥ तासौं छकि कै॥ मतवारे ये
हमारे नैन छिगुनी कनिष्टा अंगुरी ताके छोर अग्र भाग तामें॥ गडे है॥ कहि एल गे
है॥ छूटत नहीं है॥ कनिष्ट अंगुरिया के जो नषता की जो मिहदी ताको सुरंग सुंदर रंग॥
उहीकहि येश्रा ही सौं रंगि रहे हैं॥ नह की तहां पंजाबी भाषा मैं नहदी कहत हैं॥ सुरंग को अ
र्थ लाल न ही कि या मेहदी को रंग तौ लाल ही है॥ गडे वडे छेकानुप्रास रंग रंग इहां ज
मक मानो वाही रंग मैं रंगि रहे है॥ लक्ष्मोत्प्रेक्षा॥ ६६॥ मलादेहा॥ कुच वर्नन॥ चलन

नपइयतनिगममगजगउपजोअतित्रास॥ कुचउतंगगिरवरगयोमैंनामैंनम
वास॥ ६७॥ सूरतटीका॥ प्रस्न॥ अभिमायअतित्रासकोकहोकहाइहिमाहि॥ उत्तर॥
इकनचलनवसहरतवियमगसुनिगमसुधिनांहि॥ २॥ वार्ता॥ निगमकोअर्थजा
मार्गकीववरिनपरे॥ मैंनपदमैंनिगमवेदमैंनत्रासअति योंभयोउलहतकुच
हैत्रास॥ अवउतंगकुचमैंनहै यातेअतिपरकास॥ ३॥ इहांमैंनअरु मैंनांकोरूपकहै॥
हरिकविटीका॥ कुचवर्नन॥ चलनइति॥ कविकीउक्ति॥ निगमवेद॥ अेामगराहसो
नहीचलनपावतहै॥ किंवा॥ वेदकोकह्योपथहै सोनहीचलनपावतहै॥ परस्त्रीको
निषेधआदि॥ जहांवेदमर्जादउठैहै तासोंजगतमैंअतित्रासउपजैगोहै॥ कुचसोइउं
चोपदहसुहै॥ ताकोमैंन जोकामसोहैमैं नाकोलभिल्लकोभेदमैंना॥ ताकोमवासजा
निगयैाहै॥ उंगीमजोस्थानसोमवास॥ इहांउपमानउपमेयकेअभेदसोरूपकअ
लंकार॥ ववनअनु॥ रूपक॥ ३॥ [illegible]॥ मैंनामैंनएकवाचकानुप्रवेससंकर॥
रूपकअेाअनुप्रास॥ ६७॥ कहिवर्नन॥ मूलदोहा॥ ज्यैांज्यैांजोबनजेठदिनकुचमित
अतिअधिकात॥ त्यैांत्यैांछिनछिनकटिछिपा छीनपरतनितजात॥ ६८॥ सूरतटीका
प्रस्न॥ अतिअधिकानसुअतिकहा॥ उत्तर॥ येदिनअतिअधिकाततीसघरीतैंव
हनतवअतिअधिकानविधान॥ १॥ कुचअनुधाअधिकानमधिजोबनअतिअधिकान
सोहीकटिकीघटनिहै जानिलीजियैबात॥ २॥ इहांताइरूपरूपकालंकारहै॥ जोबनजे

35A

ठसत्कुचसदिनकटिसछिपाइदिभाय॥रूपकहैतद्रूपअंशा समञ्ज ऊहूकविकविराय॥२
हरिकविटीका॥कटिकवर्नन॥ज्यौंज्यौंजोवनइति॥सखीनायकसौंकहतिहै॥जोव
नअंगजेठकोदिननासैकुचऔमितिदिनप्रमांनकुचऔमितिजैसेंजैसेंअतिअधिकाति
हैतैसतैरीसोंवदृतचढतिहै॥सौंमैंतातोहीतरहींछिनछिनकटिसोहैछपावतिसोनिति
छीनपरतीजाततहै॥इहांरूपक॥हैरूपकहैभांतिकेमिलितनरूपअभेद॥उक्तिसखीकीअ
वरकाव्य॥लक्षितजोबनं॥तद्रूपरूपक॥३॥श्रीप्रताप॥कलपितउपमानउपेयसौ
दीपक॥छेकारतेवसा॥६८॥नितंबवर्नन॥मूलदोहा॥लगीअवनलगीसीचकटिकरी
षरीविधिषीन॥कियेमनौंवैंहीकसरकुचनितंबअतिपीन॥६९॥[illegible]॥
षरीषीनकहातहद्दहनौंजिदिसकसरकैांपाय॥उत्तर॥हैवसतैअतिपीनौंकियेषरोई।
नइहिभाय॥१॥इहांहेतुप्रेक्षा॥ऐसौंजानिये॥उक्तिसखीकीसखीसौंतौवितर्कसचा
री॥वचनअनुभाव॥उत्प्रेक्षा॥२॥प्रताप॥छेका[illegible]भाषा॥जंघवर्नन॥मूलदोहा॥जंघ।
जुगललोयननिरेकरमनौंविधिमैंन॥केलितरुनदुहूँनएकेलितरुनदुषदेंन॥७०॥
मूलनटीका॥प्रश्न॥कदलिजंघुतैंउलटगति॥कौंतिनदुषदसबैंन॥उत्तर॥केलिमांहि
विधिकेलिनवकेलितरुनदुषदेंन॥१॥इहांबस्तूत्प्रेक्षाअगरजमकहै॥मनौंनिरेनि।
लोयनकरेवस्तूत्प्रेक्षासोय॥केलितरुनपदहैजमकअलंकारविविजोय॥१॥हरिकवि
टीका॥जंघावर्णन॥जंघइति॥सखीवचननायकसोंमैंनजोकामसोमानेंविधाता

वि॰ टी॰
३६

36

है॥ यानायिकाके जो अंजन जुगलहोउ जेंयासोलोयनलाजवस निरेकेवललाजवसही
सो करे हैं॥ कैसे हैं के लिके राताके जेतरुश्लता कों दुषदेनवाले हैं॥ आपनी सोभाक
रिवाके तिरस्कार करनवाले हैं वाके दुष्ट है रतिस मयविषें केतोकोष्ठं भकी आकृति हो
ति है॥ हेतरुन के लिसमैं विषरूपदेनवाले हैं तरुन संबोधन नकरै॥ तोनायिकासा
मान्य होय॥ इहां वलउत्प्रेक्षा॥ औ जमक॥ निरेलोयनवसलके लितरुनके लितरुन ज
मक॥ जमक सब्दको फिरि श्रवन अर्थ जुदो सो जानि॥ केराके दुषदेनवारे यातें अर्थी उ
पमा॥ उक्ति सषीकी नायक सौं परिहास॥ उत्प्रेक्षा जमक॥ ३॥ प्रताप॥ रूपक॥ मुरवा
... ...नैन॥ मूलदोहा॥ कियहायलचितचायलगिवजिपायल तव
... ... है॥ ... ... पुनि मुनि सुनि मुष मधुर धुनि कौंनलाललल चाय॥ ७१॥ सवनहीका॥ मू
इहां चायलगि सब्द यह मन मिलि अर्थ दिषात॥ उतर॥ तहां पहली ही प्रीतिमैं सषी क
हत यौं बात॥ १॥ कियहायलचितसमजितपायलधुनिहीस्याम॥ मुष पुनि सुनि लल
चैन क्यौं तह चायल गिवास॥ २॥ प्रश्न॥ पायल कौ धुनि सुनि भए हायल चित जय
वैन॥ तो चहियैं मुष पुनि सुनत मर कललल चव नैंन॥ ३॥ उतर॥ सोरठा॥ पायल
हायल कीन॥ मुष पुनि सुनि क्यौं होय नहि॥ यातैं कहत प्रवीन क्यौं न लालसौ लल च
है॥ ४॥ कौंन पदहे हरी ही एक है॥ काव्य लिंग॥ काव्यलिंग यातें जहां सामर्थन हदम
णे॥ हायलललल चत क्यौंन जह मधुर मुषधुनि सु समर्थ॥ ५॥ हरिविरीका॥ पायलव

36A

लेन॥ क्रियइति॥ नायिकासेंसखीवच॥ चितकाचावसेंलखिकेमनकोरोचकतहारेपा
वमेंनूपुरवजिकै नायककोंमिलनकीउतकंठावढीवासेंहायलगरूछितकियो॥ सखीक
हैहैं हे सखिधुनितें सुनि॥ कोईसमयमेंतेरेमुषकीमधुरधुनिसुनिकैंक्योंनहींलालल
चाय॥ इहांसुनिसुनिपदकीआवृतिहै॥ तासेंआवृतिदीपक॥ पदआवृतअरथदुहूंनकीआ
वृतिदीपकमानि॥ अन्निसखीकीनायकाप्रेमगर्विता॥ काव्यलिंगप्रश्नोत्तरालंकार॥२॥
३॥ प्रताप॥ वीप्सावृत्ता॥ ७१॥ अनवटवर्नन॥ मूलदोहा॥ सोहतगोंठापायकेअनवटज
ड्योजराय॥ जीत्योतरवनिदुतिसुहरिपत्योतरनिमनुपाय॥ ७२॥ सुरतरीका॥ प्रश्न॥
इहांएकअनवटसुकैसोंनहिकछुवेठनजुक्त॥ उत्तर॥ तहांकहियेंइकजिनसतेंहोतदु
हूनकीउक्ति॥१॥ प्रश्न॥ जोदोऊतोरविसुइकयामेंप्रसरहोत॥ उत्तर॥ तहांअर्थअधोगइ
कअनवटशिवाविख्यात॥२॥ इहांहेतुत्प्रेक्षा॥ हेतनतरवनिदुतितेजीत्योपुनियादोहा
कैंपरमार्थपदतकहियेहै॥ कोऊकहतजुसिष्यसोंऐसोमनतिहिमार॥ जीत्योमनजु
कहावईवहिंगतिमनतूधार॥३॥ अर्थविधि॥ ऐसोमनसोहतकहासोतूमारकुवार॥ ये
तूठामैपायकैंअनवटअसमनुवार॥१॥ जत्योअपनपौजारिवहूअवजीत्योसुनताहि॥ त
रवनिदुतिज्योहरिपत्योहूकनगतिलहिजाहि॥२॥ ज्योंज्योंफलैनवेससौतरनितरैकौ
भाव॥ सोअवनजीत्योपायतूयावातहिकरिचाव॥३॥ इहांदृष्टांत॥ तरवनकीसीभांतिमन
हरिपत्योयामें॥ हरिकविटीका॥ अनवटवर्नन॥ सोहतइति॥ नायकसेंसखीवचनसें

बि॰टी॰ ३८

हन अंगरूठा पाइकैं ॥ अंगूठाको प्राम होयकै अनवट ॥ अंगूठाको भूषन सोहत है ॥ जराव
सौ जस्यो है ॥ जो पावके अंगूठा मैं ऐसौ अर्थ करिए तौ अनवट तौ पावहीके अंगूठाको भू
षन है ॥ सु हार जो तरिवन कर्नभूषन ता नैं द्युति सौं जीत्यो है ॥ तरनि रवि ताकौं ॥ तरनि
हारिकै मानौं पावमैं पर्यो है ॥ रवि एक है ता सौं अनवट मैं तरिवन मैं जाति पक्ष सौं एक
वचन कियो ॥ अर्थ यह एक हीनैं जीति लियो ॥ यह दोहा सातसैं लगायो रोषै चौलगै चम
त्कार नहीं भासै ॥ इहां हेतु उत्प्रेक्षा है ॥ तरवननैं जीत्यो यह हेतु ॥ परमार्थ पक्षिकौं अर्थ ॥ (
कोऊ कहत जु सिष्यकौं ऐसो मन न मारि ॥ जीत्यौ मन जु कहावई उद्दिगनि तू मन धावि
३ ॥ ऐसो मन होइ तु कहा सो तू मारि कुवार ॥ अंगमै ठौ जो पाइकै अनवट ऐसम सज्वार ॥
॥ ४ ॥ जसैत्यो अपुन पौ जारि वह्नि अव जीत्यो तू निचाहि ॥ तरवनि जैं हरिकैं परयौ वचन ति
लई जाहि ॥ ५ ॥ जो जैसो फल लैंन वैसजैसौ नरह्यितन देकौ भाउ ॥ सो मन जीत्यो पाइ तू पावा त
हि कविचाउ ॥ ६ ॥ [illegible]जाय ॥ जैसौ जंगाएकौका ॥ ७२ ॥ बसनभूषनवर्ननं ॥ मूल दोहा ॥
इयतन कुच विच कंचुकी चुपरी साटी सेत ॥ कवियांकनके अर्थलौं प्रगट दिषाई देत ॥ ७३
सवनटीका ॥ पूर्णोपमा ॥ कामधिउ पमान है ॥ कुच उपमेय सज्जान ॥ लौ वाचक दीस
न परम पर न उपमा मान ॥ १ ॥ धर्म ॥ अलंकार उपमा यहोइ ही अर्थ परमानि ॥ सो
तौ अर्थ न संभवै यह प्रस्न बुधिवान ॥ २ ॥ कवियांकनके जो अक्षर प्रगट परेई होय ॥ तौ
टीका कादे करैं वडे ग्रंथ सब जोय ॥ ३ ॥ उत्तर ॥ कवियांकनके अर्थ सब कविकौं भासै जो

37A

ति॥ सोउंकुचविचकंचुकीसबगुननजानैंजान॥ ७॥ दृष्टांतहै दृष्टांतसुयातेकहेउसमरु
द्ध उत्तरसमर्थ॥ दुरननकुचविचकंचुकीसोंआकनकोअर्थ॥ ५॥ हरिकविटीका॥ दुरनिन
इति॥ सखीवचननायकसों॥ वाकेकुचकंचुकीचोलीताकेबीचमेंदुरनछपननंहीहै॥
एसोस्तनकोप्रकासहै॥ कैसीहै चुपरीहै सोंधालगाइहै॥ सादीहैजामेंकसीदाछापान।
हीहै॥ फटिरहततहै॥ कविकेआकनिकेअक्षरनिकेअर्थसेप्रगटजाहिरदेषाईदेतहै॥ तरन
अर्थभासेसोतोदोषहै॥ नैषधकिरातकोअर्थसबकोंतरननहीभासैहै॥ तहांऐसेंजानि
येकविनकोंआकनिकेअर्थजैसेप्रगटदेषाईदेतहै॥ तैसेकुचदेषाईदेतहै॥ पहिलाअर्थ
मेंपूर्णोपमा॥ अरथउपमानकुचउपमेय॥ लोवाचकदेषाइदेतसाधारनधर्म्म॥ दूसरा
अर्थमेंदृष्टांत॥ क्रिया॥ कविकेआकनिकेअर्थलोहैतोप्रगटसाफहै॥ औरनिकोंदेषाइ
देतहै॥ देषाईहेतशब्दध्यारादर्सनकोंकहतहै॥

मूलदोहा॥ भूषनपहिरनकनककेकहिआवतइहिंहेत॥ दरपनकेसेमोरचेदेहदिषाईं
देत॥ ७४॥ हरिकविटीका॥ भूषनइति॥ सखीवचननायिकासोंभूषनतूंकनककेपहिरति
है॥ यहवातकोसोंहेतसोंप्यारसोंकहिवेमेंआवतिहै॥ भूषनपहिरनकनककेयहभी
पाठहै॥ कनककेभूषननमतिपहिरैएभीजानिए॥ तेरेदेहमेंभूषनदरपनकेमोर
चासेदेषाईदेतहै॥ यहमतिजानैजोसखीनिंदाकरतिहमारेअंगविषैसोभतनहींहैसो

भिटी-
रस
38

नंही॥ तेरी देहकी सोभा मानै भूषन मैलो करत है॥विषमालंकार॥ औरि भलो उदि मकिये होत बुरो फल आय॥ उक्ति सषी की है नायक की तास्त॥ विषमालंकार॥३॥ प्रनाय॥ काव्यलिंग॥ ७४॥ मूलदोहा॥ मानदु विधि तनअच्छ छवि स्वछ राषिवे काज॥ दृगपगपौछनकौं किये भूषन पायंदाज॥ ७५॥ सूरतटीका॥ मूल॥ भूषन लषअंगनन लषैं इहकछु नहि निरधार॥ अरुसक कपोलादिकन पैं नहि भूषन परकार॥१॥ उत्तर॥ जे नर वरतिनका जनहि पायंदाज विचार॥ अवर नरनके काज जिन पगपूंछन परकार॥२॥ तैसे जे दुतिर सिकतेलषत न भूषन साज॥ जिनकी हचि भूषनति मैं तिनहित पायंदाज॥३॥ उनहीके दृगमलिन जे धरत भूषन निरषि॥ रसिकतेनरवर अमल दृग जानत सव विधि स्टष्टि॥ फल उत्प्रेक्षा अ४॥ इहांफलोत्प्रेक्षा है॥ तनछवि स्वछ रहे इहीं फलनिमित इह काज॥ हरिकविटीका॥ मानदूरसि॥ सषीवचन॥ नायिकामें॥ सिधपहनहि सिधपायंदाज॥ ५॥ विधि विधाता ने याके तनकी जोअच्छी छवि है ताकों स्वछ निर्मल सौंदर्य की स्क तिक रै है॥ विधि विधाता ने याके तनकी जो अच्छी छवि है ताकौं पौछनेकौं भूषन सो पायंदाज करे हैं॥ राषिवे के लिये मानौं दृग जे हैं ने त्रताके पगताकौं पौंछनेकौं भूषन सो वाको सोभा वदति है। मानौं स पूर्नवाक्यमें एह ध्वनि॥ वाके अंगअंगप्रति सुंदर है॥ भूषन सो वाकौ सोभा होवै है॥ जो। सानहीं॥ ति छवौं नाके नजीक पाय यौंहि वेकों विछौंना र है॥ सो पायंदाज कहावै है तौ सा ऐसो अर्थ करै॥ नी चलोगकी दृष्टि भूषन पै परति है॥ ताके पाव पौंछिवेकौं करे हैं तौ सा वही है॥ संभावना नहीं वनै उत्प्रेक्षा अलंकार नहीं होय फेरि दृष्टिकौं पावठ दूरावे नो

38A चाहिए॥ तामें धरि लागी वह रावनी चाहिए॥ मानों एवं बाहू मैं उन्नरा ईमै लगाइए॥ क्रियाकों
आरोप मानों को अनवयतैं अनुक्तास्पद वस्तु उत्प्रेक्षा भेद यापायरा जहूपक॥ उत्प्रेक्षा संभा
वना वस्तु हेतु फल लेषि॥ वस्तु द्विविध उक्तास्पद अनुक्तास्पद पेषि॥ हेतु रु फल सिद्धास्पद
असिद्धास्पद मानि॥ पृथक पृथक इहिं भाँति ह्वो उत्प्रेक्षा पद चानि॥ उक्ति सषी की के नायक
की तो स्तुति अवरकाव्य॥ उत्प्रेक्षा॥ ३॥ प्रताप॥ संबंधातिसयोक्ति॥ ७५॥ मूलदोहा॥ सो
नजुही सी जगमगै अंग अंग जोवन जोति॥ सुरंग कसूंभी कंचुकी दुरंग देह दुति होति॥ ७६॥
हरिकविटीका॥ सोनजुहीइति॥ सषी वचन नायका सों॥ वाके अंग अंग के विषै जोवन की
जोति सोनजुही पीत चंवेली सी जगमगै है॥ किंवा॥ अंग विषै जो है जोवन ज्यो जोति तासों।
नायिका सोनजुही सी जगमगाति है॥ सुरंग है रंग जाको एसी जो कुसुंभी के रंग सों रंगी चो
ली ताके प्रतिबिंब सों देह की दुति दोय॥ रंग होति है॥ पीत॥ लाल॥ किंवा॥ देह की दुति सों
कंचुकी दुरंग होति है॥ अंग जोति उपमेय॥ सोनजुही उपमान॥ सी वाचक॥ जगमगिवो ध
र्म॥

मूलदोहा॥ लसै मुरासा तिय श्रवन यौं मुक्तन दुति पाय॥ मानों परस कपोल के रहे स्वेद
कन छाय॥ ७८॥ हरिकविटीका॥ लसैइति॥ सषी वचन किंवा॥ नायक वचन नायिका।
सों॥ हे तिय तेरे श्रवन मैं कान मैं मुरासा जराऊ ताकी जाति एहीन पद हूष न विहारी को दो
हा नहीं॥ यौं या तरह लसै है सोहै है॥ मानौ कपोल के परस सों भयो स्वेद रूप मो तिकना

कीकनीसैं ह्वापर झ्रो है मकता सो स्वेद विंदु ॥ परसहेत ॥ स्वेदकी संभावना हेतु उत्प्रेक्षा ॥
सखीकी उक्ति परिहास ॥ जउ कैसा वक हेतु उत्प्रेक्षा ॥ श्री प्रताप ॥ कवि प्रौढ़ोक्ति ॥ नवा
व ॥ मूरासा कर्णाभर्णजडाऊ ॥ ७६ ॥ मूलदोहा ॥ मालतहै नट मालसी कैंधौं हूं निकसत
नांहि ॥ मनमथ नेजा नोंकसी खुभी खुभी जियमांहि ॥ ७७ ॥ सुरतटीका ॥ प्रस्न ॥ मनमथ अ
युधसर प्रसिध नेजा नहिं न बखान ॥ उत्तर ॥ मनकौ मथियैं जेचु भी नेजा नोंक समान ॥ २ ॥
पूर्णोपमा ॥ खुभी नेजा नोक सी खुभी ॥ हरिकबिटीका ॥ सालई नेइनि ॥ नायिका सों दूतीव
चन ॥ नायक कीरूकी कनि सखी कहति है ॥ खुभी खुभी जियमांहि ॥ खुभी जो तेरा करन भूषन सो
नायक के जीव मैं खुभी है गडी है ॥ अंगामैं टूट्यो तौ रसो नटसाल ॥ नटसाल सी साल तिहै ॥ को
ई तरह निकरति है नाही ॥ कैसी है मनमथ का मनताको जो नेजा ताकी नोक अग्रभाग सी है ॥
[illegible] प्रसिद्ध है नेजा प्रसिद्ध नाहीं ॥ प्रसिद्ध विरुद्ध दोष है ॥ नौंग्रे सो अप्रसिद्ध
छिका ॥ मनमथ कौ बान प्रसिद्ध है नेजा प्रसिद्ध नाहीं ॥ ... नेजा ताकी नोक सी ॥ पूर्णोपमा ॥ उपपत्ति उ
त्प्रेक्षा नियै ॥ मनकौ मथै पीड़ा दे हुए सो जो को उ नेजा ताकी नोक सी ॥ पूर्णोपमा ॥ उपपत्ति उ
क्ति ॥ वचन अनुभाव तें स्मृति संचारी उत्प्रेक्षा ॥ मनकौ मथि वे वारो काऊ नेजा ॥ पूरन उप
मा ॥ २ ॥ श्री प्रताप ॥ खुभी खुभी औ साल साल ॥ जमक ॥ ७७ ॥ मूलदोहा ॥ अजौं न स्यो नो
हीं रह्यो श्रुति सेवत इक अंगि ॥ नाक बास बेसरि लह्यो बसि मुकतनि के संग ॥ ७८ ॥ सुरतटी
का ॥ प्रस्न ॥ इहां श्रवण कीन्ह नता मुक्तनिको परभाव ॥ अंग ताकी अंगता तैं पिछता चहिये बर्न
न भाव ॥ ॥ पुनः प्रस्न ॥ श्रुति संग पायो नाम है मुकतनि के संग बास ॥ यहु अस मंजस ए

39 R

कविधिलाभनहींपरकास॥२॥पुनःप्रस्न॥अजैंतसेंतोनांहींरह्योकहासदैहैअैार॥प
न्ननवर्ननप्रस्नत्रयसवैनांसकविस्मिरमोर॥३॥उत्तर॥तहांकहतपदसर्वनिकोजमसंगति
तससनाम॥जिनस्मृतिसेयोनामतिहिलख्योतहैांनोठाम॥४॥सुवदतसोंनापात्रहुकजा
परराखतधार॥तेरेंरहतसवपात्रकेनामकर्मग्रथदार॥५॥नाकवासवसिपदलख्यो।
वेसरअसमसमर्थ॥अहस्तुकतनकेसंगहैजामैंजोहसअर्थ॥६॥इहांश्रवनकीनन्नता।
नासाकोपरभाव॥यामैंअंगतैंअंगवरवरनतउत्तरभाव॥७॥वार्ता॥एवनैंनामलख्यो॥
एकनैंनामलख्यो॥याकोउत्तर॥हजोउत्तरउनिलख्योनामतहैांनामोय॥उनवेसरना॥
मदिलख्योजाकीसरनहिकोय॥८॥तीसोउत्तरअोपदको॥पहमसुर्वनजबलगिश्रवन
नवललगितरवननाम॥अजैंरख्योपानैंकरख्योतीजोउत्तरठा॥९॥[illegible]॥लहैदोष
तैंदोषइकगुनतैंगुनउल्लास॥स्मृतिसंगलख्योतरौनपदवेसरनाकसंवास॥१०॥एकमा
र्थपदसमर्थ॥परमारथकेपदमैंअर्थसुद्धिविधिजानि॥वेदपाठमैसाधकोसंगसुवर
करिमानि॥११॥सुवदनसोनांहीसुजिनिस्मृतिसेयोहुकअंग॥मुकनसुसाभसुसंगतिन
लख्योनाकदिवसंग॥१२॥प्रस्न॥सुनैंअवणवेदकीकरनीनांहिनजोग॥सवैपदारथला
भकोवेदहिनैसंजोग॥१३॥उत्तर॥वेदअर्थसमुझ्योनकछुनहीमननकोभेव॥इहांकहैा
इकअंगनाकहापाठमात्रस्मृतिसेव॥१४॥प्रस्न॥पाठहूकीनहिचाहियेकरीअवज्ञाजोय॥
उत्तर॥अजैांनसह्योनांहीइहांइहधुनितरिहैसोय॥१५॥पुनःप्रस्न॥मुकननिकोसंगपा

यहैं मुकतनचाहिये सोय ॥ इहां नाक वास हिलसै प्रसन्न इहां ह्वै सोय ॥ ८६ ॥ उत्तर ॥ मुकतनि
के संगमैं वसो कहतीरथन न्हात ॥ संभाषन रहु कृपा नहिं संगफल कह्यो विख्यात ॥ ८७ ॥ प्र
श्न ॥ संगजु कौ फलतु छ केैं ॥ उत्तर ॥ इहां इह उतरजोय ॥ सुरगहु मैं वसरलस्यौ वासजि
हिन सम काम ॥ ८८ ॥ यामैं उहला सही है ॥ हरिकविटीका ॥ अजैं नरैं नांही इनि ॥ नायिका
नायिकरतिकरै है ॥ सोदेखि प्रियन मैं सखीसौं ॥ प्रियन मैं सखी कहति है ॥ है अंगअंग अंग तु लल
सखी अजैं तक्षौ नांही रस्यौ है ॥ श्रुति सेवतइ कएक श्रुतिकों सेवत ॥ एककानमैं तरकी र
हिगई है ॥ अैा विभूषन छाडि दियेरै है ॥ नाक मैं वास स्थितिवेसरि पायौ है ॥ वसिमुकुतनिके
संग ॥ मकु ताके संग मैं वासकैं ॥ जामै मोतीगन लगे हैं ॥ सखी दिखायकैं कहति है प्रसन्न श्ले
लंकार ॥ किंवा ॥ जीवन्मुक्त जे हैं भक्त तिनकी प्रसंसा गुरु सिष्य सो कहै है ॥ अजो अव भी तूं न
हीतस्यौ ॥ रस्यौ श्रुति सेवतइ कअंग ॥ अंगतरह एकतरह सौं श्रुति वेदकों सेवत रस्यौ ॥ किं
वा ॥ एक अंग विषैं श्रुतिकों सेवतरस्यौ ॥ वाममार्ग भी श्रुतिमैं कह्यौ है ॥ अकनामदुष
को अकनाम पापको स्वर्गमै दै मनिसैं दुषक ईवास होत है ॥ नाही है अक दुःष जा विषैं ने
अैसो जो नाक वैकुंठ ताको वास वेसरि नपायौ सरिकहिए वेरावरि वेसरि कहिए नहीं वरोव
रिको ॥ नाककोवास वेसरिको जो थो तिन पायौ मुक्त जे जीवन्मुक्त वे सवतिनके संगमैं वसि
कैं ॥ दोऊ अर्थमैं दोहा क्लिष्ट है ॥ किंवा ॥ अजजो ब्रह्मा सो भी अव नाई नहीं तस्यौ श्रुतिसों
सेवत ॥ विचारत एक जो है ब्रह्म ताको है अंगमित्र ॥ संकराचार्यको मत है ॥ ब्रह्मादिककों

सुर्नेश्पानननहीभयोजासौंसज्जनहोंहि ॥ उनराहूवैसेंहीजानिए ॥ अन्योक्ति ॥ ४ ॥ नवाव ॥ ८
काकेंकिरीतिअर्थयहैकिअज्ञांनतैयानाहींकहा ॥ ज्ञांनतैयांनाहींजिनश्रुतिकोंएकअं
गसेयोहैदृष्टांथयहैकिनतेयाहीहै ॥ क्योंकिनावबासवेसरिलसैयोसज्जननकेसंगमेंव
सिकैंयाअर्थमेंश्रुतिकोअरुअंगकोहीननानाहीहोतिहै ॥ अरुअन्योक्ति ॥ सषीनाइ
कासोंकहैहैकितरोंनाएकअंगसोंनेंहीकोहोयहै अरुकानकेंहीतेरंरहैतहैसेवाक
रेसोंकांनकोंपहुच्यो अरुअकेलपनेंतेंतरेंहीरह्यो अरुवेसरिनेंमोतीनसोंअपुनपो
मिलायो अरुनाककोवासपायोओठनिकोंपहुचीहै तयहैकिसदागकोवासपायो
औरएकयहहैकहैहैकिकोउस्वर्गकोवासपावैसोअमृतपानकरैतोतहूआछेअं
गारसोंरहिसहागनअप्पमतपाउहैप्रेमपदविचारिलीजेयातेंभेष ॥ मुनिज्ञ ॥ ब
नेंनरानितिविपरीतिकोसषीसषीसोंसंग ॥ सर्वसिगावविवरनभएरह्यानतैयानासंग ॥
१ ॥ सोरठा ॥ नाकबासकोहैतवेसभूषनहीरह्यो ॥ करतिकोंचितचेतसबभूषनउतरे
तउ ॥ २ ॥ परमार्थपक्षि ॥ अस्य ॥ इहांप्रलश्रुतिपाइकीकोंनिदादरसाइ ॥ श्रुतिसेवाइक
अंगकरेक्योंनसज्ञिसरसाइ ॥ ३ ॥ सोरठा ॥ गुरुपदपंकजलीनजेसज्जनसंगसेवहीं ॥
महामज्ञपदचीनगुरुप्रसादजगजनलहैं ॥ हरिचरननिभोलीनसोअजश्रुतिगु
नगाइकैं ॥ पारलहतनलमीनज्योंसज्जनसंगतेंसकल ॥ ७८ ॥ अस्तसोरठा ॥ मंगल
विंदुसुरंग ॥ मुषससिकेसरिआडगुरु ॥ इकनारीलहिसंग ॥ रसमयकियलोचन

वि॰टी॰
७१
41

जगत॥७८॥सूरतकी॥प्रश्न॥जगलोचनरसमयकियेतौतियदूषनजान॥उत्तर॥
तियनैंहगरसमयकियेनाडीजगत समान॥२॥वार्ता॥रसश्लेषप्रेमजल॥नारीहूकैदूँ
अर्थयातेंश्लेष॥इहांसविषयसावयवरूपकहै॥रूपकसविषयसावयवसबविधिमनता
चाहि॥सबकौंअरूहसमसमहकरिभावरहकस्यानिवाहि॥२॥हरिकविटीका॥मंगलइति॥स
षीसौंसषीवचन॥रुरंगलालजोगोरीकोविंदुसोमंगलहै॥सबसोमसकिहै॥केसरिकोजो
आडुतिरीछोतिलकसोअरुहबृहस्पतिहै॥एसीजोएकनारी॥स्त्रीनिविषैमुख्यत्री॥ताकौं
कौंसंगमैंलहिपायकैरसमयअनुरागमयकिएहै लोचनकौं॥जगतकैसारीरतिजागतकै
हूसराअर्थ॥मंगलजोसमिकोवृहस्पतिएकनारीएकनाडीमैंएकरासिमैंसंगमैंलहिकै॥
जगतकौंरसमयजलमयकिएहैएतनेअरुहएकनाडिमैंआवैतौबृष्टिहोय॥रूपकअलंकार
उपपतिकीनोवचनअनुभावस्मृतिसंचारी॥रूपकतीनो॥रसश्लेष॥नारी॥लोचन
जगतएहु॥श्रीप्रताप॥की
मूलदोहा॥गोरीछिगुनीनषरुनवनषछलासंगमछविदेय॥लहतमुकतिरतिछिनकिए
नैंनत्रिवेनीसेय॥८०॥हरिकविटीका॥गोरीइति॥नायकनायिकाकौंदेषिकैआपनानेत्र
सौंकहतहैं॥छिनिकएनैनत्रिवेनीसेइदेनैंनछिनकएकछिनभीएत्रिवेनीसेइकैरतिजोहै
रमनसोमुकतिताकौंलहततहैं॥पावनहैंछिगुनीकनिष्ठाअंगुरीसोगोरीहैसोगंगाजी
जानिये॥नषअरुनसोसरस्वती॥छलाअंगूरीसोस्यामजमुनाजीहै॥सोदतहैयागौत्रि

४१ वेनी कही है॥ तासैं गंगा आदिकी प्रतीति छनकितें ऐसो भी पाठ है॥ नायिकाके नैन त्रिवे
नी है॥ तीन रंग नेत्र मैं है याते॥ नैन जो है त्रिवेनी ताकौं सेय कैं बहुत काल लौं देषि कै र
तिरूप जो प्रकृति ताकौं पावत है॥ कैसी नायिका है॥ गोरी जाकी छवि गुनी है॥ इत्यादिजा
निए॥ इहां नायक वचन सषीसौं रूपका अलंकार॥

मूलदोहा॥ तरवन कनक कपोल दुति विचही बीच विकान॥ लाल लाल चमकन चुनीचौ
का चिह्न समान॥ ८२॥ अमरचंद्रिका॥ मीलित उपमाकौं संकर॥ मीलित भेद न सदृश मैं
छिप्यो कपोलनि स्वर्न॥ लाल चुनी चौका चमक समउपमा वरवर्न॥ १॥ औरविधि अर्थ
कौ उसषी सौ तीयकौ चिह्न दुरावत चाहि॥ लषि सषि चमक चुनीनकी चौका अकृति आ
हि॥ २॥ आजोक्ति॥ आज उक्ति कछु कहि जहां लेत प्रकार दुराय॥ कहीं सु चमक चुनीनकी
चौका समदुहि भाय॥ ३॥ हरिकविटीका॥ तरिवनदुति॥ सषी वचन नायिकासौं॥ कनक
को तरिवन तरकी॥ और कपोल गाल ताकी कांति के बीच बीच ही विकानी॥ विच ही विकी
पद लो को किहै॥ किन हूं मोल करा इ वे पायो नहीं॥ लाल लाल चुनी चमकति है चौ
का दांतका॥ चिह्न समान इहां मिलित अलंकार॥ मीलित सो सादृश्यतें भेद जबै न ल
षाय॥ सादृश्य सो ता॥ उपमा॥ किंवा॥ सषी सौं स्वरन चिह्न दुरावति है॥ रूप गर्विता
गुप्ता नायिका भी जानिए॥ सषी नाइका सं परिहास॥ मीलित उपमा॥ ३॥ व्याजो

क्ति ॥ श्रीप्रताप ॥ चकार ते भ्रमा ॥ हरि: ॥ रूपगर्विता गुप्ता भी जानिए ॥ ८१ ॥ मूलदोहा ॥ सा
रीडारी नील की ओर अचूक चुकैन ॥ मो मन मृग कर वर गहैं अहे अहेरी नैंन ॥ ८२ ॥
सूरतटीका ॥ प्रस्न ॥ कुचैन अर्थ अचूक कौ पुनि अचूक पुनरुक्त ॥ उत्तर ॥ मो मन मृग
सचूक है कि इंवर नायक उक्ति ॥ १ ॥ अपरप्रस्न ॥ अहे वचन नायक कहि कौ है अरजुक्ति सीवात
उत्तर ॥ दूतें अहेरी नैंन यैं कीजै अर्थ विधान ॥ २ ॥ इहां अहेरी के सब अंग ॥ सविषय साव
यव रूपक ॥ हरिकविटीका ॥ सारीदूति ॥ नायक को वचन नायिका सों ॥ किंवा ॥ सखी सों ॥ ।
नील की रंगी सारी सो है डार हरि वितज्ञो पकरत हैं ॥ सो आपनें अंग मैं डार पात बाधत है ॥ ।
ताकी ओर अचूक है चूक तनंही है ॥ हम रेक है सों अचूक पनो ति पर दृढ भैया ॥ किंवा ॥ अ
चूक वेतकसीर ता कौं भी चूकै नाही ॥ ताहि पकरत हैं ॥ हमारो जो है मन सो है मृग करवर
जाति विसेष ॥ किंवा ॥ करबल करि गहे है है किंवा ॥ रल एक है ॥ कल सों वा छल सों गहत हैं ॥
अहे नायिका की सखी अहेरी सिकारी नैंन हैं ॥ कोई कहत हैं ॥ अहे यह प्रत्यक्ष की वाल निन
हीं ॥ अहे व दूत तैंठौं र मैं आवत हैं ॥ अहेर दे हे दीजिनि छौठै रूपकालंकार हैं ॥ उक्ति नायक ।
की स्मृति संचारी गुन कथन दसा गहे पद लछिक ॥ परं प्रति रूपक ॥ ३ ॥ प्रताप ॥ छे
कानुप्रास जमक ॥ ८२ ॥ मूलदोहा ॥ तन भूषन अंजन दृगनि पगनि महावर रंग ॥ न
हि सोभा कौं साजियत कहिबे ही हैं अंग ॥ ८३ ॥ सूरतटीका ॥ रूपगर्विता के वचन सोभा
कहिबे माहि ॥ कहिए कदो के अंग तौ अंग सुहागित मांहि ॥ १ ॥ मीलित है निज तिज अंग

42A

गरंगजातमिलिभूषनादियेजाय॥ यातैंमीलितसमरंगदुतिमलैनभेदलषाय॥२॥
हरिकविटीका॥ तनभूषनइति॥ सषीवचननायकासौं॥ तनविषैभूषन॥ दृगनिमैंअंज
न॥ पावनिमैंमहावरकोरंग॥ नहिंसोभाकौंसाजिए एसवसौंवाकीसोभानहींसाजियै
नंहीवनाइयेहै॥ कौनवाकोअंगकहिए सरादिएसहजकीजोसोभाहै॥ सोकंहीनहीं
जातिहै॥ कहिवेहीकोअंगयहभीपाठहै॥ अंगमैंकहिवेहीकोंहैइनसोंसोभानहीं॥ किं
बानहीं॥ जाकेभूषकीसोभाकोंकरतिहै॥ तौअंगकौनकहिए॥ मीलितअलंकारभूषन
आदिअंगकेरूपमेंमिलिजातहैं॥ सषीकीउक्तिनोत्सुतिजोनाइकाकीतोरूपगर्विताजो
नायककीतोगुनकथन॥ मीलितअलंकार॥३॥ औपनाय॥ तन्सजोतपतानदिसो
भाकोसाजियतएकक्रियाअरूपथा जोतपकेसंगतैंसम अलंकार॥ जोसषीनायकाकी
अवस्थानायककोपत्रकामैंलिषेजाकोसोभाकोसरूषसोनहीहै॥ सोभादेषस्वषउ
पजतहै याकोनहीअजियतमतकसीहै॥ कहैवमात्रअमाहै॥ पाअर्थमैनायकाप्रोषित
पतकाप्राहा॥८३॥ मूलदोहा॥ पायनतहनिकुचउच्चपदचिरमठयोसबगाव॥ छुटैं
ठौररहिहैवहैजदैमोलछविनाव॥८४॥ सूतनटीका॥ प्रस्न॥ ठयोगांवकुलटानिरसदे
वतसवैलुभाय॥ उत्तर॥ यहमननिश्चलनायकाठगेगयेवचपाय॥१॥ प्रस्न॥ मोलजुछ
विघटिहैसुतोनामघटनकिंहिभा॥ उत्तर॥ गुंजमालसंगगुंजपदचिरमछुटैंपदपा
य॥२॥ उल्लासदूहै॥ इककेगुननतैंहोयजहंअोरैंगुनउल्लास॥ कुचसंगतैंछविवंतपदमो

वि॰री॰
८३
43

हनगतिलहिजास ॥२॥ हरिकविटीका ॥ पायहनि ॥ नायकवचनगंजाकीमाला ॥ सौं
हेचिरमिहेगुंजा ॥ तहनीकोजोकुच ॥ सोहेउच्चपद्दउच्चस्थान ॥ ताकोपायकैंतेसव
गांवकोंठगैयो ॥ तेरीएसीसोभावढीहै ॥ जोकोईदेषतहै ॥ सोजानतहैकोईवडुमलजं
वाहिरहै ॥ यहठौरछटेपरजोनमारोमोलनामचिरमीकरजनी ॥ वहेरहिहै ॥ गुंज
मालनामजातोरहैगो ॥ इहांउल्लासअलंकारकुचकेगुनसोंचिरमीमेंगुन ॥ गुन
सोगुनजवएकतेंऔरविधवैउल्लास ॥ कोईवीचवडेठिकानेपडुंचैतापैभीलगैहैअसो
गुनजवएकतेंऔरविधवैउल्लास ॥ उरमानिककीउरवसीदृटतछुटनदृगदाग ॥ झलकतवा
ह्निजानिये ॥ ८४ ॥ मूलदोहा ॥ उरमानिककीउरवसीदृटतछुटनदृगदाग ॥ झलकतवा
हरिभविमनेोतियहियकोअनुराग ॥ ८४ ॥ सुवनटीका ॥ कहतसुभेदउपायसषिलईजु
निजकरमित ॥ पियसोंतोसोंप्रीतिअतिदृढवतकहितियचित्त ॥ १ ॥ परषिजवतयहदू
गजरानिनववहियअतिअनुराग ॥ भहोयरिकेलषिहोतसुघनबहुसुघटतदृगदाग ॥ २ ॥
वहृन्मेल ॥ हरिकविटीका ॥ उरहनि ॥ नायककीउक्तिनायिकासोंतेरेउरवसीजोमा
निकलालमनितांकीउरवसीचौकीताकोंदुटतअटकरकतनिरषतदृगकोदाग
दाहविरहसोंउपज्योहैसोछुटतहै ॥ छीनहोतहै ॥ देतियहमैंविषयकजोतेरेहियमेंअ
नुरागहै ॥ ताकोभीमरिकेलेकैमानोंवाहिरझलकतहै ॥ सषीकीउक्तिनायकसोंहाय
तो ॥ तियकैंतामेंविषयकजोदिएकोअनुरागहैताकोंमरिकेवाहिरझलकतहै ॥ औरि
वैसेंहीजानिए ॥ किंवा ॥ धराधीशकहतहै ॥ मधानाहिवनाय ॥ गुप्तप्रगटजाकोक

43A

हुकोपपिच्छाम्योजाय ॥ नायकसौंधीराधीराकोवचनसोतिकेगरकीउरवसीपहिरेंदेषि
कै ॥ ग्राथादोहामेंगुग्राथादोहामेंकोपप्रगटहैं ॥ इहांवस्तूत्प्रेच्छाग्रारिवस्तुकरिवस्तु
कोंसंभावनजहांहोय ॥ उक्ताउक्तास्पदजहांवस्तूत्प्रेच्छाजोय ॥ एकवस्तुकीदूसरीवस्तु
करिजहांसंभावनाठौरकीजियेसोउत्प्रेच्छासोदोयतरहकी ॥ एकउक्तास्पदा ॥ एकअनु
क्तास्पदा ॥ उक्तास्पदाकोअर्थसंभावनाकरिवेकीठौरजाहिविषैंदूसरीवस्तुकीसंभावना
कीजै ॥ सोठौरजाकीकहिदियोहोय ॥ जाकीसंभावनाकीजियेसोसंभाव्यमान ॥ अनुक्ता
स्पदा ॥ जाकीसंभावनाकीजियेसोहोयजाविषैसंभावनाकीजियेसोनहोय ॥ जहांकि
याआगेंवाचकआवैनहांजांनिए ॥ ऐचनसीचितवतिचितै इत्यादिविषैं ॥ मानिककीउ
रवसीविषैंअनुरागवस्तुकीसंभावना ॥ उरवसीसंभावनाविषय ॥ अनुरागसंभाव्यमा
न ॥

मल्लदोहा ॥ तीजपरबसोतिनसजेभूषनवसनसरीर ॥ सबैमरगजेंमनहूकरीउहींमरग
जैंचीर ॥ ८६ ॥ स्वरनटीका ॥ प्रश्न ॥ याकोजोवारीदूतीभोसौंतिनकिमदाह ॥ वारीजोतारी
कहात ऊप्रश्ननिरवाह ॥ १ ॥ दुषतिहिजिहिवारीटरीसबवसौंहै हिमलीनपानैंयाकेअर्थ
कीरचनाकहोप्रवीन ॥ २ ॥ उत्तर ॥ पियविदेसतैंआयनिजसौंवहिकियोमिलैन ॥ तहांवि
तबुभीसबवोलिनिसिकरियठईरतिजान ॥ २ ॥ उहींगरीबतेंनहिसजेभूषनपटसब
नाय ॥ वेलषिभईमलीनसबरतिसंपतिदुषदाय ॥ ४ ॥ अर्मसंगतिअलंकार ॥ सत्यसंग

तिकारनग्रननकारजभिन्नस्वथान॥जुक्तमलिनिपटुवनितिइतिनमलिनकरीतियग्रा
न॥५॥हरिकविरीका॥तीजइनिम सखीसोंसखीवचन॥तीजपरवमैंसौतिनभूषनव
समसेंसखीवकोंसाजेसिंगारे॥वहैमरगजेचीरसोंनायककेप्रस्नेहसों॥सवसौति
नकोंमेलासहकोकरी॥किंवा॥वहरूपकागर्वतेसिंगारनहींकियोतोभीएसीसोभाम
योसौतिसहिनहिंसकी॥इहांईर्ष्यासंचारीव्यंग्य॥असंगतिअलंकार॥जोमलिनपर
यहिरैसोमलिनसौतिविषेमालिन्यमरगजेचीरसौतिकेमुखमलिनकविवेकोका
रननहींताकौंकाजभयो॥दूसरीविभावनाभीजानिपरतिहै॥सखीकीउक्ति॥स्वरता
नसपत्नीनकैंवैवर्ण्यताग्रनुभावते॥इर्ष्यासंचारी॥ग्रसंलक्ष्यक्रम॥ग्रलं
कारअसंगति॥उ॥श्रीप्रताप॥सजेतेतल्पजोरपता॥मरगजेमरगजेयातेपदार्था
व्रत्तदीपक॥इहांसामान्यलुषितनैनैमित्रग्राव्रतदी॥मनीस्वतके उत्तरार्थकीभूमिका
निकहनहीरहतहूपरतहै तो प्रस्नउत्तर याकवीयेनायकाकीसखीकहतहै॥जोवस्त्रना
यकके समरसतेमैलो भयाहूतोउसौतनेमलीनमुखजोकवीहै यातेतीजपरवमेवीसिंगा
रनहीकीयातेरीसौतिने॥वाकीवारीटारतेरेपासवहै यातेमानभयो॥प्रोषितपतकाव
रकातेंग्रर्थ तेरीसौतनेतीजपरवमेंभीभूषनवसननहीसजेसजेधनितभीसजतेव
हीचीररराषोजोनायकचलतसमैदैगयेहै उसमरगजेचीरनेसर्वकुटंबकीस्त्रीमेले
मूहकरीहै ताकोमलीनदेषनेवीसिंगारनहीकरत॥तेरेदुषतेंदुखीह्वैरहीहै ग्रापप्र

44A

सत्रहू जेइनेकरी॥ प्रोषितपतिकाके अर्थमें काको नपायो पोकहेत॥ ३॥ सषी यामें विसेष
नै॥ नायकाके मनमें सोतिनके संगारदेषभयभयो ताकोसषीकहतहैदेह सौतउनके अ
हूकोयादकर जोरकस्योहूतोहूमनतेरेआधीनहै॥ यातेतेरी सौतजैसहहत नहीउनकोतन
अलंकारनके वसनहीकाहेतेतजानतहीहै॥ प्रस्नकोउत्तरभय नवमनसरीरसेंनायक
कोशाहूकिसीराजाकोपोत्रसत्रतेहारकेचरआयो तासोंराजाकोवचनहेभंगुलतें इस्त्री।
केप्राहूोकोयादकरपुरुषकेप्राहूमतवोलसोकोग्रंथअनंतशतसहस्त्रपाहूअनंतवाची
हैअनंततिनोकरजोसजतहैभूमएयोतो ताकोषोदवेगयहग्रीवनीचीकरसंमुषमुषकोन
राषतातेहमनहीसोभतनकोसरीरहूतेरोतेरेवसनही॥ जहांसषूरमुषकेहाथीहेअ
हमूमिसें उहाही मरप्रानतागयाउनराजाईकोफारजायकेस्यांवेसोंआयो॥ यासोतीना
मपुत्रकी पुत्रीकोहितमेरेपुत्रकी पुत्रीहैसोतीकहापोत्रीकहो॥ नफतेसहतनहीमूत
स्यापत्न पुमानसोति॥ लक्षन॥ नमुकरतकोंहेउसीमसलेचीरकरकेईतेनेसोतमैले
महकरीहैहमसेंप्रीतकोदुरावतहैवईमेरीप्रीतनहीहै मैलमुषतोउसमरगजेचो
रनेईकरेहै॥ ८६॥ मूलदोहा॥ पंचरंगरंगवैंदीवनीउठीषरीमुषजोति॥ पहिरैंचीरचि
नौठियाचटकचौगुनीहोति॥ ८७॥ सुरतटीका॥ प्रस्न॥ पंचरंगपुनिरंगसहूवेंदिहूक
हहप्रसस्नजान॥ हूजेंचौगुनिचटकक्रिमलषियततीनप्रमान॥ १॥ उत्तर॥ किहूंनियपि
यसोंरंगाभयेंसजैसोसरससिंगार॥ तहांसषिसोंसषिकेवचनकहतसहइहिपरकार॥ २॥

वि·री·
४५
45

इकमुषदुतिहूजैंषरीभईरंगपियपाय॥ तीजैंवेंदीचीरलहिचटकचौगुनीगाय॥३॥
अनुगुनअलंकार॥ निजगुनसिषपरसंगअधिक होयसुअनगुनगाय॥ एकच
टकसैंचौगुनीभईसंगपरपाय॥४॥ हरिकविटीका॥ पचरंगगूनि॥ नायिकाकेंस
षीकीउक्ति॥ किंवा॥ नायककी॥ रंगनामनरहकोभीहे॥ पांचतरहकांरंगकीवेंदीव
नीहै॥ तासैंमुषकीजोति॥ उगिउठीहै॥ लोकोक्तिहैवहुतप्रकासमानभईहै॥ किं
वा॥ पचरंगारंगाकहेंसोलछनाकरिपचगुनीजानिए॥ पचगुनीजानियेंनाहींतौं
पचरंगवेंदीएतनाहींकहते॥ फेरिचुनौंविप्राचीरजामेंललाईऐसोस्यामताहेसो
पहिरें॥ चटकचमत्कारचौगुनीहोतिहै॥ वेंदीसो॥ मुषमेंपचगुनीसोचीरकेचांनिक
सैंचौगुनीभई॥ पांचचौकावीस॥ वीसविस्वाकीचटकयहअर्थ॥ अनुगुनअलंका
र॥ निजगुनजोपरसंगतेंवढेसुअनुगुनजान॥ चीरसैंचौगुनीभई॥ जोसषी
कीउक्तिनायकसोंतौरुचिउपजावैहै अरुजोनाइककीतौगुनकथनसुभावोक्तिअ
लंकृतिचकारतेकोमलावृत्ति॥ एकरंगपरअधिकसोनाहींमुषदुति॥१॥ अरुपियकोंरं
ग॥२॥ वेंदी॥३॥ चीर॥४॥ प्रताप॥ चटकचौगुनीइहांअनुगुनहै॥ रंगारंगालाल अभास
जोनायकानायकसोंकहेतौषंडितानायकहै वहप्रोढासमस्तरसकोविद्या॥ विपरीतलछना
करअर्थहोतहै रंगा॥२॥ कीजेपाचवेंदीहैतिननतेंमुषदुतिषरीजागउठीहैनायकाको
वीरमसलोआपलेआयेयाकीवेंदीननतेंचौगनीचटकहोतहै लछनानेंवीसविसे

मलिनहै॥ या अर्थ में विसेष चमत्कार है वक्रोक्ति विपरीत लक्षना करि कहै तो धीरा षंड
ता जो काकु करि कहै तो अधीरा षंडिता ह्वै जाय॥ जो या में कोऊ प्रश्न करे चिह्न वेंदी को तो
नायका के भाल की वेंदी नायक के भाल लगी कहिये तो दोष जाय परस्पर मुष चुंबन
व्यंग॥ यों अर्थ जो हूती लैन पठई सो नायक सों प्रथम आप मिलके लै आई है नायक के तो प
चरंग वेंदी को चिह्न है नायका के चिनौठी या चीर है सो मुष की पांच विसेष मलीन या की
वीस विसेष मलीन नायका को वचन दोऊ नसों॥ अन्य संभोग दुःषिता यह लक्षना वह॥
जो काकु करि कहै तो का पंसचारी को उदै॥ नायका को गुरमान॥ या में अभिना लंकार ष
स्वाधीनपतिका पर अर्थ होत है नायक वेंदी को सृंगार करि नायका सों कहत है तेरे मुष
की जोति वेंदी ते षरी वढी है॥ रूपगर्विता॥ सषी कर में सृंगार नायका की उक्ति सषी सों पचं
रंगी वेंदी ते मुष की जोति वडी॥ चीर ते वेंदी न कीव है॥ पहरे चीर चिनौठी या या में है
को अर्थ करे प्रश्न होत है तेको अर्थ करे उत्तर॥ किंवा सषी कहत है वेंदी ते लगाई है चिनौ
ठी या चीर तू पहर याके पहरे ते चौगुनी चटक वहै॥ ८६॥ मूल दोहा॥ वेंदी भाल तमोर
मुष सीस सिलसिले वार॥ दृग आंजे राजे षरी ऐही सहज सिंगार॥ ८७॥ हरिक विटीका॥
वेंदी इति॥ सषी नायिका को अभिसार करावै है॥ तू वहुत सिंगार काहे कों करति॥ तेरे यों ही
सुंदरी है॥ लिलार में वेंदी मुष में पान॥ सीस पै सिलसिले चीकने वार॥ दृग अंजन दि
ए है॥ ए ही जो सहज के सिंगार है॥ तासौं तू षरी अति राजै है सोभै है॥ जाति अलंकार॥ उ

बि॰ री॰
८६
46

क्ति सषीकी नाइक सौं तौ हरि चिजे जो नाइक की तें गनन कथन ॥ वक्ताकी उक्ति तें स्वभावोक्ति ॥ २
श्री प्रताप ॥ यथा जो रूपके संगतें सम ॥ राजै एक क्रियातें लक्ष जो म्पता ॥ जो यामें प्रश्न को
रू करे तौ वंदी भाल तमोर स्वष यामें उत्तर सीससिल सले वार नायकाको विसेषन नायक
कोमान भ्रम सषीको वैन नायकासौं जो वकार पर गर्थ करे तो रस है जाय ॥ स्वष सौं बोल
तं है सो गर्थ होय ॥ जो प्रश्न करे कोऊ तौ नायककी सषी सौं नायकाकी सषीको वचन ॥ दो
षजाय ॥ जो काकुकर सषी हीकी उक्ति पर लगे तौ नायकामान चतीप्रो हा होय ॥ सहसि
गार हून दी कियेया ते गुरुमान जो प्रश्न कीजे तौ कीचजलके कोइ शांत दे उत्तर दीजे ॥ नायक
की सषी सौं नायकाकी सषीको वैन ॥ जो सषीकी उक्ति नायका सौं होय तौ लक्षतातं हमा
सौं बोलकरत है वैदी को देष जो नायकने रची है आप ॥ स्वष के तवारको देष अधर पान
में ल रेयो है ॥ सीस में भीगे वारनको देष स्वेद ताल कहे ॥ जो प्रश्न कीजे तौ पीक लीजे ॥ ना
यक के स्वष की नेत्र तेरे जो रंगे हैं सो देष दृग अंबुवनमें रंग लग्यो है ॥ तौ तो षरी सोभत है ए जो
मिलनमें सिंगार उपजे है तिनकर जो और प्रश्न कीजे राजे षरी यामें तौ जो नायक सौं ना
यकाकी उक्ति तौ षडता जाने तमारे नेत्र रंगे हैं सो सहज सिंगारनको साजे हुये देषो षदी
है सो भत है ॥ वंगयह और सिंगार तो भूषनादिकके स्वरत जहु में हू रतो देष सहज सिं
गार है याते भाल में वेदी रही है यामुष में तमोर रह्यो है यासीस पै वार है ॥ सीस वार यामें
प्रश्न करें तौ उत्तर सीस पै वार ही है इनके सिंगार मांग फूल सीस फूल वेनी फूल एन हीके

46A

वलवारहीहै॥धीराधेउत्ता॥हेनायकातूं सहजसिंगारननैं जोसवतेंषरीराजतहै यामें।
हेतयहीहैकिएसिंगारनायकनें सिंगारेहै याग्रर्थमेंस्वाधीनपतका॥पतकेमोहन।
कोसिंगारआपवेंकरकेतेरीसोतसोभतहैतेरेसिंगारपतनेकीयेयातेषरीसोभतहै॥
व्यंगकेविसेषचमत्कारतेउत्तमकाव्यनायकाकीउक्तितेंग्रन्यसंभोगदूषताकाकुवेंदीतें
भालराजतहैनहीराजतइत्यादिसीससिलसिलेवारननतेंराजतहैनहीराजतनेआ
नेराजतहैनहीराजत॥राजेहैहरीदीपकसहजसिंगारननतेंषरीजतहैग्रतमलीनहै॥
सामनीसोंद्रोहकीयायातेंग्रतमलीन॥८७॥मूलदोहा॥फिरिफिरिचितउतहीरहत
टुटीलाजकीलाव॥अंगअंगछविझौरमैंभयोभौरकीनाव॥८८॥हरिकविटीका॥फिरि
फिरिइति॥नायिकाकीहकीकति॥किंवा॥नायककीहकीकति॥सषीसषीसोंकहतिहै
फेरिफेरिचित्तउतहीनायिकाकीग्रोर॥किंवा॥नायिककीग्रोररहतहैगुरुजनकीला
जकीजोलावरसीसोटूटी॥अंगअंगमैंजोछविकोझौंरसमूहतामैंचित्तहैसोभौंरमें
कीनावभयोहै॥रूपकालंकार॥उक्तिपरकियाकीग्रंतरंगसषीसोंपूर्वानुराग॥रूप
कालंकार॥प्रलाप॥वीप्साछेका॥८८॥मूलदोहा॥वाहिलषैंलोयनलगैंकौनजुव
तिकीजोति॥जाकेतनकीछांहढिगजोन्हछांहसीहोति॥८९॥हरिकविटीका॥वाहिल
षेइति॥नायककोवचनपूर्वानुरागमैंसषीसों॥वाहिनायिकाकोदेषेमोलोयननेत्र
लगिजातहै॥वासोंछूटतनहीहै॥वाजुवतीकीजोतिकौनतरहकीहैकहिवेमेंनहीआ

वि॰ टी॰
८८
47

वति है ॥ जाके तनकी छायाके दिग नजीक जो रूचादिनी ॥ किंवा ॥ एवव मैं जो रूरा ता
राको भी कहतहै सो छाया सी होतिहै ॥ जो रूउपमेय छाया उपमान सी वाचक ॥ सा
धारन धर्म मलिनता को लोप है ॥ धर्मलुप्ता उपमा ॥ किंवा ॥ स्वकीया नाइका परकीया
सपत्नी देषिके सषी सों कहतिहै ॥ वाहि देषं दूमारे नेत्र लगैं वरे हैं ॥ कौंन नर रूकी वाञ्छ
वती की जोतिकों तिहै ॥ नक छूपद रूग्रंथ ॥ छायासों तो जो रू मेली होतनही है ॥ छायाके न
जीकयाकी मलिनता सों जो रू छायासी मैली होतिहै ॥ सषीकी उक्ति नाइकसों स्वतिना
यककी तास्मृतिसंचारी गुनकथन ॥ उत्प्रेक्षा ॥ प्रताप ॥ उपमाकाव्यलिंग ॥ नवा
वप्रतीपजमककौं है ॥ ८८ ॥ मूलदोहा ॥ कहि लहि कौंन सकै दुरी सोनजाय मैं जाय ॥ न
नकी सहजसुवासना देतीज्यों नवताय ॥ ८९ ॥ हरिप्रकाशटीका ॥ कहि लहि इति ॥ नाय
ककी वचन सषी सों ॥ सोनजाय मैं पीत चंवेलीमें जायकै दुरी छपी थी ॥ तव याकों कौं
न लहि सकै थो ॥ पाय सकै थो ॥ हे सषी याह तनकहो ॥ किंवा ॥ कौन कहि सकै थो जो फला
नी ठौर मैं और कोन पाय सकै थो ॥ तनकी जो याकी सहजकी सुवासना है ॥ सो ज्यों वता
य न हीदेती ॥ इहां उन्मीलित अलंकार ॥ उन्मीलन सादृश्यतें भेद फुरै तव सान तन
की सुवासतें भेद फुरयो ॥ सषीकी उक्ति सषीसों चोरमिहीचनी षेले है नायकसों संकेत
सूचन करै है ॥ उन्मीलित ॥ प्रताप ॥ छेकाजमक ॥ ८९ ॥ मूलदोहा ॥ हरि छवि जल जव
तें परे तवतें छिन विछुरैं न ॥ भरत ढरत वूडत तरत रहत घरी लौं नैन ॥ ९१ ॥ हरि

47A

कविटीका॥हरिछविइति॥ सषीसोंनायिकाकीहकीकतिसषीकहतिहैं॥हरिकीजो
छविहैसोजलहैतामैंजवतेंपरेनायिकाकेनैंननवतेंछिनभीविछुरतनहींहैं॥वहीहूप
मैंआसक्तहैं॥आंसूभरेहैंहरतकोअर्थआसूढारहै॥आंसूमैंवूडेजातहैं॥आंसूमैंत
रतहैं॥चरीकीतरहरहतहैं॥किंवा॥सषीनायिकासोंकहतिहै॥हरिकेनैंननतेरीजोछ
विसोजलहैतामैजवतेंपरेएसेंजानिए॥चरीउपमाननैनउपमेयलौवाचकभवि
वोआदिधर्म्मपूर्णोपमालंकार॥उक्तिपरकियाकीसषीसोंवचनअनुभावतेंस्मृति
संचारीपूर्वानुरागहूतत्वकरवायोचहैहै॥उपमा॥प्रमाया॥रूपकअहवमा॥५१॥
मलदोहा॥हूहिनसकैसोकसकतिरंग्रेवसिकरिलीनोमार॥भेदिदुसारकियोहि
यातनदुतिभेदिसार॥५२॥हरिकविटीका॥यहिनइति॥सिच्छादेहिहैं॥सषीतासैंनायि
काकोवचन॥हियामनहमारो॥नायकसोंमिलिवेकौंनहीचाहैयाकसकरिदृगैयेपरहि
नहिसकैया॥कैमारजोहैकामताकेवसकरिलीनोनायककीतनद्युतिनेभेदिकेदुसा
रकियो॥वारपारकियो॥तहांसछैंजोंसषीतनदुतिमैंएतनोजोरहै॥तहांकहतिहैं
तनदुतितोसारजोकठोरताकोभेदैयहअर्थ॥जइकोंभीभेदैतोमनकीकहावातहै॥वि
भावनाअलंकार॥जवैअकारनवस्तुतेंकारजपरगटहोय॥तनदुतिभेदिवेकोकार
ननहींताकेभेद्यो॥उक्तिउपपतिकीकेपरकियाकोअसमर्थहूवन॥विभावनाचो
थी॥१॥नवावनायककोवचनसषीसोंनायिकाकीदुतिसारजोसारांस॥अनव

बि॰ टी॰
५८
४३

रनबाव॥ काव्यलिंग॥२॥ प्रताप॥ सारवस्तु सारलोह॥ विशेषोक्ति॥ ५२॥ मूलदोहा॥
पहिरतहीगोरेंगरैं यौंदौरीदुतिलाल॥ मनौंपरसिपुलकितभई वौलसिरीकीमाल॥
५३॥ सूरतटीका॥ प्रस्न॥ पुलकतसीसोहतसदा वौलसिरीकीमाल॥ नाहिकहैंपुल
कितभईपरसैंप्रस्नविसाल॥१॥ उत्तर॥ सोरठा॥ पियदईवहमालतिहिपहिरतगोरैं
गरैं॥ यौवाहीछविवाललाल परसिपुलकितमनौं॥२॥ रेतन्नेषा॥ मनौंलालके
परसकारनतैनापकापुलकितभयी॥ हरिकविटीका॥ पहिरतइति॥ नायकनेमा
लापठाईहैसोहकीकतिसषीकहतिहै॥ हेलालमौलसिरीकीमाल गोरेपहिरत
हीयौंदुतिदौरिसोभाभईयहअर्थ॥ मानोतुमेंपरसिकेपुलकितभई॥ तबहाँ गोरेसं
वंधमालासोहैताकेस्पर्शतेसात्विकभयो॥ यौंछविदौरी॥ किंवा॥ मानोवाकेअंगकौ
परसिकेमालापुलकितभई॥ जहाँअहेतुकोहेतुकरिसंभावनतिहिठौरसिद्धासि
द्धास्पदहेतूत्प्रेक्षाअौर॥ पहिलाअर्थमैंमालाकेस्पर्शसौंउपज्यौहैसोपुलक
तासमेंनायककोस्पर्शरूपजोहेतुताकोसंभावन॥ असिद्धास्पदहेतूत्प्रेक्षा॥ असिद्ध
हेतुसंभावनाकोविषयजामेंसंभावनाकरिए॥ लैगईताकौउक्तिमानोहेलालव
हमहीकौपरसैौ॥ उत्प्रेक्षा॥ श्रीप्रताप॥ गोरेंगरैंछेकालालललालजमक॥५४॥
मूलदोहा॥ कहाकुसुमकहकौमुदीकितिकआरसीजोति॥ जाकीउजराईलषैंआं
षिउजरीहोति॥ ५४॥ हरिकविटीका॥ कहाकुसुमइति॥ सषीवचननायकसौंकु

स मकुहाकुछुनही॥ कैभडरीचांदिनीकहाकछुनहीं॥ ग्रारसीकीतौकैतनीजोतिहै
वाकेग्रगजैसीतिकेग्राभोंजाकीउज्वलतासहुनादेषिग्रावैउजरीहोतिहै॥ ग्राषिन
मैंप्रकासहोतहै॥ किंवा॥ उज्वलनामसंगृंगारकोहै॥ ग्रांषिसंगृंगाररूपहोतिहै॥ इहांप्र
तीपालंकार॥ ग्रनग्रादर उपमेयतेंजवपावतउपमान॥ कूसमादिकोग्रनादरहै॥
उक्तिसषीनायकप्रतिहूतत्वनायककीतौस्मृतिसंचारीग्रनकथनसषी॥ नायिका
सौंतौस्तुति॥ वक्ताकीउक्तितेंग्रन्यसंतिधितेंध्वनि॥ प्रतीप॥ प्रताप॥ चलाउक्राम॥
९४॥ मूलदोहा॥ कंचनतनधनवरनवरस्यौरंगमिलिरंग॥ जानीजातसुवासहीकें
सरिलाईग्रंग॥ ९५॥ सतसईका॥ ग्रसकवतति यग्रंगकीकहीसुकैंनसुवास॥ उग्र
वदतौहेहीग्रमविधिभईसुकरीप्रकास॥ १॥ हूलेकग्रर्थ॥ ग्रंगनोंग्रंगलावनकहूंला
गिगईपरमांहिंयातेंकहीसुवासहीलषीग्रवरविधिनांहिं॥ २॥ उन्मीलितहै॥ हरिक
विटीका॥ कंचनरुचि॥ वनयहपाठहै॥ तहांसषीवचन॥ कंचनसोतनकोयनकहिए
वहूतवरनरंगसोवरसग्रेष्ठहैयातेंकेसरिकेरंगमिलिरस्यौहै॥ सुवासहीतेंग्रंगमेंके
सरिलगीजानिपरतिहैंधनियहभीपाठहै॥ नायककिंवासषीनायिकासोंकहतिहै
है॥ हेधनिनायिका॥ कंचनसोतेरोगोरोतनसरीरहै॥ वरनरंगग्रेष्ठहै॥ किंवा॥ व
रनवरवरनग्रेष्ठनिनायिकनितेंतूवरग्रेष्ठहै॥ किंवा॥ वरजोहैनेरोहूलहताकोंतो
हितेंग्रोरिकोई॥ वरग्रेष्ठनायिकानाहीहै॥ सषीकहतिहै॥ तेरेरंगसोंकेसरिको

वि॰टी॰
४५
49

रंगमिलिरह्यौहै॥ अंगमैंकेसरिलगाईहै सोसुवासहीतैंजानीजातिहै॥ रंगसोंनहींजानी
जातिहै॥ किंवा॥ तेहेअंगमैंसुवासहै॥ केसरिमैंवासहै॥ ग्रैसेंभीजानिए॥ उन्मीलित॥
अलंकारहै॥ उन्मीलितसारूप्यतैंभेदकरैजहांनाहि॥ नायककीउक्तितौस्मृतिसं॥
चारीगुनकथन॥ उन्मीलित॥ प्रताप॥ धर्म॥ वाचकलुप्त॥ वासबहु॥ न्कारतेव्यता
व्यतिरेक॥ ५५॥ मूलदोहा॥ षरीलसतगोरैंगरैंधसतपानकीपीक॥ मनौंगलूबंध
लालकीलाललाललुतिलीक॥ ५६॥ सुरतटीका॥ प्रस्न॥ दुतिगलूबंधलालकीगर
चहूंचाराहूकाय॥ लीककहनयहनहिवनैंग्रौरषरीकिहिभाय॥ १॥ उत्तर॥ मनौंगलूवं
धलालकीदुतिकैंलीकसमान॥ कहाकिग्रपजसदानिहैषरीलसनतैंजान॥ २॥ वार्ता॥
हेलालएकलालसंबोधनलालवाहिरतैंसोभावान॥ पीकभीतरहैतऊसोभाग्रधि
कयातैंषरीलसतिहैतसेलाप्रगट॥ षरीलसतिहैयाहेतनतै॥ मनौंलीकग्रपजसटानि
रूपयहतनकै॥ हरिकविटीका॥ षरीइति॥ सषीवचननायकसों॥ पानकीपीकगोरेगरेंके
मेधसतिकेषरीग्रतिसोभतिहै॥ हेलाललालजोलीकलालकीरमीवेधिजातिहै॥ ।
ताकीजोदुतिकांतितासोंएसोलसैहै॥ लालजोजवाहिरताकीगलूबंदकीसंभावना
वस्तुउत्प्रेक्षा॥ नायकसोंदूतीकीउक्तिहोयतौदूतत्व॥ नायकाप्रतिहोयतौस्तुति॥ जोना
यककीउक्तिहोयतौपरोक्षतैंतौस्मृतिसंचारी॥ प्रतक्ष्यतौस्तुति॥ वक्ताकीउक्तितें
ग्रन्यसंन्निधितें॥ व्यंगिउत्प्रेक्षा॥ श्रीप्रताप॥ लालरजमक॥ ५६॥ मूलदोहा॥ करत

मलिनक्याछीछविदिहरतनसदनप्रकास॥ अंगरागअंगनिमेंलग्योजोअंगारसीउपमा
स॥४७॥हारकविरीका॥करनहृति॥ हृष्णाविताकोवचुनपीछिलादोहामैंजैसेंव
चनदैतनमैं॥ अछीजोछविहैताकोंमलिनकरनहै॥ सुभावहीतेंजोहै॥ अंगकोंप्र
कासताकोंहरनहै॥ अंगरागकेसविचंदनसोंअंगनिमेंएसोलग्योहै॥ जैसेंअंगार
सीमेंउसाससुषकीवाफलागे॥किंवा॥ सपत्नीकोलग्योयानायककेअंगमेंअंगरा
गदेषिकैसषीसोंनायिकावचन॥ विषमालंकारअौरिभलोउद्यमकिएंहोतबु
रोफलआय॥ अंगरागसोभाकेलियेंलगायोसोभाबिगारतहै॥ अैसोउपमाभीहै॥
अंगरागउपमेयअंगारसीउपमानजोंवाचकमलिनकरनोप्रकासहरनोसाधा
रनधर्म॥ नायकसोंनेहूतत्वजोनायककोतोसरतिसंचारी॥ गजनकथनतेदर्वान्न
तागविषमउपमा॥प्रताप॥नमक॥४८॥मूलदोहा॥ वरनवाससुकुमारतासब
विधिरहीसमाय॥ पषुरीलगीगुलावकीगातनजानीजाय॥४८॥हरिकविरीका॥
वरनवाससहृति॥ सषीकीउक्तिनायकसों॥ संदरतासराहतिहै॥ वरनरंगवाससुगंधसो
सुकुमारताताकोंसो॥ सवविधिसवतरहसोंसमाइरही॥ मिलिरही॥ गुलावकीपषु
रीगातमेंलगीहैसोनजानीजातिहै॥किंवा॥ वरनवाससुकुमारतायाकोंअर्थवर
कहीयेअरुनहीहैवासुकुमारताजो॥ गुलावकीपंषुरीकीसवविधिरहीसमाय
लिवेकीजोसवविधिहैवासअरुसुकुमारतासोगुलावकीपंषुरिहिमेंसमायर

बि॰ टी॰
प॰
50

ही॥ कपोलमैं नहीं पैली जैसें दीपककी जोति दिनमैं दीपकमैं समाय रहतिहै॥ वा
हिरन नहीं पैलैं तैसें पगुरी लगी है गुलावकी मालनमैं सो जानी जातिहै॥ पहिला
ग्रंथमैं मिलित अलंकार॥ मीलित सो सादृश्यतें भेद जै वे न लषाय॥ दूसरा ग्रं
थमैं विसेष है॥ इहै विशेष विशेष युति फुरै न समता म्राहि॥ उक्ति नायककी वें
सषीकी होय तो स्तुति नायिकाको रूपगर्विता मीलितालंकार॥ प्रतीप॥ न लखे जो
गवता समाय रही एक क्रियातें॥ ५८॥ मूलदोहा॥ सुकुमारता वर्नन॥ भूषन भार सं
भारिहैं कौं यह तन न सुकुमार॥ सूधे पायन परत न पर सोभाही के भार॥ ५९॥ इ
ति कवि टीका॥ सुकुमारता वर्नन॥ भूषन इति॥ रूपगर्विता किंवा नायककों वचन
किंवा॥ सषीको वचन नायिकासें॥ यह जो सुकुमार तन न है सो कौं करिके भूष
न के भारकों संभारि है पायन करतिहै॥ पर कहिए पग ता पषी तामैं सु पायायन॰
ही धरतिहै॥ सोभाही के भारसों विधाताने प्रतिसुद्रवनता राषीहै॥ ताके भारसों॥
किंवा॥ स्त्रीकी सोभा कुच नितंव है ताके भार श्लेष काकु वक्र विहीन जहां श्लेष ग्र
थको ज्ञान॥ वक्रोक्ति निताकों कहति जो जगमैं सुज्ञान॥ कंठकी ध्वनि विशेष सो
काकु भूषन भार संभार है॥ न संभारि है यह अर्थ॥ सूधे पायन परत नेरी टेरी गा
तिहै॥ वक्रोक्ति निअलंकार॥ उक्ति नाइक सो तोहू तनत॥ काकोक्ति॥ श्रीप्रताप॥ का
ल्लिरा॥ हरि रूपगर्विता यह सैरो तन न परम पषी॥ ५६॥ मूलदोहा॥ नजकपरत

50A

न्यतिसुखदहैकमलालछमीतेंग्रहतियकीप्रीतितेंसुखद॥ या... ...कछ्
ठी॥हरिकविटीका॥मञकइति॥सखीनायिकाकीसुकुमारतानायकसाँकहति
है॥हेहरिनायककोमलजोकमलालछमीसदसवालाहैसो॥वनचंदनव
नमाल॥वनवहुतजोचंदन॥किंवा॥वनकहिएवनसारकपूरसोचंदनअरुव
नमालासोहियपैहृदयपैधरेसोनायककलननहीधरति॥भारवोऊताकेभयसों।
भाजतिहैऐसीसुकुमारिहै॥कमलासीवालइहांवाचकसीताकोलोपहै॥वा।
लाउपमेयकमलाउपमाननायकसाधारनधर्म्म॥लुप्तोपमाअलंकार॥दूस
रोअर्थ॥किंवा॥सखीनायककीविरहदसानायिकासोंकहतिहै॥हेनायककमला
वालविरहनदुखदाईजानिकेवनचंदनवनमालकों॥हृदयपैधरतकेहरिजोहै
नकनहीधरतहैं॥भारकेभयसोंभीतहोयकेभाजतहैऐसेविरहमेंछीनभएहैं॥।
तीसरोअर्थ॥नायिकाकोविरहनिवेदनसखीनायकसोंकरतिहै॥अर्थवहीहेहरि
वनचंदनवनमालहियपैसोवहनायककमलावालजोहैसो॥वाकोयहसव
गरमलागतहैं॥विरहमेंभारकेभयसोभारकहिएचरन्हाताकेभयसोंभीतहैभ
जतिहै॥वनचंदनवनमालनेचूल्हासमानजानतिहै॥चतुर्थार्थसखीसोंसखीव
चन॥हेसखीहरिआपनेहृदयमेंनायककमलावालकोंपरेहैं॥वनचंदनवनमा
लहृदयपैमें॥नायककमलननहीधरतहै॥...केभयसोंभजतहै॥...हृदयमें

यां ... कमलावाल॥ भजनभारभयभीतहै चनचंदनवनमाल॥ १

5 स्वरतेहाको॥ प्रथमअर्थनायकविरह॥ सोरठा॥ हरिनधरनकलहीय॥ धारतनाज
कवालसुनिभजनतभारलखिजीय॥ मलयमालतैंविरहक्रुस॥ २॥ वार्त्ता॥ हेनाज
कवाल यह विसेषनसाभिप्रायहै॥ कितहनाजकहै॥ कुसताकेदुषकोंभलेंजा
नतिहै॥ परिकरहै॥ परिकरसाभिप्रायजहेकहैविसेषनधार॥ नाज्जकयहत्नवि
सेषनैंसाभिप्रायनिहार॥ २॥ दूसरोअर्थनायकाविरहकौ॥ हेहरिनजकधरतहि
योनाजुककमलावाल॥ भजनभारभयलहिधरैचनरुमलयजलमाल॥ ३॥ भा
वकेदोयअर्थ॥ येनजलमाननभारसमभारतुस्यथलजान॥ मालहिजाननभार
तलमहावोऊसमजान॥ ४॥ इहांव्याघातहै॥ कोंनहूएकप्रकारतैंसुघटअप्रहि
तव्याघात॥ चनरुमलयजलमालएभएदुघटदविष्यात॥ ५॥ तीजोअर्थ॥ धीरा १
धीरानायकाव चनरतिप्रसेदचंदनचंद्रोरमनरहेचुननाहि॥ नहांकहतकछु
व्यंगसौंधीरअधीरनमांहि॥ ६॥ हरिकलनहिलषीहियेनाज्जकदवनवाल
हेतउनेसह॥ मनौयाहेततैंदवैनहींध्यारी॥ हलकीमालयतयोचंदनअंगीकृत
कसौ॥ परमार्थपक्षअर्थ॥ जेहरिहियुहिधरैंसुतेनकनधरतश्रीजोय॥ भजनत
लपवनपढि ... नहांग्रहिभयजीपनेकाय॥ ८॥ इहांव्यतिरेक॥ वार्त्ता॥ हरिकीसर
... कार
... परन्त
लिखि ...

51A

नाइकनायिकाहै ॥ आपरभारपरैगो ॥ पंचमार्थ ॥ सषीसोंसषीवचन ॥ हेसषीना
नषकजोकोमलजोहैहरिताकौंकुमलालक्ष्मीजोहैवालासोहृदयमैंपरिकै जकनहीं
धरति ॥ अतिप्रीतिहमारेप्रीतमयेभारपरैगोतासोंइमसवसोंभजतिहै ॥ लक्ष्मीनेंह
रिकोंहृदयमैंपरयो ॥ षष्टार्थगृहशिष्यसोंकहतहैं ॥ भक्तजोहैसोहरिकोंऔकमला
लक्ष्मीहूतेनाजुकसुकुमारवालाश्रीराधिकाजीताकौंहृदयमेंपरै ॥ कोईविषयसु
षमैंजकविश्रामनहिंधरतहैं ॥ केवलउनहीकेरूपमेंमग्नहोयरहैहैं ॥ वनचंदनवन
मालआदिजोउपभोगसामग्रीहै ॥ तासोंतोभारचढ्याकेभयसोंजैसेभीतिहोयभा
जतहै ॥ तैसेंभाजतहैं ॥ अर्थयहउपभोगकोंभारसमानजानतहै ॥ कविकीनोलक्ष्मी
कीचंचलताविर्तक ॥ सषीसषीनोनायकके प्रेमकी प्रसंसा ॥ नाइकअनकूल ॥ ।
नाइकास्वाधीनपतिका ॥ पैअसमर्थदूषनअपुष्टार्थोमद्विहैंश्लेषादोनदुष्टयातैं
निवारनवोंन ॥ दूतीकीनोव्याजस्तुति ॥ कविकैंवक्रोक्ति ॥ प्रेमसूचनकविप्रथमअर्थ
नायकुविरह ॥ रूसताकौंतजंभैंहैउत पेछ्या ॥ १ ॥ यदिकरम्लेका ॥ श्रीप्रताप ॥
भकारतेंव्रेला ॥ ९० ॥ मलदोहा ॥ छ्वालेपरिवेकेडरनिसकैनहायकुवाय ॥ ऊऊक
नदियेंगुलावकेऊवाऊवैयतयाय ॥ ९१ ॥ सूरतटीका ॥ प्रश्न ॥ यहसूऊवैयतपदअ
वनसूवनरूवावनहोय ॥ यातैंविरहनिअर्थमैंवननऊवैयतसोय ॥ १ ॥ उत्तर ॥ वि
विरहजनसासनाधावतपरावि‌हुदाय ॥ नायनिछ्वालेकेडरनिकुसमनि

वि॰टी॰
५२

घोवतपाय॥२॥सोरठा॥गुरजननसासनपाय॥पगस्त्रऊवैयनपदवनमें॥अरससमैल
पदभाय॥विरहनिहीकेसंभवे॥३॥सकुमारताकोअर्थ है ही॥परियाभांतिअतिचम
त्कारहे॥इहांसंबंधातिसयोक्तिहै॥संबंधातिसयोक्ति जहजोगअजोगादिदेत॥हायछुव
तछालेपरैंपगहिजोगहिदेत॥४॥हरिकविटीका॥छालेदानि॥सषीवचननायकसों॥
छालाफोरानाके परिवेकेडरसोहाथछुवायनहीसकेहै॥गुलावकेऊवांसोजवपाव
ऊवैयतहै॥घोयितहै॥तवभीहियेमनमें किंवा॥मनकस्किसिसिकनिअर्थयहस
महीसिसिकतिहै॥छालापरिवेकोडरहेतहाथकोनहीछुवावनोहेतमान॥हेतु
अलंकारहेतुअलंकृतिहोतजहांकारनकारजसंग॥सषीकीनाइकप्रतिनाजुकमा
रताकुचिउपजावे॥सषीसोंनोसुतिबंग॥संबंधातिसयोक्तिअलंकार॥विरहेनगुर
जनसासनानेऊवावे॥श्रीप्रताप॥जमक॥१०२॥मूलदोहा॥मैंवरजीकैवारतूइत
कतलेतकरौट॥पखुरीगडैगुलावकीपरिहैगावतषरौट॥१०२॥सुरतिटीका॥प्रस॥
इतकतलेतकरोटपहय मैंअर्थवनेन॥पखुरीनोसवसेजपरहोतव्यथायहवैन॥१०३
तर॥फूलगेंदषेलेंडुवोपियवचप्रथमदिषात॥किमकरअरसवचायकेपुनितियव
चमडुगात॥२॥प्रस॥गातहिमडुकहाकरनहीं॥उत्तर॥नहासषिसोंपियवैन॥तूमोंक
रहिवचावईसषिवचमडुतनऐंन॥३॥इहांसंबंधातिसयोक्तिपूर्ववत॥हरिकविटीका॥
मैंवरजीहौ॥संभ्रषनायिकसोयेहै॥तविआकेदोऊऔरगुलावकेफल....रैहैं॥

52A

...हनामें ... रही कों मंगला ... बरन वा ... हा
मानननादोषनायकमार्थनावरततहै ॥ मेरी ... बाधा ॥ हमारो मान
दुरतासोंभईहै ॥ जोबाधादुषताकोंदेनों ॥ मान छोरोयहअर्थ ॥ हेत
कैसोयथाकोअर्थहमरेपासमयनकरिकें ॥ हमारेननकीझांईपरे
तननसोंमानहहोततहै ॥ किंवा तुम्हारेननकीझांईजवहमारेतननमेंमिल
रहे ॥ तवरंगहीसोंस्यामलीजियै ॥ श्रृंगारसाध्यवसानालछनाकरिकें ॥ किं
सुचितहोतहैसाध्यवसानालछनालछन ॥ सभाप्रकाषारोप्यमानजहारहतहैसो
हिहोय ॥ रोप्यविषेजामेंपरेसाध्यवसानासोय ॥ रोप्यहूहांस्यामगुनरोप्यविषयश्रृंगा
कामसोजाम्योपरेहै ॥ किंवा तुम्हेंदेषेंविनातुमसोंमिलेविनाहमेंकछुनजरिनहीआवै है
तुम्हारेतननकीझांईजवहमविषैदुतिप्रकासहोतहै ॥ जामेंअर्थतिख्यासुक्तिहोयतातिहिविनाअ
धकारजगतनमें ॥ ओरकविनिनेकह्योहै ॥ हमारोवनायोमोहनलीलाअथनतौ ... क
विन ॥ लोचनकीगतिकोंगादिचितकियोहरिमाधुरीमाहिवसेरा ॥ जोलगिगाय
नायविनेछिनहदिनजोविधिकेरा ॥ कोटिकभाननुगेअसमाननमैंहकिनपू
कोचेरा ॥ तोभीसपीसुनिगोपसुतानिकोंकाह्नविनाव्रजहोतअंधेरा ॥ ॥ दोहू
नअर्थहोतहैचमत्कृतअर्थलिषेहें ॥ ॥ २ ॥ गंगादत्त ॥ अथवाराधाकहीएराधा
ओहनागरकहीएअजरअमरजोहै ॥ सोभवकहीएमहादेवसोमेरीपीरकोहरे
हादेवकीझांईकेपरेतेस्यामविषकोनामहै ॥ सोहरीदुतिकोमापतिहोततहै ॥ अ

बि॰टी॰
५२
52

षोवत पाय॥२॥सोरठा॥ गुरजन त्रासन पाय॥ पगसु ऊवे यतन पद्वन्मैं॥ अरु सुमेल
पद भाय॥ विरहनि हीके संभवे॥ ३॥ सुकुमारता को अर्थ है ही॥ परिया भांति अति चम
त्कार है॥ इहां संवंधातिसयोक्ति है॥ संवंधातिसयोक्ति जहं जोग अजोग कहि देत॥ हाथ छुव
त छाले परें पग हि जोग हि है॥४॥ हरिकविटीका॥ छालेहनि॥ सषी वचन नायक सों॥
छाला फोरा तनाके परिवेके डर सो हाथ छुवाय नही सकै है॥ गुलाव के फूवां सों जव पाव
ऊवे यत है॥ षोयित है॥ तव भी हिये मन नमें किंवा॥ मनक स्किे झिझिक नि अर्थ यह सु
मही झिझिकति है॥ छाला परिवे का डर है तहां पग कों नहीं छुवावे नौ हेतु मान॥ हेतु
अलंकार हेतु अलंकृति होत जहां कारन कारज संग॥ सषीकी नायक प्रति तैसाम्हुकमा
रता रुचि उपजावे॥ सषी सों तो स्तुति व्यंग्य॥ संवंधातिसयोक्ति अलंकार॥ विरहिन गुर
जन त्रासना ते ऊवावे॥ श्री प्रताप॥ जमक॥१०२॥ मूलदोहा॥ मैं वरजी केवार तू इत
कत लेत करोट॥ पखुरी गडै गुलाव की परिहै गात खरोट॥१०२॥ हरिकविटीका॥ प्रस्न॥
इतकत लेत करोट पहूय मैं अर्थ व नैन॥ पखुरी तो सब सेज पर होत व्यथा यह वैन॥१॥उ
तर॥ फूल गैंद षेलें तु वो पिय वचमय घमदि खात॥ किम कर अंग आरव चाप पै ओ पुनि तिय व
चमदु गात॥२॥ प्रस्न॥ गात हि मदु कहा करन नहीं॥ उत्तर॥ तहां सषि सों पिय वैन॥ तुमें व
रहि वचाव ई सषि वचमदु तन अंगैंन॥ ३॥ इहां संवंधातिसयोक्ति पूर्ववत॥ हरिकविटीका॥
मैं वरजी हुती॥ सम्मुष नायिक सो ये हैं॥ तकि आके दोऊ ओर गुलाव के फल... रैहैं॥

52A

...मैं ... हीकोमंगल ... वरनवा...नहो
मानिनादिकनायकप्रार्थनाकरतहै॥ मेरी...बाधा॥ तुम्हारोसावन
दुरतासोंभईहै॥ जोबाधादुषताकौंहरौ॥ मानछोडौयहअर्थ॥ हेरा
केसोयपाकोअर्थहमरेपासरायनकरिकैं॥ तुमारेतनकीझांईपरे
रातनसोसांवरहोतहै॥ किंवा तुम्हारेतनकीझांईजवहमारेतनमेंमिल
रेहै॥ तबरंगहीसोंस्यामलीजियै॥ शृंगाररसाध्यवसानालछनाकरिकै॥ कि
लूवितहोतहैसाध्यवसानालछनालछेन॥ सभाप्रकाषारोप्यमानजहारहतहैरा
हिहोय॥ रोप्यविषैजामेंपरैसाध्यवसानासोय॥ रोप्यइहांस्यामगुनरोप्यविषयशृंगा
कामसोजामेंपरैहै॥ किंवा तुम्हेंदेषैंविनातुमसोंमिलेंविनाहमैंकछुनजरिनहींआवैहै
तुम्हारेतनकीझांईजवहमविषैदुतिप्रकासहोतहै॥ जासोंअप्रकिआसकिहोयतातैविनाअ
धकारजगतनमैं॥ ओरकविनिनैकह्योहै॥ हमारोवनायोमोहनलीलाग्रंथतामें॥ क
विन॥ लोचनकीगतिकौंगहिचितकियोहरिमाधुरीमाहिवसेरा॥ जोलगिगाय
जायविनैछिनहूदिननैनविधिकेरा॥ कोटिकभानतुगेग्रसमानमैहूं किनपू
कोचवेरा॥ तोभीसषीसुनिगोपसुतानिकौंकान्हविनाब्रजहोतअंधेरा॥ ४॥ दोहू
तअर्थहोतहै चमत्कृतअर्थलिषेंहो॥ २॥ गेगादत॥ अथवाराधाकहीएआराधा
आहनागरकहीएअजरअमरजोहै॥ सोभवकहीएमहादेवसोमेरीपीवकौंहरे
हादेवकीझांईकैपरतेस्यामविषकोनामहै॥ सोहरीदुतिकोप्रापतिहोतहै॥ अ

वि·टी·
५२
52

...य॥ ल्हि...क ...लि... न क ही दु तौ ... फ ले दा...
...मुपाय॥ हरिकीर्तनमु...ति होय व ह ह्य...ह पहि को पाय॥ ९६॥ इहांन ह
...नि जग तन तजन जेह ओरहि...नल पराय॥ हरि झांई नेह हरि भयो अ
घोवन...॥ ओर हू अर्थ अनेक विधि कहन मगलाचर्न॥ कहेन भय विस्तार के स
पट्य कर्न॥ ६॥ हरिकविरी का॥ मेरी भो दनि॥ मेरी हमारी जो भो वाधा फे
मले नासो है दुष ताकों दहा॥ भो नाम जन्म को औ संसार को वाधा दुष है।
...गरि अवीन तुम भक्तवत्सल हो॥ भक्त के दुष देषि तुमे दया आवति है॥ सो या
...थ प्रसिद्ध वेद पुरानन तुम्हारी स्तुति करै है॥ और भी तुम्हारे भक्त जस कहत है॥ जातन॰
...ी झांई परै॥ जो तुम्हारे तन की झांई॥ प्रतिबिंब परे ते स्याम जो है॥ श्री कृष्ण सो हरित दु॰
...तहोति है॥ इह इही होत है सो आनंद होत है यह अर्थ राजी कवि को॥ लक्ष्मी सेवा करति है॥
...भी ...तनो राजी नही होत है॥ किंवा॥ तुम्हारो रंग है॥ पीत श्री कृष्ण को रंग है॥ स्याम सो
मिले हरित द्युति होत है॥ यह प्रसिद्ध है॥ इहां काव्यलिंग अलंकार है॥ भोवाध
...काव्यलिंग नेह...कि सो अर्थ समर्थन होय॥ भोवाधा हरन श्री राधिका जी के प्र
...समर्थित कियो॥ एक अर्थ के अलंकार लिषैंगे॥ और सब सो जित ते ग्रंथ क
...सब के अलंकार लिषें ग्रंथ बढ़त बाढे॥ किंवा॥ मेरी जो है ममता सोई है संसार।
...धा दुष एसै जानिये॥ किंवा॥ ध्यान मैं तुम्हारे तन की झांई परैं स्याम जो है हमारे
...अधकार सो हरित होत है ह...जात है॥ ...कति कदिये प्रकास सो होत है॥ किंवा

53

53A

यकके मुषसैं कोई औरि नायिकाको नाम आयो है ॥ तव नायिका मान करि पिफि तिके सोई
है ॥ तहां अनंतरंग ॥ सषी उर पाय कैं मान छोडावति है ॥ मैं कई वार तो कों वरजी है ॥ इतया
औसकें भकतके अर्थ ॥ काहे कैं कों करोट लेति है ॥ तूं औसी सुकुमारि है गुलाव की पंषुरी
लागे सौं गात मैं षरोंट परि है ॥ षरोट को अर्थ ॥ तहां सार किवा ॥ आयो दोहा मैं सषी कह
ति है ॥ मैं वरजी कई वार तोहि इत काहे कों करोट लेत है ॥ तव रूप गर्विता कहति है ॥ हमारे गा
त मैं गुलाव की पंषुरी लागे सौं कहा गात मैं षरोट परैगो वक्र वचन ॥ कोई औसे मैं भी कहति
है ॥ नायक नायिका पै गुलाव की पंषुरी चलायो चाहति है ॥ तव नायिका हाथ की ओट क
रै है ॥ तहां सषी वचन इत कैं तूं कर की ओट लेति है ॥ और अर्थ वाही तरह ॥ पहिला अ
र्थ मैं मान छुडावनो रचना सों कहति है ॥ पर्यायोक्ति ॥ संवधाति सयोक्ति एवं वत ॥ नाइ
का की उक्ति सों मो पाइ ॥ लहु मानें ई षी मनलक विप्रलंभ फूल गेंद षेलै है ॥ दोऊ तहां सषी
वचन ॥ उत्तम काव्य अनवरप र्यायोक्ति ॥ २ ॥ ध्वनाप ॥ इतकि तनगडें गुलाव ॥ छेका ॥ १०२ ॥
मूल दोहा ॥ अरुन वरन तरुनी चरन अंगुरी अति सुकुमार ॥ चुवत सुरंग रंग सौं म
नौं चपि बिछुवनि के भार ॥ १०३ ॥ हरिकविटीका ॥ अरुन वरन [illegible]ति ॥ सषी वचन नायक
सों आछिप्त दोहा है ॥ अरुन रंग नायिका के चरन है ॥ अगुरी अति सुकुमार है ॥ विछिय
नि के भार सों चपि कै कवं गुलाल कं अंगुरी ताकें रंग से दवत है मानौ ॥ किंवा ॥ सुरंग अं
गुरी को विसेषन हीं कियो ला[illegible]ल रंग चवै है मानौं सो पाइ एव नार्थ ॥ मानौं [illegible] अन्वय

क्रियासोद्दे अनक्रमसद्रावल्लन्मेह्वा